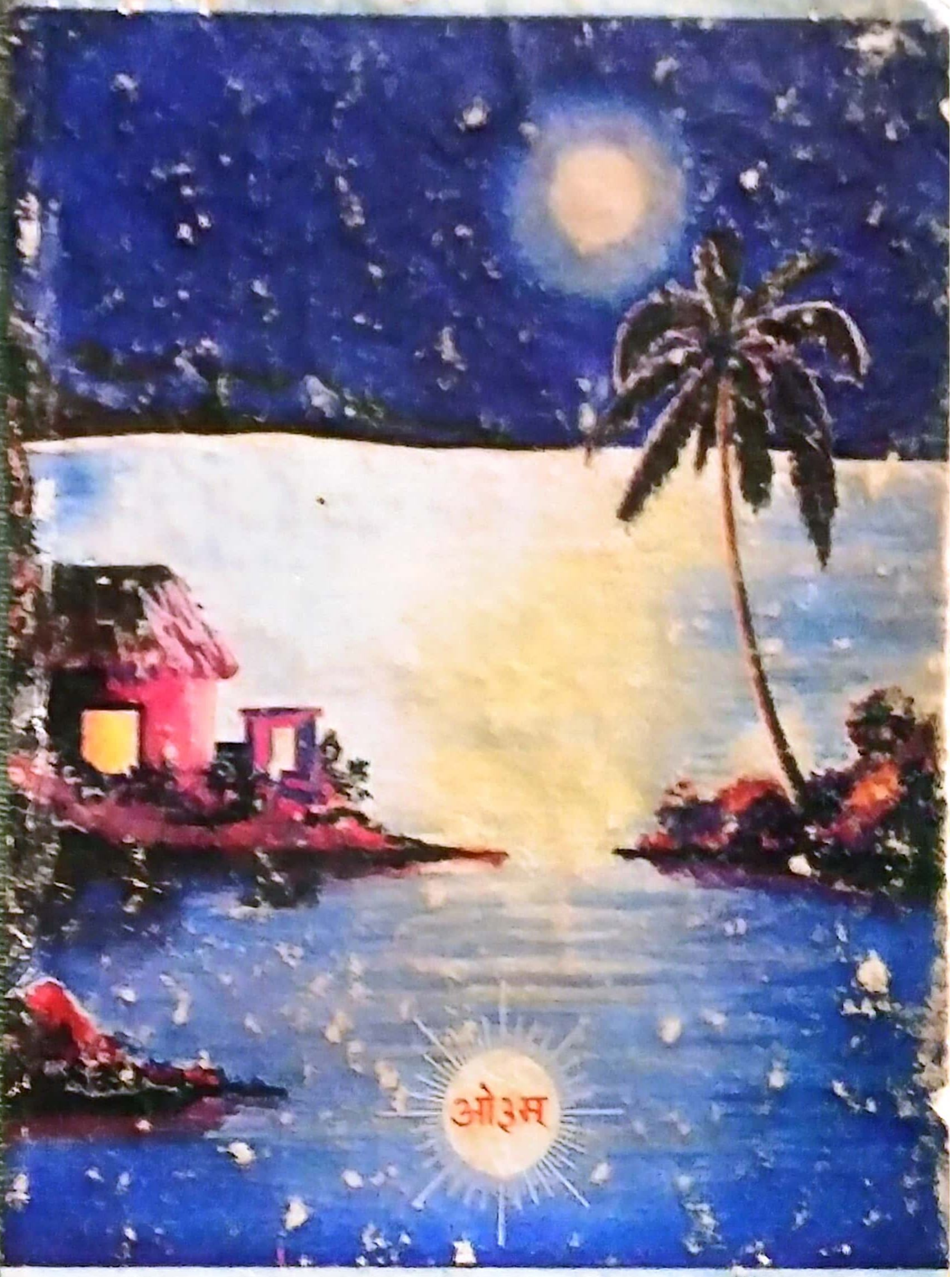

शान्ति बोध

लेखक
पं. वेदभूषण

सम्पादक
डॉ. सुनीति

CamScanner से स्कैन किया गया

ओ३म्

"सा मा शान्ति रेधि"

शान्ति बोध

दुःखद् अवसर पर एक शान्तिप्रद पेय

लेखक

पं. वेदभूषण

संपादिका

डॉ. सुनीति

एम्. ए. पी-एच्. डी.

ज्ञान गंगा प्रकाशन

४-५-७५४ वसु निकुंज

सुलतान बाजार. हैदराबाद.

पिन ५०००२७.

फोन : ४१११२

CamScanner से स्कैन किया गया

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर. क्लिवे स्मर. कृतं स्मर ।

—यजुर्वेद

यह आत्मा अमर है. अमृत है. सूत्रात्मा वायु के माध्यम से यह आत्मा मृत्यु के उपरान्त अपनी यात्रा आरंभ करता है। इस देह को भस्म कर देना ही श्रेयस्कर है।

दिवंगत के किए शुभ कर्मो का स्मरण करो. आत्मा के अमरत्व का स्मरण करो और परमात्मा की असीम कृपा का स्मरण करो।

X X X X

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।

—गीता

संसार में जो पैदा हुवा है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। साथ ही जो मरता है. उसका पुन. जन्म भी अनिवार्य है।

कौनसा ऐसा घर है जहाँ मृत्यु की काली छाया के कदम नहीं पडे ?अत: मृत्यु से मत घबराइए।

X X X X

प्रस्तुत पुस्तक को पढ़कर जीवन के रहस्यों को जानिए. शोक पर विजय प्राप्त करने तथा असीम शान्ति प्राप्त करने के लिए इस पुस्तक को अपने घर में आवश्य रखिए।

—प्रकाशक

CamScanner से स्कैन किया गया

क्या करें ?

दुःखी परिवार में शोक की घटना के तीसरे दिन से इस पुस्तक के आधार पर शान्ति कथा का आयोजन किया जा सकता है।

वैदिक विधि से शान्ति यज्ञ करके प्रतिदिन कोई एक अच्छा पाठक इसकी एक एक दिन की कथा को पढे तथा सब उसका श्रवण करें। निश्चय ही इससे शोक संतप्त जनों को शान्ति मिलेगी।

इस पुस्तक में जीवन के रहस्य बडे सरल रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई
सम्पर्क : 9029421718
सौजन्य : पं. अर्जुन प्रसाद आर्य

CamScanner से स्कैन किया गया

विषय सूची

क्र.	दिन	विषय	पृष्ठ संख्या
१	पहला दिन	एक अटूट नियम.	१९
२	दूसरा दिन	शोक क्यों. किसलिए ?	२५
३	तीसरा दिन	क्या करें क्या नहीं ?	३९
४	चौथा दिन	मृत्यु कब. क्यों. कैसे ?	५९
५	पाँचवाँ दिन	पंच कोशमय देह	७३
६	छठा दिन	चक्र कौन चलाता है ?	८७
७	सातवाँ दिन	तीन. जो सदा रहते हैं.	१९९
८	आठवाँ दिन	संसार कैसे बना ?	१२९
९	नौवाँ दिन	जन्म और जन्मान्तर	१४५
१०	दसवाँ दिन	मानव जीवन का उद्देश्य	१६७
११	ग्यारहवाँ दिन	योग और मोक्ष	१८३

CamScanner से स्कैन किया गया

अपनी बात

हर खिलने वाला फूल एक न एक दिन मुरझाता है। इस अटूट नियम व अटल सत्य के दर्शन धरती के हर कोने में किए जाते हैं !

हम मरते हैं इसीलिए फिर पैदा भी होते हैं। जो पैदा होता है वह मरता है। जो मरता है वह पैदा होता है। यह एक ध्रुव सत्य है।

यदि संसार में मृत्यु न हो तो फिर हमारे घर में पैदा होने वाले नन्हें मुन्ने फूल कैसे खिलेगें ? कोई जाता है तो नए परिवेश में फिर वही लौट भी आता है।

अपने घर से लेकर संसार के बडे से बडे सम्राट् के घर तक इस दृश्य को देखा जा सकता है और इन कानों से. हृदय को दहला देने वाले आर्त स्वरों को सुना जा सकता है।

जब विवेक पूर्वक विचार किया जाता है तो पता चलता है कि-मृत्यु के संदर्भ में किया जाने वाला शोक. अज्ञान भरे मोह का ही एक परिणाम है।

मानव जन्म की सार्थकता इसी में है कि-हम किसी के दर्द की दवा बनें. रोते हुओं को सान्त्वना दें। इसी उद्देश्य से "शान्ति बोध" लिखा गया है।

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रिय भाई विपिन चन्द्र जी एवं उनकी धर्म परायणा पत्नी श्रीमती कमलेश जी ने हमारे सान्त्वना से भरे इन स्वरों को अपने प्रिय पुत्र की पुण्य स्मृति में प्रकाशित करने का संकल्प किया। परिणामतः शान्ति बोध का यह धैर्य भरा विचार पुष्प - पुंज प्रस्तुत है।

वैदिक शास्त्रों के अध्ययन और मनन से जैसी हृदयानुभूति हुई और विचार बने. उन्हें विनम्रता पूर्वक प्रस्तुत कर दिया गया है।

हम क्षमा पूर्वक यह भी उल्लेख कर देना चाहते हैं कि- जब हमने शान्ति बोध का प्रारूप लिखा तब विचार था कि इसे पुनः शुद्ध रूप में वाक्य रचना आदि को सुधार कर ही प्रकाशन के लिए देगें किन्तु समयाभाव से यह संभव न हो सका. अतः भाषा का सौष्ठव हमारी इच्छा के अनुरूप हम नहीं कर सके।

मानव अपूर्ण है। बहुत जान लेने पर भी वह ज्ञान सागर तट के कुछ बालु कण ही बटोर पाता है। अतः हमारा ज्ञान अत्यन्त तुच्छ सा ही होता है। क्यों कि- वह ज्ञान की जिस परत को खोलता है. वह तो शायद उसकी पहली ही परत होती है। जब कि- ज्ञान के रहस्य अनन्त आवरणों से परिछिन्न होते हैं। कभी कभी चिन्तन में कुछ सहज न्यूनताएँ भी होती हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

किन्तु प्रस्तुति करण सर्वथा स्वार्थ से रहित केवल मात्र अपने विचारों को यथा संभव सरल भाषा में प्रकट कर मानव मात्र को अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देना भर ही हमारा ध्येय रहा है।

एक भी शोकाकुल आत्मा इस ज्ञान कण से यदि रंच मात्र भी शान्ति का अनुभव करेगी तो हमारा यह प्रयत्न सार्थक होगा।

जिस श्रद्धा से भाई विपिन चन्द्र जी तथा स्नेहमयी बहन कमलेश जी ने इसे प्रकाशित करने में अपना स्नेह भरा योगदान दिया है तदर्थ हम अपने इस परिवार के लिए सुख. शान्ति और समृद्धि की कामना करते हैं।

आशा है धरती के दुःखी मानव अपने शोक को हमारी झोली में डाल देगें और जीवन की इस महान् यात्रा में साहस और धैर्य से आगे बढेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ।

दुःखियों का दुःख भाजक

14 जनवरी 1983

वेदभूषण

CamScanner से स्कैन किया गया

पुण्य स्मृति में

एक नन्हा फूल जो असमय में ही झर गया।

प्रतिभाशाली प्रिय पुत्र

स्व० सुनील कुमार

जन्म : 4 जून 1972 मृत्यु : 8 फरवरी 1982

जो अपने प्रिय पिता **श्री. विपिन चन्द्र**

ए. एम् आई. सी. ई. । यू.एस.ए.

एवं

ममतामयी **माता श्री. कमलेश** को

अध्यात्म की ओर उन्मुख कर गया।

CamScanner से स्कैन किया गया

1

–एक अटूट नियम

प्यारी माताओ ! दु:खी बहनो और भाइयो !

शोक की यह काली घटा आज कैसे घिर आई है ! हृदय रूपी आकाश में शोक के ये घन घोर बादल किस विध उमड़ पडे है । अपने अत्यन्त प्रिय जन का वियोग रह रह कर हमें कचोट रहा है । जैसे किसी वेदनाग्रस्त मनुष्य के भीतर से दर्द उठता है और उसे कराहने के लिए विवश कर देता है । कुछ ऐसी ही मर्मान्तिक पीड़ा रह रह कर हमारे दिलों को साल रही है । इस आघात ने हमारे सारे जीवन को ही झिझोड़ कर रख दिया है । कल तक प्यारा लगने वाला यह जीवन आज एकदम निस्सार और व्यर्थ सा प्रतीत हो रहा है।

इस शोक ने आकर मानों हमें सोते से जगा दिया है । जैसे कोई सपना बीच में ही टूट सा गया है । चारों ओर एक सूना पन और एक नीरवता का साम्राज्य छाया हुआ है । सहसा शोक की तरंगें समुद्र की लहरों के समान उछल पड़ती हैं और फिर शान्त हो जाती हैं । शोक और व्याकुलता की इन लहरों में खोया मन कभी कभी डूबता सा प्रतीत होता है ।

CamScanner से स्कैन किया गया

कल तक जिसे हम प्यार करते थे। स्नेह आदर व दुलार प्रदान करते थे। जिस देह की रक्षा के लिए पानी की तरह पैसा बहाने तैयार रहते थे। जिस आकृति को देखकर हर्ष व ममता के भाव जगते थे। आज इस देह का स्वामी चला गया तो अब यह देह सार-हीन हो गया। लाख शोक करें पर रोते रोते भी हम मृत देह को जल्दी ही घर से बाहर निकालने का उपाय करते हैं। यह इस जीवन का सत्य है। जो बडी सीधी और सरल शिक्षा देता है कि हे मनुष्य ! इस मिट्टी से बने देह से प्यार मत कर। प्यार करना है तो मनुष्य की आत्मा से कर ! पर हम आत्मा से कम और मिट्टी के पुतले से अधिक प्यार करते हैं।

जब एक वस्त्र में लिपटा माटी का यह खिलौना धरा होता है तो एक विचित्र वातावरण दिखाई पड़ता है। कहीं कहीं तो एकदम सन्नाटा सा ! वियाबान जंगल के समान घर शान्त हो जाता है तो कहीं कहीं चीख. चिल्लाहट. करुणाजनक चीत्कार. आत्म सुधि को बिसार कर विलाप करती माताएँ. बहिनें. बेटियाँ और दूसरे परिजन। हृदय को चूर चूर कर देने वाले बिलखते स्वर। जब कोई अपना प्रिय प्रभु का प्यारा हो जाता है तो सचमुच ऐसा प्रतीत होता है मानो जैसे अपनी कोई मूल्यवान वस्तु खो गई है। जो अब लाख ढूंढे भी मिल नहीं सकती या फिर जैसे किसी ने न चाहते हुए भी हमारी प्रिय वस्तु को हम से छीन लिया है।

एक ओर करुण क्रन्दन ! तो दूसरी ओर तार. टेलिफोन

CamScanner से स्कैन किया गया

इष्ट मित्रों की भीड़ ! अड़ोस पड़ोस में सन्नाटा ! हर कोई सहमा सहमा सा दिखाई पड़ता है ।

इस करुणा भरे वातावरण में कुछ लोग तो आकर क्रन्दन के स्वर में स्वर मिलाकर शोक को दुगना कर देते हैं, तो कुछ ज्ञानी, अनुभवी जन धीरज व सान्त्वना बँधाते हैं । किन्तु कुछ ऐसे विरले ही जन होते हैं जो शोक के टूटे हुए इस पर्वत को धीरज के साथ सहन कर लेते हैं । हर संकट की घड़ी में धैर्य ही हमारा परम मित्र है ।

यह भी एक कैसा विचित्र खेल है । प्रकृति का यह कितना क्रूर अट्टहास है । कल दूसरे के घर जाकर ढाढ़स बँधाने वाला आज अपने घर सिसक कर रो रहा है और कल का रोने वाला आज यहाँ सान्त्वना दे रहा है । कल तक जिस को ढाढ़स बँधाने की बारी थी आज उसकी रोने की बारी है और कल के रोने वाले को आज ढाढ़स बँधाने की बारी है । क्रिकेट की दो टीमों की तरह अदला बदली का यह खेल चलता रहता है । जिसे हम प्रायः देखते आ रहे हैं और देखते रहेंगे । कैसा विचित्र है यह खेल ! कल तक जो दूसरों के शव के पास बैठा सान्त्वना बँधाता था आज वह स्वयं चिर निद्रा में सोया है और कितने ही नए चेहरे सान्त्वना प्रकट कर रहे होते हैं । किन्तु वाह रे नियम! हम सब जिस के लिए रो रहे हैं वह आँख खोल कर रोने वालों को न तो देख पाता है न उन्हें धन्यवाद दे सकता है । बस यह सृष्टि

CamScanner से स्कैन किया गया

का एक अटूट क्रम है जो सदा से चल रहा है और चलता रहेगा।

प्रातः निकला हुआ सूर्य जैसे धीरे धीरे अस्ताचल की ओर चला जाता है वैसे ही यह शोक धीरे धीरे समय के साथ कम होता चला जाता है। वियोग और शोक की सब से बडी दवा समय है। जैसे जैसे समय बीतता है इस का वेग हल्का होने लगता है। अब तक तो खाना पीना सब के प्रति अनिच्छा थी पर फिर भूख भी तेज हो उठती है। शरीर के सारे व्यापार प्रारंभ होने लगते हैं। सृष्टि और जीवन का चक्र अपने मार्ग पर चल पड़ता है। समय के साथ-साथ जाने अनजाने शोक की मात्रा कम होती चली जाती है।

इस सारे दुःखद् दृश्य के पीछे प्रायः एक प्रश्न मानव मस्तिष्क में सहसा उभरता है कि हँसने और रोने की इस रस्सी के बीच झूलता यह जीवन क्या है? मृत्यु क्या है? मरने वाला कहाँ चला गया? कौन उसे ले गया? विधि की यह कैसी विडम्बना है? कभी न आने वाले ऐसे अनेकों प्रश्न मन में उठने लगते हैं। इस दुःखद घटना से कोई घबरा जाता है तो कोई उस अदृश्य शक्ति को कोसने लगता है। कोई इस का सारा दायित्व प्रभु की इच्छा पर डाल देता है। फिर भी प्रश्न अनबूझा रह जाता है। कौन है जो इस अभिनय का पर्दा गिराता है और उठाता है।

हम इस संसार में प्रतिपल मृत्यु के दर्शन करते रहते हैं। अपने पडौसी के घर तक भी जब मृत्यु आती है तब हम संवे-

CamScanner से स्कैन किया गया

दना में अवश्य सम्मिलित होते हैं फिर भी हमें वह मृत्यु एक सहज और साधारण सी घटना ही प्रतीत होती है। हम देखते हुए भी मृत्यु को अनदेखा कर जाते हैं किन्तु उसी मृत्यु की काली छाया जब हमारे घर के चौखट पर पड़ती है तब हमारी निद्रा भंग होती है तब वह कितनी भयानक, क्रूर और कठोर लगती है वह कितनी जटिल और असह्य हो जाती है।

जब मित्र के पेट में भयंकर दर्द हो रहा था तब उसे उपवास का उपदेश देकर हम नाना प्रकार के व्यंजन खाने में जुटे हुए थे ओर जब मेरे पेट में दर्द है तब मित्र नाना प्रकार के व्यंजनों का उपभोग कर रहा है। क्या दुःख का चक्र इसी प्रकार घूमता है ! क्या है यह दुःख ! यह मृत्यु वास्तव में एक साधारण सब से अधिक साधारण घटना है जो रोज घटती है।

प्रतिपल प्रतिक्षण यह घटित होती है. हो रही है. कल तक आँगन में मुस्कुराता फूल आज मुरझा गया। कल तक वृक्ष पर लगा फल पका. झड़ा और क्षुधा निवृत्त कर चला गया। सारा संसार एक ओर से मिटता चला जा रहा है। जो मिट रहा है वह मर रहा है और जो कल मिटने वाला है वह आज जी रहा है। वर्तमान जीवन है. भूत काल मृत्यु है और भविष्य जन्म मरण से मिश्रित आशाओं का बिन्दु।

अहह ! कल आँगन में कितनी चीटियाँ एक साथ निकल आई थीं। पता नहीं जमीन पर रेंगने वाली इस क्षुद्र सी प्राण-व्रती में क्या जादू भर गया था कि उस के पंख उग आए थे।

CamScanner से स्कैन किया गया

थोडी देर में वह उड़ने लगी और फिर दूसरे ही क्षण एक प्रलय की रेखा उभर पडी। अनगिनत चीटियाँ मर चुकी थीं। सारे आँगन में उनकी लाशें बिछ गईं। पर जैसे कुछ हुआ ही नहीं। नौकरानी ने दूसरे दिन झाड़ू फेर दी। सैकडों लाशों को समेटा और कूड़ा दानी में फेंक आई। उस बेचारी छोटी सी जान का क्या रिश्ता था हमसे ? वह हमारे स्वार्थ में न साधक थी न बाधक इसलिए उस का जीना हमारे लिए जीना न था और न उसका मरना हमारे लिए मरना था। दूसरे दिन हमारे आँगन में एक साँप मर गया शायद वह अपनी मौत नहीं मरा था उसे किसी ने मार डाला था। साँप से भला मनुष्य का क्या रिश्ता ? हाँ किसी सँपेरे के पेट पालने का माध्यम वह अवश्य बन सकता था। पर आम आदमी की दृष्टि में वह मनुष्यों का शत्रु माना जाता है। मनुष्य के स्वार्थ में वह बाधक है अतः वह मार डालने के योग्य है। उसे मार कर हम अपने को बहादुर समझ कर फूले नहीं समाते। मौत को न जानने वाला. न मानने वाला भी स्वयं उसे मृत्यु के द्वार तक पहुँचा देता है।

इस तरह आज सर्प की मौत पर घर में हलचल तो रही पर चारों ओर खुशी का वातावरण था साँप मर गया बहुत अच्छा हुआ। यही साँप शायद हमारी मृत्यु का कारण बनता। कल की मृत्यु पर कोई हलचल तक नहीं थी। आज की मृत्यु पर हलचल तो थी ही पर साथ ही हर्ष की भेरियाँ भी। ऐसी भेरियाँ कभी कभी मनुष्य अपने तथाकथित सर्पवत्

CamScanner से स्कैन किया गया

दुश्मन को मार कर भी मनाता है। तो क्या मृत्यु हमें हर्षित भी करती है ! हाँ ! जब कभी अपना कोई शत्रु समाप्त हो जाता है तो उसकी मृत्यु भी हमें हर्षित करती है। जब वही मृत्यु हमारे घर चली आई तो हमने हाहाकार मचा दिया। मृत्यु क्या आई मानो रोने की प्रतिस्पर्धा प्रारंभ हो गई। कोई चीख रहा है तो कोई सिर पीटपीट कर रो रहा है। जो कभी दर्पण में अपने बालों को दस दस बार सँवारे बिना किसी व्यक्ति के दर्शन तक करना पाप समझती थी वह भी युवती अपने बालों को नोच नोच कर पुकार रही है। उधर अधेड़ उम्र की बुढिया भी जिस के पीछे मौत खड़ी घूर रही है अपनी मौत की परवाह किए बिना रोने धोने में सब से आगे बाजी मार लेना चाहती है।

दूसरी ओर एक प्राणी बिल्कुल चुपचाप बैठा है गुमसुम सा ! जीवन व मृत्यु के दर्शन पर चिन्तन में मग्न है मृत व्यक्ति के साथ जिस का सम्बन्ध या स्वार्थ जितना गहरा था उसी अनुपात में शोक की गहराई भी स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। सब आत्म विस्मृत से दिखाई दे रहे थे। न अपनी सूरत शक्ल का ध्यान था न अपने वस्त्रों की सुध बुध ! क्यों कि आज उनके अपने स्वार्थ में व्यवधान आ गया था।

इस प्रकार अपने आँगन में घटने वाली तीन प्रकार की मृत्यु में मनुष्य के तीन भिन्न भिन्न रूप देखने को मिलते हैं। यदि हम शान्ति से सोचें तो जो कुछ होता है वह एक दुखान्त

CamScanner से स्कैन किया गया

अभिनय से अधिक कुछ नहीं है। मनुष्य मिट्टी से प्यार करता है। मिट्टी भी जितनी अधिक मूल्यवान होगी प्यार भी उतना ही अधिक गहरा होगा, मिट्टी जितनी सुन्दर होगी प्यार भी उतना ही सुन्दर होगा। पर यह सब तभी तक जब तक कि हम मिट्टी के स्तर पर जीते हैं मिट्टी में जीते हैं और मिट्टी के लिए जीते हैं। शरीर के स्तर पर जीते हैं। मरना और जीना चेतन में नहीं मिट्टी में ही होता है। हमारे जीवन मिट्टी के खिलौने हैं। जब खिलौना टूटता है तब हम रोते है।

संस्कृत में मृत्ती या मृत्तिका शब्द का अर्थ है मिट्टी। मृत् इसी मिट्टी का संक्षिप्त रूप है और यु शब्द मिश्रणामिश्रणयो: के अर्थ में प्रयुक्त होता है। मृत् शब्द मृत्+यु से ही बना है। जब आत्मा मिट्टी से संयुक्त होती है और जब वियुक्त होती है तब उसे मृत्यु ही कहेंगे अर्थात् जब तक आत्मा का लगाव मिट्टी से, भौतिक तत्वों से संयुक्त रहता है तब तक हम मृत्यु लोक में ही रहते हैं। मरना और जीना दोनों मर्त्य लोक के दो किनारे हैं।

जब मनुष्य शरीर के स्तर से ऊपर उठ जाता है तब मृत्यु नाम की कोई बाधा उसे पीडित नहीं कर सकती क्योंकि आत्मा न मरता है न रूपान्तरित होता है। यह प्रकृति अर्थात् भौतिक शरीर रूपान्तरित होता है। यह विकृति से उत्पन्न होता है और फिर प्रकृति में लीन हो जाता है। प्रकृति के परमाणुओं में घुल मिल जाता है। प्रकृति का यह रूपान्तरण ही जीवन और मरण की एक गाथा है।

CamScanner से स्कैन किया गया

जीवन एक यात्रा है। जन्म वह स्टेशन है जहाँ से यात्रा आरंभ होती है और मृत्यु वह स्टेशन है जहाँ यात्रा समाप्त होती है। हम सब जीवन की रेलगाडी में चल रहे हैं। किसने कब कहाँ उतरना है यह हमें पता नहीं। कब सिग्नल गिरेगा और कब किसे कहाँ उतरना होगा. इसकी सूचना समय आने पर ही मिलती है। यदि इसे पहले ही बतला दिया जाय तो इस चिन्ता में मनुष्य जीवन भावी के भय से बोझिल हो उठेगा और हँसता जीवन क्लेशमय हो जाएगा। इसलिए कब किसे शरीर त्याग करना है. यह न बतला कर भी प्रभु ने हम पर महान् दया की है। वह तो दयालु है। मृत्यु हमारे लिए वास्तव में उसकी सब से बडी दया है। जब हमारा शरीर कार्य करने के योग्य नहीं रह जाता और उसमें किसी प्रकार का सुधार भी संभव नहीं हो पाता तब प्रभु अपनी महान कृपा से उसे उसकी योग्यता के अनुसार नया शरीर प्रदान कर देता है। परमात्मा की इस कृपा को न जान कर हम अपने स्वार्थ और मोह के वशीभूत हो कर रोते और व्याकुल होते हैं। हम सोचते हैं कि कौन वह शक्ति है जो न चाहते हुए भी हमें मृत्यु की गोद में धकेलती है। अहा ! आज हमें वह कितना निष्ठुर व क्रूर लग रहा है जो रुद्र बन कर हमें रुला रहा है। किन्तु हम ने कभी यह नहीं सोचा कि मृत्यु तो जीवन में एक बार ही आती है पर वह कौन है जो हमें जन्म से लेकर आज तक नाना प्रकार के सुख देता आ रहा है। हमें मिली हर साँस हमारे लिए कितना भारी सुख है। जब तक यह साँस सरलता से चलती है। तब तक कभी हमने इसे देने वाले के बारे में सोचा

CamScanner से स्कैन किया गया

नहीं था जब एक एक साँस कठिन बन जाती है तो हम उस दयालु को निष्ठुर क्रूर पता नहीं क्या क्या बतलाते हैं ।

स्मरण कीजिए-जब प्यारे प्रभु ने हमें जीवन दिया था तब इस जीवन रूपी पौधे को हरा भरा रखने. पल्लवित व विकसित करने के लिए उस रचयिता ने माँ के स्तन में अमृत जैसा दूध दिया था । चन्द्रमा की कला के समान हम विकसित होने लगे । माँ के दूध के बाद माँ का स्थान गो माता ने लिया कुछ काल तक उस का दूध पीकर हम पुष्ट हुए । पुनः इस धरती माता के माध्यम से उसने हमें अनेक प्रकार के अन्न फल फूल आदि उपलब्ध कराये । ये धरती. ये आसमान. ये बहता शीतल वायु. अमृत के समान जल और समस्त उपहारों में श्रेष्ठ अग्नि भी उसी कृपालु ने प्रदान की है । पर कृतघ्न मनुष्य उस की कृपा को भूल जाता है ।

किसी भी व्यक्ति की मृत्यु तब होती है जब उसका शरीर रूपी रथ जी सकने में सर्वथा असमर्थ या बेकार हो जाता है । उसके सुधार की सब आशाएँ धूमिल हो जाती हैं. तब वह कृपालु अपने प्यारे पुत्र के कष्ट को देख नहीं पाता और अपनी असीम कृपा से उस असमर्थ व बेकार देह को ले लेता है और फिर उसे उस की योग्यता के अनुसार एक नया रथ प्रदान कर देता है । जैसे कोई पिता अपने पुत्र की पुरानी कार या मोटर को बदल कर नई मोटर दिला देता है ठीक इसी प्रकार जब हमारा शरीर कार्य करने के सर्वथा अयोग्य हो जाता है तब

CamScanner से स्कैन किया गया

दयालु पिता उसे बदल देते हैं इस परिवर्तन का नाम हमने मृत्यु रख लिया है गीता में कृष्ण भगवान कहते हैं –

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय.
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि.
अन्यानि संयाति नवानि देही ।

जिस प्रकार पुराने वस्त्रों को त्याग कर हम नये वस्त्र धारण कर लेते हैं ठीक उसी प्रकार आत्मा जीर्ण देह को छोड़ कर कर्मानुसार नया देह प्राप्त कर लेती है । सत्य तो यह है कि जिस दयालु ने हमें यह शरीर दिया है उस शरीर का स्वामी भी वही परमात्मा है । अपनी दी हुई वस्तु को जब वह वापिस लें लेता है तो हमारा शोक एक प्रकार का लोभ ही है । परमात्मा की वस्तु को हमने अपनी वस्तु मान लिया है और रो रहे हैं कि प्रभु हमारी चीज ले गए हैं । स्मरण रखिए-इस शरीर के स्वामी हम नहीं हैं । हमें तो यह केवल प्रयोग के लिए दिया गया है ।

इस संसार का प्रत्येक पदार्थ मूल रूप में उसी परमेश्वर का बनाया हुआ है इसीलिए इस दुनिया की छोटी सी छोटी वस्तु में भी यह भावना नहीं रखनी चाहिए कि यह मेरी है । जब हमारी अपनी देह पर ही हमारा अधिकार नहीं है तो फिर दूसरे के देह पर अपना अधिकार मानना या किसी के देह त्याग

CamScanner से स्कैन किया गया

पर रोना न्याय संगत नहीं है। इसीलिए यजुर्वेद के अंतिम अध्याय के प्रथम मंत्र में कहा गया है कि–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।

इस जगत् में जो कुछ भी जगत् के नाम से जाना जाता है उस सब का स्वामो एक वही परमात्मा है। वह प्रभु सृष्टि के कण-कण में व्याप रहे हैं इसलिए कभी भूल कर भी उस प्रभु की संपत्ति को अपना मान कर लोभ की दृष्टि से मत देखो किसी दूसरे की वस्तु पर ललचाओ नहीं।

हमारे आत्मीय परिवार कें दुःखी सदस्यो! वेद माता की यह कितनी सत्य और प्यारी शिक्षा है इसे समझ कर आप अपने शोक को दूर कर दीजिए। जानें वाले को जब तक हम अपना समझते हैं तभी तक तो शोक है जब हम इस सत्य को जान लेंगे कि जाने वाली आत्मा पर हमारा अधिकार तभी तक था जब कि वह जीवित था। अब हमारा अधिकार समाप्त हो गया है। इस यथार्थ को समझना चाहिए। शोक की घडी हमारी परीक्षा की घडी होती है इसलिए ज्ञान और विवेक को जगा कर हम इस सत्य को अंगीकार करें और धैर्य जो धर्म का पहला लक्षण है उसे धारण करें। इस संकट की घडी में हमें परखना है कि हम ने जीवन में धर्म को कितने अंश में धारण किया है। धर्म बाहर की उपदेश की वस्तु नहीं है धर्म तो उन्हीं सद्‌गुणों का नाम है जिसे कि धारण करना होता

CamScanner से स्कैन किया गया

है। दिवंगत के प्रति किया गया शोक एक प्रकार का दुराग्रह है। परमात्मा की इच्छा के प्रतिकूल एक विद्रोह है।

हर जन्म लेने वाले की मृत्यु अवश्यंभावी है और हर मरने वाले का फिर जन्म लेना भी निश्चित है गीता में कहा गया है –

जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।

जो चीज उत्पन्न होती है वह मरती भी है जिस चीज का आरंभ है उस का अन्त भी सुनिश्चित है। मृत्यु इस सृष्टि का अटल नियम है इस अटल नियम के सन्मुख सिर झुकाना चाहिए अतः शोक करना व्यर्थ है। प्रकृति के नियम बडे कठोर हैं। वह किसी की चीख पुकार नहीं सुनती। उसने आज तक किसी पर दया नहीं की। चाहे भगवान राम हों चाहे भगवान कृष्ण चाहे महावीर हों चाहे बुद्ध चाहे. मोहम्मद पैगम्बर हों चाहे ईसामसीह। बडे से बडा महापुरुष हो. चाहे बडे से बडा सम्राट या शहंशाह। चाहे सन्त हो. चाहे महात्मा. चाहे फकीर हो. चाहे भिक्षुक. राजा से लेकर रंक तक सब को एक दिन मौत अपने पंजे में कस लेती है।

कोई कितनी ही प्रार्थना करे चाहे दुआ माँगे। चाहे कितने ही कंठ करुणा भरे स्वर में पुकार करें. मृत्यु जब आना चाहती है आ ही जाती है। संसार के हर कोने में बडे से बडे

CamScanner से स्कैन किया गया

महल में और छोटी से छोटी झोंपडी में यह मृत्यु या मौत बेरोक टोक आ जाती है। चाहे कितना ही जोर लगाया जाय चाहे करोडों रुपयों की अमृत घूँटी या संजीवनी दी जाय सब व्यर्थ और सर्वथा बेकार साबित हो जाती है।

क्या इस विराट् धरती पर कोई एक छोटा सा कोना ऐसा है! जहाँ इस काली मुख वाली मौत के चरणों की धूल न पड़ी हो। परमात्मा की प्रलयकारी इस शिव की शक्ति का यह नृत्य सृष्टि के आदि से अनवरत रूप में चला आ रहा है। अन्तर केवल समय का होता है कल वहाँ है. आज यहाँ है कल फिर और कहीं यही दृश्य देखा जा सकता है। अरे नादान! तू दूसरों की मृत्यु पर अश्रु बहा रहा है पर ध्यान रख! उस मृत्यु के पंजे से तू भी नहीं बचेगा। जितना समय बीतता चला जा रहा है उतनी उतनी हमारी मृत्यु भी हमारे निकट आती चली जा रही है।

महात्मा बुद्ध के पास एक माँ अपने बच्चे के शव को लेकर विलाप करती हुई पहुँची। उसने सुना था बुद्ध बहुत पहुँचे हुए सिद्ध पुरुष हैं साथ ही बडे दयालु भी हैं। हो सकता है वे मेरे प्यारे शिशु को फिर से जिला दें। बडी आशाओं से भरी रोती बिलखती वह भोली महिला बुद्ध के चरणों पर गिर पडी और अपने मृत शिशु को महात्मा बुद्ध के चरणों पर धर दिया।

महात्मा बुद्ध ने कहा - देवी! मैं तेरे बच्चे को बडी सरलता से जीवित कर दूँगा पर एक शर्त है कि तू किसी ऐसे

CamScanner से स्कैन किया गया

घर से एक मुट्ठी भर चावल ला दे जिस घर में या परिवार में आज तक किसी की मृत्यु न हुई हो।

पुत्र शोक में पागल हुई वह देवी नगर की ओर लपकी कि ऐसे परिवार को खोज कर शीघ्र ही मुठ्ठी भर चावल ले जाऊँ जिससे मेरा यह कलेजे का टुकड़ा जी जाए। वह घूमते-घूमते थक गई। हर घर में कोई न कोई मर चुका था। किसी की माँ किसी की दादी किसी की नानी. दादी नहीं तो परदादी. नानी नहीं तो परनानी दादा या परदादा. पिता. चाचा या मामा कोई न कोई अवश्य मर चुका था।

वह बेचारी निराश और हताश लौट आई। महात्मा बुद्ध तो उसे केवल मृत्यु की अनिवार्यता समझा रहे थे। मौत ने आज तक किसी को नहीं बख्शा। अत: इस बात को समझ लो कि मृत्यु एक अनिवार्य फल है जिसे सभी को एक न एक दिन चखना ही पडेगा।

इसलिए हम कहते हैं ऐ नादान ! यह मृत्यु तुझे अपनी मृत्यु का स्मरण कराने आई है। हर मृत्यु. पथ पर गड़ा हुआ एक मील का पत्थर है जो हमें रास्ता दिखलाती है। रोने की आवाज से मृत्यु की काली रेखा मिटाई नहीं जा सकती। मृत्यु एक ध्रुव सत्य है। इसने पीरों पैगम्बरों और महापुरुषों को भी नहीं छोड़ा तो फिर हम जैसे साधारण पुरुषों की तो बात ही क्या है ?

CamScanner से स्कैन किया गया

इसलिए मेरे शोकाकुल परिवार के दु:खी सदस्यो ! मत घबराओ हिम्मत बनाए रखो । हर जन्म लेने वाले की मृत्यु अवश्यंभावी है और हर मरने वाले का फिर जन्म लेना भी निश्चित है. इस सत्य को हमें समझना होगा । हमें विश्वास है कि आप प्रभु के इस नियम के सन्मुख. न्याय व्यवस्था के सामने अपना शीश झुकाएँगे । हम सब मिल कर इस मंत्र का पाठ करें–

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा. यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।

आत्म ज्ञान और बल का दाता विश्व जिसे अपनाता है.
देव प्रशंसा जिस की करते वही मरण का दाता है.
जिसकी दया असीम से मिलता सब को जीवनदान है.
कौन नियन्ता अर्चन किसका ? जो सुख रूप महान् है ।

CamScanner से स्कैन किया गया

दूसरा दिन

२

–शोक क्यों. किसलिए?

कल की शान्ति कथा में यह बतलाया गया था कि मनुष्य की मृत्यु अवश्यं भावी है। इस संसार का स्वामी परमात्मा है. वही जन्म और मरण की व्यवस्था करता है। अतः हमें उसकी इच्छा के सामने विनम्रता से अपना मस्तक झुका कर उस की इच्छा को शिरोधार्य करना चाहिए। आज हम विचार करेंगे कि अपने किसी आत्मीय जन की मृत्यु पर हम शोक क्यों करते हैं ?

वैसे तो हम प्रतिदिन ही देखते हैं कि संसार में कोई न कोई मरता रहता है। पर हर मरने वाले के लिए हम रोते नहीं और रो भी नहीं सकते। किन्तु जब कोई ऐसी मृत्यु होती है जिसे हम अत्यन्त आत्मीय समझते हैं तब बरबस शोक के बादल घुमड़ने लगते हैं और आँखों से अश्रु धारा प्रवाहित होती रहती है।

आज वह आत्मा हम से दूर और बहुत दूर चली गई है। यह दूरी केवल फासले की ही नहीं अपितु अज्ञान की भी दूरी है।

CamScanner से स्कैन किया गया

हो सकता है गई हुई आतमा फिर किसी न किसी रूप में हमारे ही घर में या निकट के परिवार में जन्म ले ले। पर हमें यह पता नहीं चलता कि यह वही आतमा है जो कुछ दिन पहले हमसे बिछुडी थी। परमात्मा का यह नियम भी कितना सुन्दर और न्याय पूर्ण है।

थोडी देर के लिए कल्पना कीजिए कि देह त्याग कर फिर आने वाली आत्मा को हम किसी रूप में जान लेते तो हम इसे परमात्मा की कृपा मान कर सन्तोष पा जाते। जब हम को पता चलता कि हमारे पास आया हुआ नन्हा शिशु कौन है? कहाँ से आया है? किन्तु हमारी यह प्रसन्नता सोचने में बहुत ठीक लगती है पर विचार कीजिए कि जो आत्मा हमसे वियुक्त हुई है. संसार में उसके अनेकों मित्र थे. अनेक प्रशंसक थे। पर हर अच्छे से अच्छे व्यक्ति का संसार में कोई न कोई दुश्मन भी होता है और खास तौर से भारत में तो हर आदमी जातीयवाद के महारोग से ग्रस्त है। अतः यह विविध धर्मों. जातियों. उपजातियों व क्षेत्रों में बँटा हुआ नजर आता है। एक सम्प्रदाय को मानने वाले लोग दूसरे संप्रदाय को अपने से हीन समझते हैं। कुछ संप्रदाय तो आपस में एक दूसरे को शत्रुता व घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अब यदि पैदा होने वाली आत्मा के बारे में हमें उस की पूर्व जन्म की जाति का पता चल जाय तो बडी गड़बडी मच जायगी और आपस की शत्रुता जन्म जन्मान्तरों तक चलती रहेगी। धरती से पुत्र जन्म की खुशी ही समाप्त हो जायगी। यह भी प्रभु की कितनी भारी

CamScanner से स्कैन किया गया

कृपा है। जरा गहराई से सोचिए कि प्रभु के बनाए नियम कितने सुन्दर कितने उत्तम और कितने आनन्द दायी हैं। हमारी इच्छा के अनुसार यदि परमात्मा नियम बनाता तो हर नियम हमारे लिए एक दुःख का पहाड़ खड़ा कर देता। यह कितना अच्छा नियम है कि एक जीवन के समाप्त होते ही उस के सामने एक पूर्ण विराम लग जाता है और हरेक को नए सिरे से नया जीवन जीने का अधिकार मिल जाता है।

अतः मेरे प्यारे भाइयो और मेरी प्यारी माताओ! बहनो! और बेटियो ! इस बात पर विश्वास करो कि परमात्मा का बनाया हर नियम अपने आप में सुनहरा और पूर्ण होता है अतः उस की न्याय व्यवस्था को मानना हम सब का कर्तव्य है।

हमारा दुःख हमारा शोक सब हमारे अज्ञान के कारण है। स्मरण रखिए कि ज्ञान से सुख और अज्ञान से ही दुःख की सृष्टि होती है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि हम आप के घर आना चाहते हैं पर हमें आपके घर का ठीक-ठीक पता नहीं है तो हमें आपके घर आने में या उसे ढूँढने में कष्ट होगा दुःख होगा और हमें आपके घर के मार्ग का ठीक ठीक ज्ञान है तो हम सुख पूर्वक आपके घर पहुँच सकते हैं।

मेरे शोकाकुल बन्धुओ ! हमारा यह शोक. हमारा यह दुःख भी अज्ञान के कारण ही है। जैसे एक अबोध बालक शुरू शुरू में जब उस के पिता ऑफिस या कार्यालय जाने लगते हैं तो रोने लगता है। वह समझता है कि मेरे पिता जी

CamScanner से स्कैन किया गया

मुझे छोड़ कर पता नहीं कहाँ चले जा रहे हैं। वह उन्हें पकड़ पकड़ के रोकना चाहता है। हर दिन वह उन को जाता देख रोने लगता है। पर कुछ दिन बाद वह देखता है कि मेरे पिताजी रोज शाम को लौट आते हैं तो फिर वह जान लेता है कि मेरे पिता कुछ समय के लिए बाहर जा रहे हैं. शाम में लौट आएँगे. तब वह रोना बंद कर देता है। वहाँ पर भी रोने का. दुःख का कारण अज्ञान ही था और ज्ञान होते ही दुःख चला गया। वह सुखी हो गया।

आज हमारी हालत ठीक उस अबोध बच्चे के समान है. जो अपने पिता को बाहर जाते देख रो रहा था । हम समझ रहे हैं कि हमारा प्रिय हमसे छिन गया। हमें पता ही नहीं कि हर जाने वाला फिर अवश्य लौट आता है. क्योंकि हमारी आत्मा अजर. अमर है। आत्मा के अमरत्व का सन्देश योगेश्वर कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में उस समय दिया था जब अर्जुन सामने खडी कौरवों की सेना में अपने परिजनों को देख व्यामोह से घिर गया था और कहा था –

सीदन्ति मम गात्राणि. मुखं च परिशुष्यति.
वेपथुश्च शरीरे मे. लोम हर्षश्च जायते।

मेरे अंग शिथिल हो रहे हैं. मुख सूख रहा है. मेरा शरीर काँप रहा है और शरीर पर रोंगटे खडे हो रहे हैं।

तब भगवान कृष्ण ने आत्मा की अमरता का सन्देश इस रूप में दिया था –

CamScanner से स्कैन किया गया

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि. नैनं दहति पावकः.
न चैनं क्लेदयन्त्यापो. न च शोषयति मारुतः ।

इस आत्मा को न शस्त्र काट सकता है. न इसे आग जला सकती है. न पानी इसे गला सकता है. न हवा इसे सुखा सकती है. यह आत्मा अजर और अमर है. यह कभी मरती नहीं । वैदिक संस्कृति के आधार पर हम पुनर्जन्म को मानते हैं. यह बात बिलकुल सत्य है । हम बारंबार अपने संस्कारों के वशीभूत नाना प्रकार के जन्म धारण करते हैं । इसी बात को कृष्ण जी ने अर्जुन को समझा कर कहा –

बहूनि मे व्यतीतानि. जन्मानि तव चार्जुन.
तानहं वेद सर्वाणि. न त्वं वेत्थ परं तप ।

संसार में मनुष्य बार बार जन्म लेता है । जिसे तू पितामह मानता है वही कल तेरा पुत्र और आज जो तेरा पुत्र है वह कल तेरा पिता बन जाता है । आज का मित्र कल शत्रु और कल का शत्रु आज तेरा अभिन्न साथी बन जाता है । ये रिश्ते नाते सब अस्थाई हैं । हर जन्म में कर्तव्य ही श्रेष्ठ है. इस तरह कायरता को त्याग कर युद्ध के लिए समुद्यत हो जा ।

कुरुक्षेत्र में लड़ा गया महाभारत का युद्ध दो वर्गों के बीच लड़ा गया युद्ध था । दोनों ओर के मनुष्य मानव रक्त से अपने शस्त्रों की प्यास बुझाने के लिए तैयार खडे थे । हम उस युद्ध की बात नहीं कहते । हम आज जीवन युद्ध की बात आप के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं ।

CamScanner से स्कैन किया गया

मेरे मित्रो ! याद रखो कि हर जीवन एक संग्राम है हम सब संसार रूपी युद्ध के मैदान में खडे हैं । हर व्यक्ति निरंतर चौबीसों घण्टे दिन रात जीने के लिए संघर्ष करता है । हमारा यह मकान क्या है ? एक छावनी है । जैसे युद्ध में आत्म रक्षा के लिए सैनिक खाइयाँ खोदते हैं वैसे ही हमने अपनी और अपने परिजनों की रक्षा के लिए यह मकान बनाया है. धूप. छाया. सर्दी. गर्मी. वर्षा. हवा आदि नाना प्रकार के दुश्मनों से हम अपनी रक्षा करना चाहते हैं । इसी प्रकार से खाना. पीना पहनना सब के पीछे आत्म रक्षा की भावना छिपी हुई है । इतिहासों में जिन युद्धों का वर्णन है वह दो व्यक्तियों या दो शक्तियों के मध्य लड़ा गया युद्ध होता है किन्तु जीवन संग्राम तो चेतन शक्ति और जड़ प्रकृति के बीच होने वाला युद्ध ही नहीं महायुद्ध है । दूसरे शब्दों में इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि हमारा जीवन अनन्त है. जिसे हम मृत्यु कहते हैं वास्तव में वह मध्यान्तर मात्र है । अनेक चलचित्रों में हम देखते हैं कि एक पात्र एक चित्र में हास्य अभिनेता है तो दूसरी फिल्म में वह दूसरा ही भेष बना कर आता है । यह संसार एक रंगमंच है. जहाँ हरेक प्राणी अपनी अपनी भूमिका का अभिनय करता है. प्रदर्शन करता है । जिस पात्र को जब अपनी भूमिका निभानी होती है तभी वह आता है और फिर लौट जाता है फिर दूसरी भूमिका की प्रतीक्षा करता है । यह लौटना ही मृत्यु है । जो मरा है चला गया है. उसका मरना ही एक नये जीवन की घोषणा है । किसी का जाना. उस के फिर से आगमन का सन्देश है. अतः हम अपने शोकाकुल परि-

CamScanner से स्कैन किया गया

वार से स्नेह पूर्वक कहना चाहते हैं कि आप शोक का परित्याग कर दीजिए। हम आप से पूछना चाहेंगे कि आपका पुत्र बहुत छोटी आयु में पढ़ने के लिए विदेश चला गया या आपके परिवार के किसी सदस्य को अमेरिका के भारतीय दूतावास में नौकरी मिल गई थी फिर उसे पदोन्नति कर उसका स्थानान्तरण या तबादला कर दिया गया। ऐसी हालत में आप रोयेंगे या खुशी मनायेंगे। निश्चय ही आपको बडी खुशी होगी। आपके घर का सदस्य आप सब को छोड़ कर इतनी दूर चला जा रहा है. फिर भी आप रो नहीं रहे. खुशी मना रहे हैं. क्या कारण है आपकी प्रसन्नता का ? कभी आपने सोचा है ? आपको दुःख केवल इसलिए नहीं होता कि वह फिर अमेरिका से वापिस आएगा. उसका पुनरावर्तन या लौटने की ग्यारण्टी ही कारण है कि आप रोते नहीं।

बस ! मृत्यु भी ठीक स्थानान्तरण के समान ही एक अनिवार्य नियम है। परमात्मा की व्यवस्था है। पर इस में भी लौटने की गय रंटी है। हर जाने वाला अवश्य लौटेगा। जाने वाले की पदोन्नति हुई है या पदावनति यह हम देख नहीं पाते या जान नहीं पाते परन्तु इसका जानना भी कठिन नहीं है. सरल है। जाने वाले व्यक्ति ने यदि अपने इस जीवन में अच्छे अच्छे कर्म किए हैं तो निश्चय ही वह अगले जन्म में उन्नत योनि को प्राप्त करेगा. अच्छा जन्म प्राप्त करेगा। एक अच्छे परिवार के सदस्य निश्चय ही अच्छे संस्कारों के वशीभूत अच्छे ही कार्य करते हैं। जब कोई अच्छा आदमी या

CamScanner से स्कैन किया गया

श्रेष्ठ आत्मा किसी से दूर होती है तो थोडे से कष्ट का होना स्वाभाविक ही है क्योंकि हमें जिस अच्छाई का साथ सुलभ था वह अवसर चला जा रहा है।

संसार में कुछ बुरे लोग भी होते हैं। जब कोई दुष्ट आदमी मरता है तो उसके लिए उसकी माँ भी नही रोती, बल्कि सुना जाता है कि बुरे व्यक्ति के चले जाने पर परिवार के सदस्य भी चैन की साँस लेते हैं और कहते हैं धरती का बोझ हलका हुआ। इसलिए हम अपने उन मित्रों से कहना चाहते हैं और बडे प्यार से कहते हैं कि आप अभी जीवित हो. पता नहीं कितने समय जीना है। जितने भी दिन जियो. अच्छे काम करते जियो। संसार में अच्छा और बुरा कार्य क्या है? शास्त्रों में इस की एक ही कसौटी बतलाई गई है कि जिस काम का आरंभ चाहे कष्ट मय हो पर अन्त में जिस का परिणाम सुखदायी है. वह कार्य अच्छा है और जिस कार्य का प्रारंभ तो सुखमय हो पर अन्तिम परिणाम बुरा हो वह काम बुरा है। इसकी व्यवस्था स्थान. समय. वातावरण. परिस्थिति आदि के अनुसार ही होती है। हमेशा ऐसे काम करो जिसका अन्तिम परिणाम. आखिरी नतीजा अच्छा हो। प्रत्येक कर्म का अच्छा या बुरा फल अवश्य भुगतना होता है। हर मृत्यु एक सन्देश दे जाती है. एक चैलेञ्ज अर्थात् चुनौति. एक वार्निंग या चेतावनी दे जाती है कि दुनिया के लोगो! साव-धान हो जाओ. स्मरण रखो कि एक दिन तुम भी इस संसार से विदा ले लोगे। इसलिए जितने दिन जिओ शानदार जीवन

CamScanner से स्कैन किया गया

जिओ। स्वस्थ और सुखी बन कर स्वाधीन होकर जिओ। नाना प्रकार के दुर्व्यसन सिगरेट. शराब आदि व्यक्ति को पराधीन बना देते हैं अतः अपने स्वास्थ्य के ऊपर दया कीजिए। ये नाना प्रकार के व्यसन तुम्हारी जीवनी शक्ति को समाप्त कर रहे हैं। ये चाय-काफी. सिगरेट और शराब को आप नहीं पी रहे बल्कि ये सब आप को पी रहे हैं. आपको खोखला बना रहे हैं। ये बिल्ली के समान इतने दबे पैरों से शिकार करते हैं कि हमें पता भी नहीं चलता यही इन का कमाल है। हमारे प्यारे प्रभु ने यह जीवन दिया है कितना प्यारा जीवन हमें मिला है। कितना चमत्कार पूर्ण शरीर हमें प्राप्त हुआ है : क्या कभी हमने सोचा है ? हम इतने सुन्दर जीवन को समाप्त करने में लगे हैं. हम कितने क्रूर हैं. कठोर हैं? हम स्वयं ही अपने हाथों अपनी मृत्यु को निमंत्रण दे रहे हैं। यह जितना प्यारा जीवन हमें मिला है इसे सुखी और लंबा बनाते जायें यही जीवन की सार्थकता है।

आज के जीवन से हमारा कल का जीवन बनता है। आज आप अपने जीवन को जितना सच्चे अर्थों में बितायेंगे. उतना ही कल का जीवन सुखी और सार्थक होगा। कल के जीवन की नींव हम आज डालते हैं। परन्तु संसार में बहुत से लोग ऐसे हैं जो कल पर विश्वास ही नहीं रखते। हालाँ कि वे प्रतिदिन देखते हैं कि दिन के बाद रात और रात के बाद दिन निरन्तर आता जाता है। संसार की इस सच्चाई से आँखें मूँद कर कहते हैं कि बस ! इस जीवन से आगे कुछ भी नहीं है खाओ.

CamScanner से स्कैन किया गया

पिओ. मौज करो ! पर वास्तव में स्वर्ग नाम है सुख का. नरक नाम है दुःख का और यह सुख. दुःख हमें अपने किए हुए कर्मो के फल के रूप में प्राप्त होते रहते हैं ।

जब जाने वाला पुनः लौट के आने वाला है तो फिर हमारा रोना व शोक करना व्यर्थ है । हम सब को मरना है और हम सब फिर पैदा होंगे । फिर यहीं कहीं मिलेंगे. हमेशा से मिलते आ रहे हैं. मिलते रहे थे. मिलते रहेंगे । बस केवल हमारा परिवेश रूप. रंग. चेहरा. बदल जाता है पर आत्मा वही की वही होती है ।

हमारे इस दुःख और शोक के पीछे हमारे कुछ गहरे स्वार्थ भी छिपे होते हैं । अज्ञान और स्वार्थ ये दो कारण हैं हमारे शोक के । अपने स्वार्थ की हानि ही हमें रुलाती है । इसी कारण हम बिलखते हैं. चीखते और चिल्लाते हैं । मनुष्य की हर क्रिया. हर व्यापार. हर व्यवहार. अपनी आत्मा की कामना पूर्ति के लिए होता है । बृहदारण्यक उपनिषद् में इसी बात को याज्ञवल्क्य ऋषि अपनी पत्नी मैत्रेयी को समझाते हुए कहते हैं - हे मैत्रेयी ! पत्नी के लिए पत्नी प्रिय नहीं होती. अपितु अपनी आत्मा की तृप्ति के लिए पत्नी प्रिय होती है । पति के लिए पति प्यारा नहीं होता. अपितु अपनी आत्मा के लिए पति प्रिय होता है । इसी प्रकार पुत्र की कामना के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता. अपनी आत्मा की कामना के लिए पुत्र प्रिय होता है ।

CamScanner से स्कैन किया गया

जो पुत्र अपनी माता की आज्ञाओं का पालन करता है. माँ की सेवा करता है. उस पुत्र को माँ प्यार करती है। जो पुत्र माँ को पूछता नहीं. उस की इच्छाओं के प्रतिकूल आचरण करता है तो बरबस माँ भी पुकार उठती है कि ऐसे पुत्र को जन्म देने के बजाय निपूती रह जाती तो ज्यादा ठीक था। मेरी प्यारी माताओ. बहनो ! और प्यारे भाइयो ! महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा उद्घाटित इस सत्य को धारण कर लीजिए।

हमें एक कथा स्मरण हो आयी। एक व्यक्ति अपने छोटे भाई को गंभीर हालत में हॉस्पिटल ले गया। डॉक्टर से बोला चाहे कुछ भी कीजिए मेरे प्यारे भाई को बचा दीजिए। डॉक्टर ने रोगी भाई को देखा-उसका हृदय यंत्र बेकार हो चला था। डॉक्टर ने बडी निराशा से उसके भाई से कहा कि-तुम्हारे भाई को बचाने का एकही तरीका हो सकता है कि-तुम्हारा हृदय यन्त्र निकाल कर तुम्हारे भाई को लगा दिया जाए. पर तुम मर जाओगे। वह घबराया और बोला-डॉक्टर साहब मैं जाकर पिताजी को भेज देता हूँ. शायद वे अपना हृदय दे देंगें। जब पिता आये तो वही बात डॉक्टर ने पिता से कही-तो पिता बड़ा परेशान हो गया उसने सोचा-जब मैं ही नहीं रहूँगा तो फिर बेटा रह कर क्या करेगा। उसने डॉक्टर से कहा कि-मैं बच्चे की माँ को भेजता हूँ. वह तो इसे सबसे अधिक प्यार करती है. वह शायद अपना हृदय दे देगी। बच्चे की माँ आई और आते ही उसने डॉक्टर के पैर पकड़ लिए और बोली-डॉक्टर साहब कैसा भी कीजिए. कुछ भी कीजिए. मेरे

CamScanner से स्कैन किया गया

प्राण प्यारे बच्चे को बचा दीजिए। डॉक्टर ने उससे वही बात कही कि-तुम अपना हृदय यन्त्र देने तैयार हो तो मैं तुम्हारे पुत्र को बचा सकता हूँ। पर ऐसी हालत में तुम मर जाओगी। अपनी मृत्यु की कल्पना से ही वह घबरा उठी। वह रोना भी भूल गई। एक अन्तर्द्वन्द्व में घिर गई। फिर दो मिनट के बाद एक लम्बी सांस खींचकर बोली-डॉक्टर साहब! बच्चे तो और भी हो जाएँगे। मेरे हृदय को लिए बिना ही आप मेरे प्राण प्यारे लड़के को बचाने की कोशिश कीजिए! लाखों करोडो में एक आदमी कीं बात को छोडिए पर साधारण-तया अपने प्राणों को देकर माँ भी अपने बच्चे को बचाने तैय्यार नहीं होती! मुसीबत आ पड़ने पर अपन हाथों से बच्चे को फेंककर अपने प्राणों को बचाने के लिए भागती हुई माताएँ देखी जा सकती हैं। इसलिए सच मानिए कि हमारे सारे रिश्ते नाते शुद्ध स्वार्थ से भरे होते हैं। यदि स्वार्थ निकाल दिया जाए तो फिर मेरे-तेरे का चक्कर ही नहीं रह जाता! इस बात को भली भान्ति समझ लीजिए। कहने के लिए तो सभी कहेंगें कि-हम अपने प्राणों को देकर भी अपने प्रिय की रक्षा करेंगें। यह बात कहने के लिए तो सरल है पर जब सत्य ही ऐसा अवसर आ जाता है तो करोडों में एकाध व्यक्ति ही ऐसा निकल पाता है।

संसार में मोह के वशीभूत माने हुए रिश्ते नाते शुद्ध स्वार्थ पर आधारित हैं। परमात्मा की ओर से दिए रक्त के खून के रिश्ते सब स्वार्थ से ही जुडे हैं। कोई ऐसा रिश्ता नहीं

CamScanner से स्कैन किया गया

जो स्वार्थ रहित हो। जिस से. जिस के. जितने स्वार्थ बंधे होते हैं वह उस से. उतनी मात्रा में प्यार करता है और शोक के पाछे भी स्वार्थ हानि की भावना छिपी रहती है। हम मरने वाले के लिए नहीं अपने स्वार्थों के वशीभूत हो रोते हैं अपने स्वार्थों पर पडी चोट से कराहते है। पर इस शोक से हानि के सिवाय लाभ कुछ भी नहीं है।

संस्कृत के महाकवि कालिदास का नाम सब ने सुना होगा। महान् कवि बनने से पूर्व वे एक साधारण लक्कड़हारे थे। एक बार जब वे जंगल में लकडी काटने गए तो वृक्ष पर चढकर उसी शाखा को काटने लगे जिस पर कि वे बैठे थे। हर रोने वाले व्यक्ति का कार्य भी ऐसा ही अज्ञानता से भरा होता है। रो रोकर शोक कर कर के वह अपनी ही जीवन शाखा पर कुल्हाडी चला रहा है। इसका परिणाम केवल मात्र अपने स्वास्थ्य को बिगाड़ना ही है। रोते रोते ये प्यारी आँखें खराब हो जायेंगी। थोडे से रोने का स्वास्थ्य पर इतना बुरा प्रभाव पड़ता है. जितना कि बडे से बडे ज्वर का भी नहीं पड़ता। इसलिए शोक करना. अपने ऊपर एक प्रकार का गहरा आक्रमण करना है। थोडी सी देर के शोक से मनुष्य की न जाने कितनी शक्ति नष्ट हो जाती है। अतः यह सारा रुदन व शोक व्यर्थ समझ कर त्याग देना ही श्रेयस्कर है। जन्म मरण का चक्र अबाध गति से चलता रहता है और चलता रहेगा। परमात्मा के इस अटल नियम को हृदय से स्वीकार कर लेना चाहिए। पता नहीं इस घटना के पीछे हम सब का

CamScanner से स्कैन किया गया

कितना कल्याण व लाभ छिपा होगा. हम नहीं जान सकते। जो आत्मा देह त्याग कर चली गई है. पता नहीं वह इस जन्म से भी श्रेष्ठ जन्म को प्राप्त करे या हो सकता है. इस घर से भी कई गुना अधिक सुख भोगने के लिए हमें छोड़कर चली गई हो।

अतः प्यारे बन्धुओ ! प्रभु का स्मरण करो और जैसे दिवंगत आत्मा ने इस सार रहित देह का परित्याग कर दिया है. वैसे ही सभी को इस हानिप्रद शोक का त्याग करना ही उचित है। विवेक को जागृत कर जीवन क्षेत्र में सैनिक की भाँति कर्तव्य पथ पर अग्रसर होना पडेगा। इसीलिए कहा है -

' धीरस्तत्र न मुह्यति '

धैर्यशाली. ज्ञानी व्यक्ति मोह के वशीभूत हो शोक सागर में गोते नहीं लगाते। शोक के कारणों को समझते हुए हृदय में शान्ति को धारण कीजिए।

प्रतिपल जागरूक रहिए कि - कहीं छिपकर शोक आप के भीतर घुसने की चेष्टा तो नहीं कर रहा ? उसे भीतर आने ही न दीजिए। दृढ़ निश्चय कीजिए कि हमने अब शोक को सर्वथा त्याग देना है. अब हम नहीं रोएँगे. कभी नहीं रोएँगें फिर देखिए आप अनुभव करेंगें कि जो शोक आप पर हावी हो रहा था. अब आप उस शोक पर विजय प्राप्त कर रहे हैं। धीरे धीरे शोक की काली छाया हम से दूर होती चली जायगी परमात्मा हमें धैर्य प्रदान करें।

CamScanner से स्कैन किया गया

तीसरा दिन

३

–क्या करें क्या नहीं ?

आत्मा क्या है ? इस पर विचार करने से पहले हम आज के प्रसंग की बात पर थोड़ा सा विचार करेंगे ।

हम और हमारा शरीर ये दो भिन्न भिन्न वस्तुएँ हैं । मैं से अभिप्राय मेरी आत्मा से है । आत्मा और शरीर ये दोनों भिन्न तत्व हैं । परमात्मा की समस्त रचनाओं में सर्वाधिक आश्चर्य परमात्मा के इसी कौशल में है कि-एक ऐसे बिन्दु पर लाकर वह आत्मा को शरीर से संयुक्त कर देता है जिससे प्रकृति के वह प्रत्यक्ष दर्शन कर सकता है । उसकी शीतलता. ऊष्णता. रूप. आकार. रंग. स्वाद. स्पर्श. शब्द को वह सुनता. सूँघता. देखता. बोलता. अनुभव करता व चखता है । यदि प्रभु इस संयोजन को न करें तो फिर आत्मा जड़ प्रकृति के समान अज्ञान में फँसा रहे और अनुभव हीन वह एक मृत देह के समान ही रहे ।

जिस प्रकार से ईश्वर का यह संयोजन सबसे अधिक चमत्कार पूर्ण है उसी प्रकार एक मनुष्य के चमत्कार की सर्वो-

CamScanner से स्कैन किया गया

त्कृष्ट स्थिति तब बन पाती है जब वह अपने को परमात्मा से संयुक्त करने में सफल हो जाता है। शरीर से संयुक्त होकर ही हम इस प्रकृति को कैसे आश्चर्य से देखते हैं। जब दूसरा अगला संयोजन आतमा का परमात्मा के साथ होगा तब तो आश्चर्य का कोई ठिकाना न होगा। रचना और रचनाकार. दो हो तो जिज्ञासाएँ संभव हैं। रचना को देखो. फिर उस रचनाकार को देखने की तमन्ना जगे. यही जीवन की सार्थकता है।

जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो क्या होता है ? कौन मरता है ? आत्मा तो मरता नहीं। इसीलिए मृत्यु का ठीक ठीक नाम है देहावसान। यह मृत्यु क्या है. देह का अवसान है। विराम है। रूपान्तरण है। देह का विनाश है ! आत्मा का नहीं। जब देह से आत्मा विच्छिन्न हो जाता है तो उसे न तो काटने की. न जलने की. न शीतलता. ऊष्णता की. न गलने की. न सूँघने की. किसी प्रकार की अनुभूति नहीं होती। ये सारी अनुभूतियाँ उसे शरीर के ही माध्यम से होती हैं।

जब शरीर में से आत्मा चला गया तो उसकी स्थिति उसी पदार्थ के समान हो जाती है. जैसे किसी फूल से रस या सार निकाल लेने के बाद उसके बचे अंश की. जो निस्सार होता है। आत्मा के चले जाने के बाद यह शरीर भी निस्सार हो जाता है। तभी तो किसी की मृत्यु हो जाते ही मृत शरीर को गाड़ देने की या उसे जला देने की तैयारी की जाती है। प्रिय

CamScanner से स्कैन किया गया

से प्रिय व्यक्ति के मर जाने पर. उसका सर्वाधिक प्रिय व्यक्ति भी मृत शरीर को शीघ्र से शीघ्र दूर कर देना चाहता है।

जिसे वह प्रेम से चूमता था. दुलारता था. अब वही शरीर घृणा का पात्र हो जाता है। आँखो के गोलक तो हैं किन्तु अब उसमें चक्षुत्व नहीं रह गया। कान हैं पर कर्णत्व कहाँ है ? मुख है पर वाणी कहाँ? जीभ है पर स्वाद की शक्ति कहाँ? एक आत्मा के जाते ही उसकी समस्त शक्तियाँ. उसका सार भूत सौन्दर्य भी चला जाता है।

अज्ञानी से अज्ञानी व्यक्ति भी इस बात को जानता है कि अब इस शरीर से उस आत्मा का संबन्ध विच्छेद हो गया है तभी तो उसे अब बासों की अरथी से कस कर बाँध दिया गया ! किन्तु बहुत से अज्ञानी सब कुछ जानकर भी अज्ञानी बने रहते हैं। मानो जागकर भी सोने का बहाना कर रहे हैं। ऐसे अनेक अज्ञानी लोगों को हमने देखा कि-वह मृत शरीर से ऐसा व्यवहार करते हैं मानो जैसे वह जीवित ही है।

एक व्यक्ति को हमने देखा कि वह अपने परिजन के मर जाने पर जब उसके शरीर को चिता पर रक्खा जा रहा था तब वह कहने लगा कि-थोड़ा गंगा जल उनके मुख में डालिए। इस अज्ञानी से पूछिए कि-क्या मृत व्यक्ति गंगा जल को पी सकता है ? फिर मुख में गंगा जल डालने का क्या अभिप्राय होता है।

CamScanner से स्कैन किया गया

ऐसी ही बात हड्डियों को दूध पिलाने की है। क्या हड्डियाँ दूध पी सकती हैं। यह बात भिन्न है कि-दूध से हड्डियों को धोने पर कोई शुद्धता व्यापती हो अथवा कीटाणुओं से सुरक्षा होती हो। पर अन्य किसी भाव से ऐसा करना अज्ञानता है। मरे हुए शरीर के साथ की जा रही किसी भी क्रिया का कोई प्रभाव अब उस आत्मा पर नहीं पड़ता जो देह त्याग कर जा चुका है।

अतः अज्ञान भरे सारे विधानों को हमें समाप्त कर देना चाहिए। हमारा हर कार्य विवेकपूर्ण एवं सोद्देश्य होना चाहिए। प्रत्येक क्रिया-कर्म को करते समय हमें सोचना चाहिए कि-यह क्रिया क्यों की जाती है इसका परिणाम क्या होता है? यदि वह निस्सार एवं व्यर्थ है तो उसका परित्याग कर देना चाहिए।

मध्य काल में जब मनुष्य दियासलाई बनाने की विद्या भी भूल चुका था और पत्थरों के या लकडी के घर्षण से वह अग्नि प्रज्वलित करता था तब प्रदीप्त आग को बुझने नहीं दिया जाता था। घर के चूल्हों में गोबर की उपलियाँ दबा कर अग्नि सुरक्षित रक्खी जाती थी और जब कभी कोई मर जाता तो श्मशान में अग्नि के अभाव के कारण से ही अग्नि ले जाई जाती थी। एक हाँडी में यह आग ले जाने की प्रथा उसी युगकी प्रथा है। हाण्डी का प्रयोग इसलिए रक्खा गया था कि मार्ग में हवा आदि से अग्नि उड़ने न पाए। किन्तु अब जब कि-

CamScanner से स्कैन किया गया

श्मशान घाट पर ही अग्नि सुलभ रहती है फिर भी हमने आग पकड़ने को भी एक प्रथा का रूप दे रक्खा है यह कितना अविवेक पूर्ण कार्य है।

मध्य कालीन युग में बाल कटाने की प्रथा थी। क्षौर करना एक प्रकार की शारीरिक शुद्धि का अंग बन गया था। फि: जिसके घर में शोक हो उसका पता चल जाए संभवत: इस उद्देश्य से सिर के बाल निकालने की प्रथा थी। ये प्रथा भी रूढ़ि बन चुकी है। अब तो स्थिति यहाँ तक पहुँच चुकी है कि- किसी सिर मुंडे हुए व्यक्ति को देखकर लोग यह कल्पना क. लेते हैं कि-अवश्य इनके परिवार से कोई व्यक्ति परलोक गमन कर गया है। किन्तु बालों को काटना कोई आवश्यक या अनिवार्य नहीं है।

अनेक जातियों में तो शव का भी सिर मुँडा दिया जाता है। उसे स्नान करा कर उसका भी शृंगार किया जाता है मनो यह शव क्या है। दूल्हे की सी सजावट की जा रही है। जा नहीं अज्ञानियों ने कैसी कैसी प्रथाएँ चला रक्खीं हैं। केवल मात्र शुद्धि के लिए स्नान करा और माथे पर सुगन्ध की ष्टि से चन्दन लगा देना भर पर्याप्त है।

वास्तव में इन तथाकथित धन के लोभी पुरोहितों ने समस्त क्रिया विधानों को आडम्बर पूर्ण बना दिया है। ऐसे आडम्बरों एवं हास्यास्पद क्रिया विधानों में जहाँ समय व धन का दुरूपयोग होता है वहाँ इन आडम्बरों से हमारा अज्ञान भी

CamScanner से स्कैन किया गया

झलकता है। एक ओर इतना घोर आडम्बर तो दूसरी ओ आधुनिक युग के प्रगतिशील परिवार विद्युत श्मशान गृहों मे जाकर दस मिनट में शव की अस्थियों को लेकर लौटते हैं।

इन विद्युत् केन्द्रों को प्रयोग में लाने वालों का तर्क है कि-इस प्रकार के विद्युत श्मशानों में समय तो बचता ही है और दुर्गन्ध भी नहीं आती। शव से निकले धुएँ को चिमनियों के द्वारा आकाश में भेज दिया जाता है।

एक बार हैदराबाद के आकाश वाणी केन्द्र से वायु प्रदूषण पर परिचर्चा का आयोजन किया गया था जिसमें हमने भी भाग लिया था। इस परिचर्चा में इसी समस्या के चिन्तक एक वैज्ञानिक प्रोफेसर भी आमंत्रित थे।

हमने उनसे पूछा कि-वर्तमान में वायु प्रदूषण के प्रति-रोध के लिए आधुनिक विज्ञान वेत्ताओं के पास ऐसे कौन से उपाय हैं जिससे वायु प्रदूषण से बचा जा सके? वे बोले कि-वायु प्रदूषण में कारखानों की पृष्ठ भूमि अधिक होती है अतः इन कारखानों की चिमनियों को बहुत ऊँचा बना देने से प्रदू-षण रोका जा सकता है।

हमें इस बात को सुनकर बड़ा आश्चर्य हुवा यह तर्क ऐसा ही है जैसे किसी दूध भरे गिलास में विष गिर जाए और कोई कहे कि ऊपर ऊपर के दूध को निकाल कर नीचे नीचे का दूध सेवन करने से विष का प्रभाव नहीं होगा। जिस

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रकार इस सुझाव को सुनकर अनुभवी और बुद्धिमान लोग उपहास करेंगें. उसी प्रकार इन वैज्ञानिकों का यह तर्क भी उतना ही अज्ञानता से भरा हुआ है। हमारी धरती के ऊपर एक निश्चित सीमा तक इस वायु का पर्यावरण है। इसमें किसी भी स्थान पर फैलाई गई दुर्गन्ध धीरे धीरे पूरे वायु मंडल में घुल जाती है। जब विद्युत् द्वारा हम शव को जलाते है तो उसकी सारी दुर्गन्ध कुछ ऊपर ले जाकर छोड़ देने से हमें अनुभव नहीं होती। पर वह पूरे वायुमंडल में फैलकर धीरे धीरे पूरे वातावरण को निश्चित रूप से दूषित करती है। उस दुर्गन्ध का आभास हमें इसलिए नहीं होता कि-जिस प्रकार एक घडे पानी में हम एक तोला शक्कर घोल दें तो हमें यह पता नहीं चलेगा कि-घडे के पानी में शक्कर डाली गई है. क्यों कि अधिक पानी में थोडी सी मात्रा में शक्कर डाली गई है। ठीक इसी प्रकार इतने बड़े वायु मंडल में यदि कुछ शवों की गन्ध फैला भी दी जाय तो उसका अनुभवन गन्ध द्वारा नहीं होता पर वायु मंडल दूषित अवश्य हो जाता है। अतः चाहे यन्त्र प्रणाली से शव को जलाया जाए फिर भी उस शव के साथ पर्याप्त मात्रा में घी एवं सुगन्धित द्रव्य भी जलाना एक मानवीय धर्म है। जिससे वह दुर्गन्ध सदा के लिए नष्ट होकर पृथ्वी तत्व में घुल मिल जाए।

इस प्रकार के दाह संस्कार से हम भौतिक प्रदूषण से बच सकते हैं। पर दाह संस्कार से जो आध्यात्मिक लाभ हम ले सकते थे उससे हम वंचित ही रह जाएगें।

CamScanner से स्कैन किया गया

इस बात का अनुभव सभी लोग करते हैं कि जब जब मनुष्य श्मशान में जाता है तब वहाँ उसमें वैराग्य का उदय होता है। पापी से पापी व्यक्ति भी वहाँ जाकर कुछ आध्यात्मिक हो जाता है।

जब शव को अग्नि की भेंट किया जाता है उस समय एक विचित्र प्रकार का मानसिक उद्वेग जगता है और यह प्रतीति होती है कि-जब शरीर की एक न एक दिन यह स्थिति अवश्य होनी है तो फिर इस पेट के लिए इतने पाप क्यों कर किए जाएँ। संसार में अनेक महापुरूषों का निर्माण इस तरह मृत्यु की घटना से ही हुवा है। कपिलवस्तु के राज पथ से अपने प्रासाद को लौटते समय जब मार्ग में राजकुमार सिद्धार्थ ने एक शव-यात्रा को देखा तो जिज्ञासा से बालक सिद्धार्थ ने अपने सारथी से पूछा कि-यह भीड़ इस प्रकार शोकाकुल स्थिति में क्यों जा रही है। तब सारथी ने बतलाया कि यह शवयात्रा है। कोई व्यक्ति मर गया है लोग उसे जलाने के लिए लेजा रहे हैं। तब बालक के मन में मृत्यु के संबंध में जिज्ञासा के भाव जगे। जब उसे पता चला कि मृत्यु प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिवार्य है और एक दिन उसने भी मर जाना है तब उस बालक के हृदय में वैराग्य का उदय हुवा और इसी वैराग्य-भावना ने उसे सिद्धार्थ से बदल कर गौतम बुद्ध बना दिया। राजा से भिक्षु बना दिया।

इसी बिन्दु पर आकर बुद्धिमान् लोग जीवन की निस्सारता का अनुभव करते हैं और मृत्यु से बचने के उपाय खोजते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

हर मृत्यु हमें दिशा बोध कराती है। पर कितने लोग हैं जो इस मृत्यु को इतने संवेग से देख पाते हैं और अपने जीवन को संवार लेते हैं ?

अत: हमारा यह दृढ मत है कि-शव का संस्कार सुगन्धित द्रव्य एवं गाय के घृत के साथ वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ ही कराया जाना चाहिए जिससे इसके द्वारा सत्य. वैराग्य एवं आत्मिक प्रेरणा प्राप्त की जा सके। किन्तु इसके साथ जो आडम्बर और लाभ रहित अज्ञान युक्त क्रिया विधान हमने लगा दिए हैं उनका परित्याग करना भी परम आवश्यक है। मृतकों का श्राद्ध भी एक ऐसा ही आडम्बर पूर्ण क्रिया विधान है। अत: मरने के बाद श्राद्ध आदि करना भी व्यर्थ है।

यह कितनी हास्यास्पद बात है कि-जीवित अवस्था में तो हम परस्पर वैर भाव और द्वेष में पडे रहते हैं। अपने माता पिता. सगे संबन्धियों से लडते झगडते और न जाने किस किस रूप में उनका तिरस्कार करते रहते हैं। जीते जी न उनको प्रसन्न रखते हैं न सेवा करते हैं पर मरणोपरान्त उनकी प्रसन्नता और शान्ति के लिए हम कितने अज्ञान भरे आडम्बर करने लगते हैं। किसी कवि ने ठीक कहा है कि –

जिन्दे माँ बाप से दंगम दंगा,
मरे पीछे ले गए गंगा।

वास्तव में किसी भी आत्मा को सुख या शान्ति हम जीवित अवस्था में ही दे सकते हैं। मरने के बाद पिण्ड दान

CamScanner से स्कैन किया गया

या गोदान और श्राद्ध भोज ये सब उसकी आत्मा को जो मर चुका है रत्ती बराबर भी सुख शान्ति नहीं पहुँचा सकते। अतः बुद्धिमान् लोगों का कर्तव्य है कि वे जीवित माँ बाप का श्राद्ध अर्थात् अनेक प्रकार से उन्हें तृप्त रख श्रद्धा पूर्वक तर्पण किया करें।

श्राद्ध शब्द दो शब्दों से बनता है—श्रत् + धा। श्रत् अर्थात् सत्य। धा अर्थात् धारण करना। मनुष्य जब सत्य ज्ञान को प्राप्त कर उसी के अनुसार आचरण करता है तब वह श्रद्धा कहाती है। जब हम किसी के बारे में कुछ जानते नहीं और अन्ध परम्परा से आँख मूंद कर केवल रूढि मानकर किसी कार्य को चाहे कितने ही भक्ति भाव और विश्वास से करें. वह सत्य पर आधारित न होने के कारण अश्रद्धा कहाती है। इस प्रकार के कार्य का सुखद् फल भला कैसे होगा ? रेती में शक्कर की भावना से रेत शक्कर नहीं बन सकती। इसी प्रकार अपनी अपनी श्रद्धा की बात करना बडी भारी अज्ञानता कहाती है। अतः बुद्धिमान् एवं सुशिक्षित परिवारों के सदस्यों का कर्तव्य है कि सारे कार्यों को सोच विचार कर एवं उसके फल और परिणामों पर विचार करके ही करें।

जब कभी बुद्धिमान् कहलाने वाले लोगों को हम अज्ञान भरे कार्य करते देखते हैं तो हमें लगता है कि-ये कितने नादान हैं। भला जरा सोचिए तो सही कि-कौवे को खिला-कर यह समझना कि-इसका खाया हुवा मृत आत्मा को मिल जाएगा तो ऐसे तथाकथित अज्ञानी ब्राह्मण से पूछिए कि-क्या

CamScanner से स्कैन किया गया

कौव्वा अपने द्वारा खाए हुए अन्न को यजमान के या ब्राह्मण के पेट में पहुँचा सकता है ? यदि नहीं तो मृत आत्मा तक वह कैसे पहुँचायेगा ? फिर इन नादानों को पूछो कि-कौव्वा तो विष्टा. गंदगी खाता है ऐसी गन्दगी खाने वाले का झूठा मृत आत्मा को भेजने वाले की बुद्धि की कितनी प्रशंसा की जानी चाहिए ?

पढे लिखे बुद्धिमान ब्राह्मण जो सत्य शास्त्रों के ज्ञाता हैं वे कभी इस प्रकार के कार्य संपन्न नहीं करा सकते। परन्तु आज तो ब्राह्मण बेचारे को शास्त्रादि पढ़ने की जरूरत ही नहीं क्यों कि जैसे मरे हुए परिजन को कौव्वा भोजन पहुँचा देता है वैसे इन ब्राह्मणों के पुरखों ने शास्त्र पढे थे वे मरते समय विरासत में अपना ज्ञान इनके लिए छोड़ गए अत: ये बिना पढे ही पढे लिखे कहाते है ! क्यों कि-जब इन्होने ब्राह्मणत्व के पढ़ने पढ़ाने के कर्तव्य का परित्याग कर दिया और घोषणा कर दी कि-ब्राह्मण योग्यता या विद्वत्ता से नहीं अपितु जन्म से होता है न कि-कर्मों से। ऐसे अल्पज्ञों से पूछो-कि-क्या किसी वकील या एडवोकेट का बेटा बिना पढे लिखे. विधि विधान को बिनाजाने हायकोर्ट में प्रैक्टिस करने के लिए प्रार्थना पत्र भेज दे तो क्या उसे प्रैक्टिस करने की स्वीकृति इस आधार पर मिल जाएगी कि-उनके पिता प्रसिद्ध विधि वेत्ता थे ? भला जब यह संभव नहीं तो फिर ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण कैसे कहला सकता है। इसी अज्ञान के कारण आज समाज की और उसके पुरोहितों की कैसी दुर्दशा हो रही है।

CamScanner से स्कैन किया गया

ब्राह्मण ने एक ओर तो शास्त्रों का अध्ययन. अध्यापन छोड़ दिया। दूसरी ओर वह लोभी बन गया। अर्थ लोभ के साथ साथ वह जिह्वा का भी इतना लोभी हो गया कि - उसने स्वेच्छा से जी भर मिठाई और माल पर हाथ फेरने के उद्देश्य से अपना कार्य रसोई बनाना चुन लिया। यह कितने पतन और लज्जा की बात है। शूद्रों का कार्य रसोई बनाना होता है। सो ब्राह्मणों ने केवल खाने के लोभ में रसोई बनाने का कार्य सँभाल लिया। यह है इस देश की दुर्दशा और तथाकथित ब्राह्मणों की दुर्दशा। पहले ब्रह्म भोज यजमान कराते थ। विद्वानों को भोजन कराना व सत्कार करना यजमान का कार्य होता था। आज यजमान भोज होता है। ब्राह्मण रसोई बनाता है और यजमान खाते हैं। फिर ब्राह्मणों के लोभ की सीमा नहीं रही परमात्मा न करे किसी के घर में कोई मर जावे। मरने वाला तो बेचारा मुक्ति पा गया पर जो उत्तराधिकारी है उसकी शामत करा देते हैं ये तथाकथित ब्राह्मण। यही सुअवसर उन्हें उपलब्ध होता है लूट खाने का। दुःखी यजमान का सिर पहले तो नाई मूँडता है पर असली मुंडन करते हैं ब्राह्मण देवता। यजमान के घर में कोई मरा क्या ? बस बन आई इस ब्राह्मण की। उल्टे उस्तरे से जी भर कर यजमान का मुण्डन हो जाता है। फिर मरने वाले के घर में भोज का आयोजन होता है। कोई दसवाँ, तेरहवाँ. कोई प्रतिवर्ष का श्राद्ध। मरने वाले मर गए। शोकाकुल परिवार वाले रो रहे हैं और उधर बिरादरी के लोग भोज उड़ा रहे हैं ? हाँ

CamScanner से स्कैन किया गया

इतना लाभ तो अवश्य हो जाता है कि इस भोज के कार्य में व्यवस्था में थोड़ा वातावरण शोक से दूर का हो जाता है।

पर आवश्यकता है कि बदलते युग के परिप्रेक्ष्य में अब इन व्यवस्थाओं को भी बदलना होगा। जिसका पाप और पुण्य के साथ कुछ भी लेना देना नहीं है। हाँ दुःखी शोकाकुल परिवार में अध्यात्म चर्चा हो जीवन क्या है? मृत्यु क्या होती है? इसपर विचार हो यज्ञ हो. आध्यात्मिक गीत गाए जाएँ और मनुष्य संसार के यथार्थ को समझें। जो आत्मा बिछुड़ गई है उसकी इच्छा व रुचि का ध्यान रखते हुए किसी अच्छी संस्था को शुद्ध परोपकार के लिए दान आदि देना. इन भोज आदि के व्यय से अधिक उपादेय सिद्ध होता है।

ऐसी पवित्र प्रेरणा के विपरीत ब्राह्मण अपना स्वार्थ साधने और शोक के समय का भी अनुचित लाभ उठाते हैं यह कदापि शोभा प्रद नहीं होता। विचारशील ब्राह्मण विद्वान् भी विचार करें कि-हम पर इस परिवार को उन्नति के मार्ग पर ले जाने का दायित्व है। परिवार में सबसे बड़ा मान्य व्यक्ति पुरोहित ही होता है अतः पुरोहितों को चाहिए कि-वे ऐसा स्वार्थ से भरा आचरण न करें।

दूसरी ओर परिवार के सदस्यों का कर्त्तव्य है कि-वे समस्त विधि विधान को आडम्बर रहित होकर करें और अन्त में अपने पुरोहित का यथायोग्य दक्षिणा आदि से सत्कार करें। दक्षिणा में श्रद्धा से अधिक क्षमता का ध्यान रखना

CamScanner से स्कैन किया गया

चाहिए क्यों कि अन्ततः पुरोहित का दायित्व भी तो यजमान पर ही होता है।

दाह संस्कार के तीसरे दिन अस्थियों का चयन कर किसी नदी में उन अस्थियों का विसर्जन कर दिया जाए या किसी खेत में उस भस्म को बिखेर दिया जाए। विसर्जन से पूर्व भी प्रभु की स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों को पढ़ लिया जाए और विसर्जन के पश्चात् शान्तिपाठ कर लिया जाए। तत्पश्चात स्नान आदि से शुद्ध होकर घर पर यज्ञ किया जाए। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि नदियों का पानी पीने के काम आता है अतः नदियों में अस्थि बहाना ठीक नहीं। खेतों में बिखेरना लाभ प्रद है। वास्तव में इसके बाद कोई कार्य शेष नहीं रह जाता। हाँ परिवार में एक अच्छे वातावरण के निर्माण के लिए तेरह दिनों तक या न्यूनाधिक जैसा भी ठीक लगे यज्ञ और कथा का आयोजन किया जाए। परिवार के सब सदस्य रोज यज्ञ व प्रवचन का आयोजन कर सकते हैं।

किन्तु यह सारा कार्य बिना किसी पाखण्ड या आडम्बर के किया जाना ही बुद्धिमत्ता कहाएगी।

मरने के बाद पिण्ड दान आदि का भ्रम जाल फैलाया जाता है। इन बेचारे अज्ञानियों को पिण्ड शब्द के अर्थ का भी बोध नहीं। याद रखिए पिण्ड शब्द का अर्थ है शरीर। शरीर को जब हम चिता पर रख देते हैं तो इस क्रिया को ही पिण्ड

CamScanner से स्कैन किया गया

दान कहते हैं। शरीर को अग्नि की भेंट करना ही पिण्ड दान है। आटे के पिण्डों का तमाशा रच कर एक शोकाकुल व्यक्ति से श्मशान भूमि में धन ऐंठने के कार्य सभ्य समाज में कभी प्रशंसित नहीं हो सकते। देखिए हमारी संस्कृति में मृत्यु के पीछे कोई भी आडम्बर नहीं किया जाता था। इस संस्कृति में सदा जन्मोत्सव मनाए जाते थे न कि-शोकोत्सव। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्मदिन राम नवमी. योगेश्वर कृष्ण का जन्म दिन कृष्ण जन्माष्टमी. सती सीता का सीताष्टमी. चक्रवर्ती राजा शिव का शिवरात्रि और अत्यन्त प्रतापी राजा जो प्रजा द्वारा. गण द्वारा प्रतिस्थापित किए गए थे ऐसे राजा गणेश का दिन गणेश चतुर्थी आदि आज भी हम लोग मनाते हैं। किन्तु इनकी मृत्यु का दिन किसी को पता तक नहीं। श्राद्ध. तर्पण आदि के समारोह तब मनाए जाते थे जब अपने परिवार के सज्जन. माता. पिता आदि वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर गृह त्याग कर जाते थे पुनः जब कभी वे अपने परिवार के सदस्यों को उपदेश देने घर आते तो उनका श्रद्धा सहित मान करना ही सच्चा श्राद्ध था। मरने के पीछे किया जाने वाला श्राद्ध तो मृतक का न होकर उन तथा कथित ब्राह्मणों का श्राद्ध कहाता है जो माल ताल चट करने पहुँच जाते हैं। यह विधान तो लोभी. लालची ब्राह्मणों का अपना पेट भरने के उद्देश्य से अज्ञानियों द्वारा बनाया गया है। किसी धनी यजमान के घर मृत्यु हो जाने पर जहाँ सब शोकाकुल हो जाते हैं। तब स्वार्थी अज्ञानी ब्राह्मण प्रसन्न होते है क्यों कि मरने पर दान दक्षिणा का बड़ा झूठा महत्व बना लिया है।

CamScanner से स्कैन किया गया

यहाँ तक कि मरने वाले के हाथ से गोदान, स्वर्णदान पता नहीं क्या क्या दान करा ब्राह्मण यजमान को लूट लेते हैं। यह मृतक श्राद्ध न होकर इन लोभी ब्राह्मणों का श्राद्ध अवश्य हो जाता है। निम्न कथा के द्वारा यह बात स्पष्ट समझी जा सकती है।

एक जाट जी के पिता जब मरने लगे तो स्वार्थी ब्राह्मण ने जिसकी निगाह उस जाट की बीस किलो दूध देने वाली गाय पर थी। अवसर का लाभ उठाकर गोदान की बात कही और बतलाया कि-यहाँ से तीस करोड कोस की दूरी पर दक्षिण में नैऋत्य दिशा की ओर वैतरणी नदी है। मरकर जीवात्मा अंगूठे जितना शरीर धारण कर जब स्वर्ग में जाता है तो उसे वैतरणी नदी पार करनी होती है। दान दी हुई गाय की पूंछ पकड़ कर मनुष्य सरलता से वैतरणी पार कर लेता है। तब जाट ने उस चालाक ब्राह्मण को गोदान के नाम पर देने के लिए दस रुपए निकाले तब ब्राह्मण बोला हम न लेगें। जाट बोला तो लो बीस रुपए ले लो और इससे एक गाय खरीद लो। ब्राह्मण बोला ऐसा नहीं होगा। साक्षात् अपनी स्वस्थ दूध देने वाली गाय मँगाओ ! क्या अपने बाप से बढ़कर तुम गाय को मानते हो ? तब तो सब घरवालों ने जाट पर जोर डाला कि-वह घर की गाय दे दे। बेचारा जाट अपने पिता की मृत्यु के समय क्या बोलता ? बस घर की गाय का संकल्प पढ़ उसने वह गाय ब्राह्मण के हवाले कर दी। उस दुधारू गाय को लेकर ब्राह्मण देवता घर पहुँचे। दूध दुहने का समय हो गया तो दूध

CamScanner से स्कैन किया गया

दुहा। फिर जाट के पिता का अन्त्येष्टि संस्कार कराने श्मशान पहुँचे ! वहाँ दश गात्र. और पिण्डदान के नाम पर जाट से और पैसे ऐंठें। उधर श्मशान में महा ब्राह्मण आ गए और उन्होने अपनी दक्षिणा माँगी।

बेचारा जाट परेशान हो गया ! पिता तो मरा सो मरा पर रहने वालों को ये ब्राह्मण मरने वालों से भी अधिक कष्ट देते हैं। तेरह दिन तक जाट के परिवार के सदस्यों को पीने दूध भी न मिला। जाट दिल ही दिल में बेचैन हो गया। चौदहवें दिन सुबह जाट ब्राह्मण के घर पहुँचा। उस समय वह नकली ब्राह्मण जिसे पोप कहना ही ठीक है बोला - आओ जजमान जी ! बैठो। जाट ने जब देखा कि-पोप जी दूध दुह कर मौज उड़ा रहे हैं तो गुस्से में बोला - मैं ही क्यों बैठूँ ? तुम भी आओ बैठो। पोप जी बोले जरा मैं दूध का पात्र तो रख आवूँ तो जाट बोला वह दूध का बर्तन भी इधर लाओ। तब तो पोप जी उसके सामने दूध का पात्र रख बोले कहो जजमान ! जाट ने कहा आपने हमसे तो कहा था कि - इस गाय की पूंछ पकड़ कर हमारे पिताजी वैतरणी नदी पार करेंगें। तो फिर तुमने गाय वहाँ क्यों न पहुँचायी। पता नही मेरे पिता ने वैतरणी में कितने गोते खाये होगें ?

पोप बोला आपके दान के प्रभाव से वहाँ एक दूसरी गाय बन जाएगी और वे उसकी पूँछ पकड़ कर तर जाएगें। जाट ने कहा तो उनके तरने की तार चिठ्ठी कुछ आयी हो तो

CamScanner से स्कैन किया गया

बतलाओ नहीं तो मेरी गाय मुझे वापस दे दो। पांप जी बोले महाराज ! दिया दान वापस लेने से तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। तो जाट बोला महाराज ! असत्य का. झूठ का व्यवहार तो तुम कर रहे हो फिर सत्यनाश तो तुम्हारा होगा हमारा क्यों होगा ? कहकर जाट ने अपनी गाय को रस्सी खोली और दूध का बर्तन लेकर घर की ओर चला और बोला-हमारे दान के प्रभाव से वहां जो दूसरी गाय बन गई होगी उसे तुम ले आओ और खूब दूध पियो। तब वह स्वार्थी ब्राह्मण देखता ही रह गया।

विद्वानों का सत्कार अवश्य करना चाहिए पर लोभी और झूठमूठ बहकाकर जो धन ऐंठते हैं ऐसे नकली ब्राह्मणों के चक्कर में कभी न आना चाहिए। दश गात्र का अर्थ है दस इन्द्रियाँ। यह दस इन्द्रियों वाला पिण्ड अर्थात शरीर है इसका दान करना अर्थात् उसे चिता में धर जलाना ही पिण्डदान है। इस प्रकार की झूठी अन्ध परम्पराओं में फंस कर दुःख उठाना ठीक नहीं।

इसलिए हमारा समझदार पढे लिखे बुद्धिमान लोगों से यही आग्रह है कि-जो व्यक्ति जब तक जीवित हों तब तक उनका मान करो। आदर करो। उसे अभाव ग्रस्त मत रहने दो ? किन्तु किसी के मर जाने के बाद दिवंगत आत्मा के लिए कुछ करनें की अपेक्षा जो जीवित शेष बचे हैं उनकी ओर ध्यान देना ही उचित है। क्योंकि-सदा याद रखिए कि-जो करता है फल उस करने वाले को मिलता है। जो चला गया है आपके

CamScanner से स्कैन किया गया

किसी भी कर्म का फल उसे कभी भी नहीं मिल सकता। हाँ अपने कल्याण के लिए यदि आप किसी अच्छे कार्य में दान देते हैं या किसी विद्वान् को सहयोग करते हैं तो आप अवश्य कीजिए।

शास्त्रों में लिखा है कि-वेद प्रचार या अन्य किसी ज्ञान के प्रचार व प्रसार के लिए दान देना दाता के पुण्य को बढ़ाता है। इसलिए जब किसी का देहावसान हो तब मृतक शरीर को सबसे पहले सीधा लिटा देना चाहिए। हाथ पैर सीधे कर देने चाहिएँ। क्यों कि-देह ठण्डा होकर जैसे का वैसा ही अकड़ जाता है। अतः शीघ्र ही सीधा कर लिटा दें और एक स्वच्छ कपडे से शरीर को ढाँप दें।

घर के लोग वहाँ कुछ समय बैठ परमात्मा का ध्यान करें। घर के जिस कमरे में शव रखा जाए वहाँ किसी छोटे से यज्ञ कुण्ड में घी व सामग्री जलाते रहें। उठाने से पूर्व स्नान करा. अर्थी पर शरीर को लिटा सब मिलकर परमात्मा की स्तुति. प्रार्थना. उपासना के मंत्र पढें फिर शव को श्मशान की ओर ले जाएँ। ले जाते समय सब लोग ओ३म् क्रतो स्मर। ओ३म् क्लिबे स्मर और ओ३म् कृतं स्मर का पाठ करें या फिर वेद मंत्रों का पाठ करते ले जाएँ। चिता पर जब देह रक्खें तो मृतक का सिर दक्षिण दिशा में न रक्खें। दक्षिण दिशा नीचे की दिशा है। जो नीचे की ओर अधोगति का प्रतीक है। सिर उत्तर की ओर रक्खें। ऐसा ही शास्त्रों में लिखा है।

मंत्रों के द्वारा चिता में घी की आहुति दें और अग्नि लगाने से पहले ही खूब सुगन्धित पदार्थ शरीर पर डाल दें।

CamScanner से स्कैन किया गया

जिससे वायु गन्दा न हो। बाद में घर पर जिस कमरे में शव रक्खा गया हो उसे धोकर वहाँ यज्ञ करलें। जिससे कमरे का वायु कीटाणु रहित शुद्ध हो जाए।

जिस दिन शरीर का दाह संस्कार हो उस दिन से तीसरे दिन फूल चुनें और उन्हें किसी भी खेत में फैला दें। नदी में फूल डालने से पानी अशुद्ध होता है। लोग नदी का जल पीते हैं. अतः नदी में राख और अस्थि डालना पाप करने के समान है।

नदी में बहाने का चक्कर भी इन ब्राह्मणों की धन कमाने की युक्ति है। याद रखिए ये सब अन्ध परम्परा है ब्राह्मणों द्वारा पैसा कमाने के लिए यह विधि बनाई गई हैं। ब्राह्मण जन हमें क्षमा करें। हम ब्राह्मण विरोधी नहीं हैं। इन्हें समाज को ज्ञान के रास्ते पर ले जाना चाहिए न कि लोगों को मूर्ख बना कर धन एंठना।

अपने यजमानों को सत्य ज्ञान दीजिए। उन्हें अच्छे रास्ते पर ले जाइए और यजमान विद्वान ब्राह्मणों का उत्तम वस्त्र. और योग्य दक्षिणा आदि से सम्मान अवश्य करे। पर विद्वानों का कार्य है कि वे लोभ रहित होकर ज्ञान का प्रकाश फैलाते रहें।

इस जीवन को सुखी बनाने का मार्ग दिखाएँ। ईश्वर के सच्चे स्वरूप का बोध कराएँ। दुःखी जनों को सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा करना विद्वानों का कर्तव्य है। परमात्मा और जीवन निर्माण की चर्चा करके दुःखी परिवार के शोक को कम करना ही मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

CamScanner से स्कैन किया गया

चौथा दिन

४

मृत्यु कब. क्यों. कैसे ?

शोक सन्तप्त परिवार के प्रिय सदस्यो !

समय भी शोक की एक बडी दवा है। जैसे जैसे दिन बीतने लगते है. शोक की परत पतली होती चली जाती है। हमें निरन्तर शोक को परे ही धकेलते रहना है। जब हम संसार के सत्य को विवेक से जानने लगते हैं तो शोक स्वयं ही दूर हटता चला जाता है आज हम विचार करेंगे कि मृत्यु कैसे होती है ? कितने प्रकार की होती है ?

यदि मृत्यु के प्रकारों पर विचार करें तो हमें स्पष्ट रूप से दो प्रकार की मृत्यु दृष्टि गोचर होती है। प्रथम प्रकार की मृत्यु का कारण बाह्य होता है और दूसरे प्रकार की मृत्यु शरीर के भीतरी कारणों से होती है। जैसे व्यक्ति बिलकुल स्वस्थ हृष्ट पुष्ट है। शरीर का हर अंग सुडौल एवं स्वस्थ है किन्तु मार्ग को असावधानी से पार करते हुए किसी सवारी से टकरा गया और काल का शिकार हो गया। मनुष्य के भीतर कोई विकार न था अर्थात् शारीरिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ था किन्तु बाहर

CamScanner से स्कैन किया गया

के कारणों से मृत्यु को प्राप्त हो गया। जंगल में बैठे तपस्या रत पाणिनी मुनि 'जो संस्कृत व्याकरण के प्रणेता थे' शेर ने अपना आहार बना लिया। युद्ध क्षेत्र में लड़ता हुआ सेनापति दुश्मन की गोली का शिकार हो गया। आसमान से बिजली गिरी या भूकंप से मकान की छत गिरी और मृत्यु हो गई इस प्रकार की मृत्यु के सारे कारण बाह्य होते हैं।

बाह्य कारणों में कभी कभी मृत्यु का सारा दायित्व मृतक का अपना होता है वह स्वयं अपनी भूल से भी मारा जाता है। सड़क पर गलत दिशा में अनियंत्रित होकर चलना या पूरी असावधानी से चलना। ऐसी मृत्यु का कारण व्यक्ति स्वयं होता है। इस प्रकार की मृत्यु में कभी कभी दूसरे की भूल से सावधानी पूर्वक चल रहा व्यक्ति भी मृत्यु का कारण बन जाता है। इस में मरने वाले का दोष नहीं होता अपितु हन्ता ही उत्तरदायी होता है। कभी-कभी दोनों पक्ष समान रूप से दोषी होते हैं। कभी कभी प्राणी दैवी प्रकोप का भी शिकार हो जाता है। ये हुए बाह्य मृत्यु के प्रकार और कारण।

दूसरी प्रकार की मृत्यु के कारण हमारे शरीर के भीतर से उत्पन्न होते हैं। इसमें दुर्बलता. रोग. काम. क्रोध आदि का सीमातीत हो जाना। संक्रामक रोगों का शिकार होना. हृदय गति का अवरोध या किसी प्रकार की व्याधि से ग्रस्त होना आदि। स्वयं किया हुआ विषपान या दूसरे के द्वारा दिया गया विष आदि भी मृत्यु के कारण बन सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि कभी हम अपनी भूल से. कभी सामने वालों की भूल से.

CamScanner से स्कैन किया गया

या दैवी प्रकोप से हम कराल काल के गाल में फंस जाते हैं। प्रायः हमने यह मान रखा है कि जब हम पैदा हुए थे तभी हमारी मृत्यु निश्चित कर दी गई थी। कुछ लोग कहते हैं कि हमारा जीवन समय चक्र से नहीं बंधा है अपितु श्वास चक्र से बँधा है। बस श्वास या समय पूर्ण होते ही हमें मरना होता है। इन व्यर्थ की बातों को अपने मस्तिष्क से निकाल दीजिए। आयु के निश्चित होने का अभिप्राय केवल इतना है कि प्रत्येक योनि में प्राणी की पृथक् पृथक् एक सामान्य आयु निश्चित है। जैसे मनुष्य की आयु औसतन सौ वर्ष की मानी गई हैं। ऐसे ही गाय, घोड़े, ऊंट, हाथी, सांप आदि की आयु अलग-अलग मानी जाती है।

गंभीर दृष्टि से मृत्यु के सन्दर्भ में दो पक्ष हैं एक काल मृत्यु जो पूर्व ही निश्चित रहती है और एक अकाल मृत्यु जो कारण विशेष से असमय में ही हो जाती है। इस पर भी विचार करना आवश्यक है। संसार में साधारणतः प्रत्येक वस्तु की एक निश्चित आयु होती है। जानदार प्राणियों की बात तो छोड़िए बेजान चीजों की भी एक आयु सीमा निश्चित होती है। जैसे घड़ी है, मोटर है, सायकिल है, कोई भी पदार्थ ले लीजिए। जिस वस्तु का भौतिक कलेवर होता है वह एक न एक दिन नष्ट हुए बिना नहीं रहता। तो हम कह सकते हैं कि किसी भी चीज की बनावट उस की मूल धातु पर आधारित होती है। यदि कोई वस्तु कच्चे लोहे से बनी है तो वह पक्के लोहे से बनी वस्तु की अपेक्षा शीघ्र नष्ट होगी।

CamScanner से स्कैन किया गया

वैसे ही हमारा शरीर है। यदि हम जन्म से ही हृष्ट पुष्ट उत्पन्न हुए हैं तो कहा जा सकता है कि हम अवश्य दीर्घायु होंगे और यदि हम जन्म से ही दुर्बल बीमार हैं तो हम अल्पायु होंगे। साधारण तया यह बातें ठीक हैं। पर केवल इसी बात पर आयु का निर्धारण समुचित नहीं। इस बात पर भी उस वस्तु की आयु निर्धारित होती है कि उस वस्तु का उपयोग करने वाला उसका प्रयोग कैसे करता है? उसी प्रकार माता पिता ने हमें जन्म दिया उन के रज वीर्य व माँस से हमारे शरीर का निर्माण होता है। यह निर्माण अच्छा हो या बुरा इस का दायित्व उन्हीं पर जाता है। किन्तु जब हम समझ दार हो जाते हैं। भले और बुरे की परख करने लग जाते हैं तब हमारी आयु का दायित्व हम पर होता है। हम अपने परिश्रम से पुरुषार्थ से निश्चय ही आयु को बढ़ा सकते हैं। शरीर को यदि हम साव-धानी पूर्वक रखें तो वह कम से कम सौ वर्षों तक तो अवश्य ही काम देता है। इसीलिए मनुष्य को शतायु माना जाता है। इस आयु को और भी अधिक बढ़ा कर दुगुना तिगुना अर्थात् दो सौ तीन सौ वर्ष भी मनुष्य जी सकता है। वेद में कहा भी है

त्र्यायुषं जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।

यदि आयु सुनिश्चित होती है तो फिर वेद मंत्रों में परमात्मा से की जाने वाली समस्त प्रार्थनायें निरर्थक हो

CamScanner से स्कैन किया गया

जाती हैं। संसार में हम देख रहे हैं कि पहले प्लेग, हैजा, चेचक आदि महामारियों से हजारों व्यक्ति काल कवलित हो जाते थे। किन्तु इन बीमारियों पर नियंत्रण प्राप्त करने से हमारे देश की औसतन आयु बहुत बढ़ गई है। आज शिशुओं तथा बूढ़ों के मरने की संख्या में और चालीस, पचास वर्ष पहले की वार्षिक मृत्यु संख्या में जमीन आसमान का अन्तर आ गया है।

जिस प्रकार परीक्षा में बैठने वाले छात्रों को प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ढाई या तीन घण्टे का समय निर्धारित किया जाता है उसी प्रकार मानव देह के लिए सौ वर्ष की अवधि दी गई है। विशेष स्थिति में यह अवधि घट जाती है। जैसे कोई छात्र परीक्षा भवन में गलत आचरण करता है तो उसे लिखने के अधिकार से वंचित कर के उस की कापी छीन ली जाती है। वैसे ही हम देखते हैं कि बहुत से लोग अपनी नादानी और मूर्खता से असावधानी या कारण विशष से छोटी आयु में ही काल के शिकार हो जाते हैं।

यदि हमारी आयु सुनिश्चित होती तो हमारे द्वारा किए जाने वाले कर्म भी सुनिश्चित ही होने चाहिएँ थे। फिर यदि कोई व्यक्ति किसी की हत्या कर देता है तो उसे मृत्यु दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए। क्यों कि उस व्यक्ति की आयु निश्चित थी। उसे मार कर हत्यारे ने परमात्मा के कार्य में सहयोग ही किया है किन्तु ऐसा लोक में भी नहीं माना जाता

CamScanner से स्कैन किया गया

अतः मृत्यु का दिन निश्चित नहीं हो सकता। इसलिए यह बात मान लेनी चाहिए कि अपने आचरण द्वारा आयु को घटाया एवं बढाया भी जा सकता है। हम देखते हैं कि कभी कभी अप्रत्याशित ढंग से दैवी आपदायें आ जाती है और स्वस्थ व्यक्ति भी. धर्मात्मा लोग भी. अनायास इस के शिकार हो जाते हैं। भाग्य के सहारे जीने वाले अज्ञान में जी रहे हैं ज्ञान पूर्वक. बुद्धि पूर्वक मनुष्य अपनी आयु को बढा सकता है। समस्त समुचित पुरुषार्थ के बाद जो कुछ घटता है उसे दैव या भाग्य कहा जा सकता है। इसलिए मृत्यु मूर्खता से. स्वाभाविक या दैवी प्रकोप से. सभी प्रकार से संभव है। परन्तु मनुष्य के लिए अपने शरीर की रक्षा. अपने जीवन की रक्षा. प्रथम कर्तव्य माना गया है।

मनुष्य का शरीर भी उस की आत्मा के लिए एक वाहन है। इस की भी ऐसी ही समुचित देखभाल करनी चाहिए जैसे हम अपनी मोटर या स्कूटर कीं करते हैं। जिस प्रकार कारखाने में उत्पादन करने वाले अपनी वस्तुओं की ग्यारण्टी देते हैं कि अमुक वस्तु इतने वर्षों तक की सर्विस दे सकेगी। उदाहरण के लिए एक ही कारखाने में बनी सायकल संभवतः बीस वर्ष की सर्विस देती है। इन सायकिलों को आप विभिन्न व्यक्तियों को प्रयोग के लिए दे दीजिए और फिर इन सायकिलों का विवरण प्राप्त कीजिए तो आप को आश्चर्य जनक परिणाम दृष्टि गोचर होंगे।

एक सायकल कारखाने से वितरक के पास पहुँची। वहाँ से ग्राहक ने खरीदी। गाडी का हर पुर्जा अच्छी तरह जाँचा

CamScanner से स्कैन किया गया

गया था। पर तीसरे ही दिन अकस्मात् उस सायकल की मोटर कार से टक्कर हो गई और बीस वर्ष तक काम करने की ग्यारण्टी वाली सायकल तीसरे दिन ही नष्ट हो गई। दूसरे व्यक्ति ने अपनी सायकल को बडी हिफाजत से रखा। समय पर ऑयलिंग कराता व उसे पोंछ पोंछ कर स्वच्छ रखता। सावधानी से चलाता. वह सायकल पन्द्रह वर्ष बाद भी बहुत अच्छी हालत में कार्य कर रही है। तीसरे व्यक्ति ने सायकल खरीदी पर वह उसके प्रति लापरवाही बरतता रहा फलतः दस वर्ष में ही खटारा बन गई।

इसी बात को अब हम दूसरी तरह ऐसे समझ सकते हैं कि-मान लीजिए किसी अन्न के बीजों को हम खेत में डालते हैं। इन्हीं बीजों को तीन चार अलग-अलग प्रान्तों में बोया गया। एक प्रान्त में फसल बहुत अच्छी आई तो कहीं मध्यम और कहीं नष्ट हो गई।

एक बीज को विकसित होने के लिए अनेक कारणों की आवश्यकता होती है। सर्व प्रथम बीज अच्छा होना चाहिए क्यों कि बीज प्रत्येक पदार्थ का मूल कारण होता है। दूसरे जिस मिट्टी में वह बोया जा रहा है. वहाँ की मिट्टी भी अच्छी होनी चाहिए मिट्टी में अच्छी खाद की भी जरूरत है। समय पर पानी भी उपलब्ध रहे। पानी भी न कम न ज्यादा। सब कुछ ठीक होकर भी यदि ऋतु अनुकूल न हो तो भी बीज व्यर्थ जायगा। जैसी फसल अपेक्षित है वैसी न हो कर मामूली हो जायगी।

CamScanner से स्कैन किया गया

तीसरा उदाहरण एक दीपक का लीजिए। पहले दीपक या मिट्टी की पन्था अच्छी होनी चाहिए। फिर उसमें बाती भी ठीक हो। बत्ती के साथ तेल भी पर्याप्त होना चाहिए फिर उसे ऐसे स्थान पर रखा जाय जहाँ हवा का तीव्र आक्रमण न हो सके। यदि दीपक ठीक न रहा तो तेल की सप्लाई बिगड़ेगी दीपक बुझ जाएगा। तेल भी है पर बत्ती छोटी है तो भी दीपक बुझ सकता है। तेल, बत्ती, दीपक सब ठीक हैं पर मौसम के कारण तेज हवा चल पड़ी तो एक झोंके में ही दीपक शान्त हो जाता है। बस यही हालत हमारे शरीर की या जीवन की भी है। हमारे शरीर में बीज रूप में पिता का योगदान होता है। पिता के स्वास्थ्य और रक्त कण का प्रभाव बच्चे के शरीर पर होता है। माता शिशु के जन्म में पृथ्वी का कार्य करती है। हर फसल पर बीज का और मिट्टी दोनों का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।

एक ही मूली या गाजर के बीज को आप उत्तर भारत के खेत में डालिए और उसी बीज को दक्षिण भारत की भूमि में बोइए दोनों प्रकार की मूली या गाजर की लम्बाई, मोटाई, स्वाद, रंग आदि में आप को स्पष्ट अन्तर नज़र आएगा। क्योंकि दोनों स्थानों की मिट्टी पानी में अन्तर है। ठीक इसी प्रकार मानव जीवन की स्थिति भी है। मनुष्य के शरीर में एक तो आत्मा है दूसरा है शरीर। जड़ और चेतन का यह एक अद्भुत संयोग है। जड़ का प्रभाव चेतन पर और चेतन का प्रभाव जड़ पर पड़ता है अर्थात् आत्मा का प्रभाव

CamScanner से स्कैन किया गया

शरीर पर और शरीर का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है। प्रभु का जो सब से अद्भुत कार्य है वह है आत्मा और शरीर का सयोजन। आज का विज्ञान शरीर का निर्माण कर सकता है। वह नस नाडियों में रक्त की धारा का संचार भी कर सकता है। पर अपने कृत्रिम यत्रों से वह शरीर में चेतन सत्ता का संयोजन नहीं कर सकता। चाहे विज्ञान कितनी भी प्रगति कर ले पर जड और चेतन का संयोजन मनुष्य के सामर्थ्य से बाहर की बात है। हमारे विचारों का कैसा प्रभाव इस शरीर पर पड़ता है इस का प्रत्यक्ष दर्शन वैज्ञानिकों ने किया है। एक चूहे को उसकी खुराक खिलाई गई और वैज्ञानिकों ने अपने सूक्ष्म यत्रों से चूहे के पेट में चल रही पाचन प्रक्रिया को प्रत्यक्ष देखा। इसी बीच उन्होंने एक परीक्षण किया। चूहे के सामने बिल्ली को घुमाया गया। जैसे ही चूहे ने बिल्ली को देखा भयभीत हो गया। वैज्ञानिकों ने देखा कि इस भय के कारण चूहे के पाचन यंत्र ने एकदम अपना कार्य करना बंद कर दिया। केवल भय से या विचार मात्र से हमारे पाचन यंत्र प्रभावित होते देखे गए हैं। यह कैसा विचित्र संयोजन है ?

वैज्ञानिकों के द्वारा भी कई यंत्र चलाये जाते हैं जिन्हें वे जब चाहे रोक सकते हैं। स्व चालित मशीनें सब काम स्वयं कर लेती हैं। पर ये कार्य वे अग्नि या विद्युत् तरंग के माध्यम से करते हैं। विचारों से किसी भी कार्य का संचालन या अव-रोध वे नहीं कर पाते. न कर सकते हैं। यह चमत्कार उस अदृश्य शक्ति का ही है। जैसे एक चूहे के शरीर पर भय का

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रभाव प्रत्यक्ष देखा गया वैसा ही प्रभाव मानव देह पर भी स्पष्ट देखा जा सकता है। भय से भी अधिक गहरा प्रभाव मनुष्य पर शोक का पड़ता है।

शोक का समाचार सुनते ही अच्छे से अच्छा बलवान् व्यक्ति भी अपने को एकदम निर्बल अनुभव करने लग जाता है। काम. क्रोध. लोभ. मोह भय शोक. ईर्ष्या. द्वेष आदि का गहरा दुष्प्रभाव हमारे शरीर को झेलना पड़ता है।

अंग्रेजी शासन के समय की सत्य घटना है कि एक क्रान्तिकारी को देशद्रोह के अभियोग में पकड़ लिया गया। मुकद्दमा चला और न्यायालय ने उन्हें फांसी की सजा सुना दी। कहा जाता है कि फांसी की सजा के भय से एक ही रात में उस व्यक्ति के काले बाल पूरे सफेद हो गए। विचारों का यह कैसा विचित्र प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है। स्वस्थ विचार मनुष्य को स्वस्थ बनाते हैं। शोक व दुःख के समाचार किस तरह हमारी भूख. प्यास. नींद सब पर अपना दुष्प्रभाव डाल देते हैं इस बात को सभी लोग भली प्रकार अनुभव कर सकते हैं।

हमारे जीवन निर्माण में एक ओर माता-पिता के तत्वों का हाथ होता है तो दूसरी ओर हमारे पूर्व जन्म के संस्कार भी हमारे निर्माण में सहायक होते हैं। तीसरा प्रभाव शिशु के शरीर पर समाज व प्रकृति के वातावरण का भी होता है। एक ओर वंशानुगत गुण हम में संचरित होते रहते हैं तो

CamScanner से स्कैन किया गया

दूसरी ओर हमारे द्वारा लिया जाने वाला आहार भी हमारे अंग प्रत्यंगों का निर्माण करता रहता है। आत्मा का प्रभाव देह पर और देह का प्रभाव आत्मा पर सहज ही देखा जा सकता है। हम अपने संस्कारों के वशीभूत कर्मों की ओर प्रवृत्त होते हैं और कर्मों के फल हमारे संस्कारों का निर्माण करते हैं। हमारे पूर्वजन्म के संचित कर्म व वर्तमान में किए जाने वाले कर्म मिल कर हमारी आयु निर्धारित करते हैं।

यदि हमारी आयु पूर्व जन्म के ही फलों से निश्चित होती तो फिर हमें कुछ करने धरने की आवश्यकता ही नहीं होती। हमारी पूर्ण आयु का भोग परमात्मा की व्यवस्था से ही नियत होता फिर किसी को रोजगार की तलाश के लिए श्रम करना आवश्यक न होता। किन्तु हम संसार में देखते हैं कि वर्तमान काल में किए हुए कर्मों का फल भी कई बार शीघ्र ही मिल जाता है। जैसे किसी ने विष खा लिया तो विष खाने का परिणाम तुरन्त दृष्टि गोचर होता है और विष का सेवन करने वाला तुरंत ही मर जाता है। यदि वह विष न खाता तो अवश्य जीवित रहता। कई बार समय पर चिकित्सा कर के वमन के द्वारा विष को बाहर भी निकाल दिया जाता है और व्यक्ति बच जाता है। अतः यह निश्चित है कि हम अपने वर्तमान कर्मों के द्वारा एक सीमा तक अपनी आयु को घटा या बढ़ा सकते हैं।

उत्पन्न होने वाले शरीर पर अपने जन्म जन्मान्तरों के संस्कार फिर माता-पिता के संस्कार और बाह्य प्रकृति व

CamScanner से स्कैन किया गया

वातावरण के संस्कार मिलकर त्रिवेणी संगम कराते हैं। जन्म के बाद उस के अपने खान पान व व्यवहार के प्रभाव को लेकर शरीर विकसित होने लगता है। आहार और व्यवहार के गुण दोष से शरीर के गुण दोष बढ़ते व घटते रहते हैं। विकास या ह्रास की प्रक्रिया निरन्तर चलने वाला क्रम है। चाहे सृष्टि में हो, चाहे मानव जीवन में, चाहे मानव समाज में, विकास और ह्रास का सिद्धान्त सर्वत्र एक सा ही दृष्टिगत होता है। वैचारिक और क्रियात्मिक वातावरण की प्रक्रिया अनवरत रूप से मानव समाज को प्रभावित करती रहती है।

जिन पंचभूत तत्वों के मिश्रण से हमारा शरीर बनता है उस में एक निश्चित अवधि तक विकास की प्रक्रिया तीव्र गति से होती है। कभी कभी विशेष स्थिति में शिशु विकासोन्मुख न होकर ह्रासोन्मुख हो जाता है। कभी कभी अविकसित या अर्द्ध विकसित भी रह जाता है। विकसित शरीर को भी रोगों का आक्रमण देखते देखते जर्जर बना देता है और खिलने से पहले भी कलियाँ मुरझा कर अकाल ही में काल कवलित हो जाती हैं।

साधारणतः मानव शिशु का विकास आयु के सोलहवें वर्ष से पच्चीसवें वर्ष तक तीव्रता से पूर्णत्व को प्राप्त कर लेता है। पच्चीस वर्ष से चालीस वर्ष तक यह विकास बहुत धीमी गति से चलता है। चालीस वर्ष के बाद धीरे धीरे ह्रास की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है। विशेष स्थिति में शरीर अड़तालीस

CamScanner से स्कैन किया गया

वर्ष तक भी विकसित होता रहता है और संयमित जीवन से अपनी आयु को दो सौ तीन सौ या चार सौ वर्ष तक भी बढ़ा सकता है।

जो मनुष्य अपनी वृद्धावस्था तक स्वाभाविक रूप से जीवित रहता है वह अन्त में स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त करता है। बहुत से लोग सावधानी से अपने नियमों का पालन कर पूर्ण आयु को प्राप्त कर लेते हैं किन्तु कुछ देहधारी मध्य या अन्त में किसी दुर्घटना या रोग विशेष से ग्रस्त हो कर अकाल मृत्यु की भेंट चढ़ जाते हैं।

अकाल मृत्यु का मूल कारण वर्तमान देह की स्थिति होती है। कभी-कभी इसके कारण माता-पिता भी होते हैं। जो दुर्बल सन्तान को उत्पन्न करते हैं या जन्म के उपरान्त बच्चे के पालन पोषण में उपेक्षा वर्तते हैं। कुछ बच्चे अपने संस्कारों के वशीभूत दुष्कृत्यों में फंस जीवन के प्रतिकूल आचरण करके अकाल मृत्यु को निमंत्रण देते हैं। इस प्रकार मृत्यु के कई कारण हैं जिसमें कभी हम दोषी होते हैं तो कभी हमारे माता-पिता। तो कभी कोई तीसरा व्यक्ति या समूह. घटना विशेष हमारे इस जीवन का अन्त कर देती है। किसी भी कारण से जब देह की व्यवस्था में घोर प्रतिक्रिया पैदा हो जाती है तो इसका प्रभाव हमारे शरीर में स्थित दस प्राणों पर प्रतिकूल पड़ता है। ऐसी प्रतिकूलता में दस प्राणों का संतुलन गड़बड़ा जाता है। किसी आकस्मिक घटना से भी इन प्राणों पर घातक प्रभाव पड़ जाता है। जब कभी दश प्राणों का सन्तुलन विकृत हो जाता है तब यह असंतुलन मानव देह को मृत्यु के निकट

CamScanner से स्कैन किया गया

ले जाता है। इन दस प्रकार की शक्तियों से ही हमारे देह के समस्त क्रिया कलाप चलते हैं। ये दश प्राण हैं- प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय। इनमें पाँच प्राण मुख्य हैं जिन का काम श्वास-प्रश्वास, ऊर्ध्व चेष्टा, नीचे की चेष्टा-सर्वत्र शरीर में रस पहुँचाना, कण्ठस्थ अन्न-पान आदि का खींचा जाना, बल, पराक्रम तथा शरीर में चेष्टा आदि करना है। पाँच उपप्राण इन्हीं की सहायता करते हैं।

हम अपने आहार व्यवहार से जितना प्राणों को बलवान बनायेंगे उतना ही हम दीर्घ जीवन प्राप्त करके मृत्यु से बच सकेंगे। यदि हमारे क्रिया कलाप प्राणों को क्षीण बनाते चले जायेंगे तो हमारा यह देह-दीपक प्राण रूपी तेल के अभाव में अकाल मृत्यु से ग्रस्त हो जायगा इसीलिए हमारे पास आयुर्वेद नामक शास्त्र का प्रणयन किया गया था। आयु को बढ़ाने के उपाय ऋषि मुनियों ने खोज निकाले थे। दीर्घ जीवी सन्तानों को, स्वस्थ नीरोग सन्तानों को जन्म देना माता-पिता का प्रमुख कर्तव्य माना गया है। ब्रह्मचर्य आश्रम के द्वारा जीवन की सुदृढ़ नींव रखी जाती थी। पर समय के साथ-साथ दिशायें बदलने लगती हैं। कभी मनुष्य भटक जाता है फिर कभी ज्ञान के आश्रय से अपने जीवन को समुन्नत करने लगता है। वेद में कहा गया है–

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत

ब्रह्मचर्य और तप के द्वारा दिव्य लोग मृत्यु को परे हटाते रहते हैं। हम अपने खान-पान पर नियंत्रण करके प्राणायाम व व्यायाम के द्वारा इस देह को बलिष्ठ बना सकते हैं। आवश्यकता है ऋषि मुनियों द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चल कर जीवन को सुखी और स्वस्थ बनाने के उपायों को अपनाने की! तभी हम सच्चे अर्थों में सुखी जीवन जी सकते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

पाँचवा दिन

५

पंच कोशमय देह

जीवन और मृत्यु के रहस्य को जानने के इच्छुक मेरे प्यारे भाइयो ! वास्तव में हर मृत्यु हमें एक सन्देश दे जाती है और वह सन्देश है-ओ संसार के लोगो ! इस जीवन का ज्ञान पूर्वक. संयम पूर्वक जीने का प्रयत्न करो। एक न एक दिन सब ने मृत्यु का वरण करना है। एक न एक दिन हमने भी अवश्य मरना है। पर मृत्यु भी ऐसी आए जो कष्ट दायी न हो और जीवन भी ऐसा जिएँ कि मुश्किलें भी आसान बन जाएँ।

वास्तव में मानव देह के पाँच मुख्य केन्द्र या कोश हैं। इन केन्द्र में विविध प्रकार की शक्तियाँ व अनुभूतियाँ छिपी हुई हैं। इन्हीं के माध्यम से जीवात्मा शरीर का सचालन करता है। इन केन्द्रों या कोशों के नाम हैं। [१] अन्नमय कोश [२] प्राणमय कोश [३] मनोमय कोश [४] विज्ञानमय कोश [५] आनन्दमय कोश। इन कोशों से हम अपने समस्त व्यवहारों को सिद्ध कर पाते हैं। अब हम क्रमशः इन कोशों का परिचय प्राप्त करेंगे साथ ही इन्हें पवित्र व स्वस्थ बनाने के उपायों पर विचार करेंगे।

CamScanner से स्कैन किया गया

सब से पहला कोश है अन्नमय कोश- यह हमारे शरीर की त्वचा से लेकर अस्थि अर्थात् हड्डी तक का समुदाय है। यह पृथिवी मय है। मिट्टी से अन्न और अन्न से देह का यह समुदाय बनता है। अपने खान पान को शुद्ध व सात्विक रख कर हम अपने इस कोश को बलिष्ठ बना सकते हैं। अभक्ष्य पदार्थों से दूर हट कर सर्व मान्य पदार्थ जैसे दूध दही. घी. पनीर फल. सूखे मेवे. हरी भाजी. ताजी सब्जियाँ. गेहूँ. चावल आदि का सेवन कर अन्नमय कोश को पवित्र बनाया जा सकता है। अच्छा भोजन हमें अच्छा बनाता है। अतः सब से पहले अन्न-मय कोश पर ध्यान देना आवश्यक है। इस के परिणाम स्वरूप शरीर में स्फूर्ति व तेज की मात्रा बढ जायगी। उत्तम सुखी एवं दीर्घ जीवन के लिए अन्नमय कोश की शुद्धि व शक्ति आवश्यक है। आयुर्वेद में इसके लिए तीन छोटे सूत्र दिए गए हैं। उत्तम. स्वस्थ व सुखी जीवन के इच्छुक मनुष्यों को ये सूत्र याद कर लेने चाहिए। वे तीन सूत्र हैं-हितभुक्. ऋतभुक्. मितभुक्।

अहह ! हमारे ऋषि मुनियों ने हमारे लिए कितने प्यारे सूत्र दिए हैं। इन्हीं सूत्रों को अपना कर हमारे पूर्वज दीर्घायु स्वस्थ व सुन्दर होते थे। क्योंकि उन्होंने जीने के सुनहरे रहस्यों को जान लिया था। हितभुक्-जो हमारे स्वास्थ्य व प्रकृति के अनुकूल हो। हितकारी हो। ऐसे ही पदार्थ हमें खाने चाहिएँ। अच्छे से अच्छा खाद्य पदार्थ भी अपनी प्रकृति के अनुकूल न हो तो उस का सेवन नहीं करना चाहिए। अपनी

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रकृति के अनुकूल हित कारी पदार्थों का सेवन उचित है। मौसम और समय के अनुकूल भक्ष्य पदार्थों का ग्रहण करना चाहिए।

ऋतभुक्-जो खाने योग्य पदार्थ हैं वही खाओ। न खाने योग्य वस्तुओं को चाहे वह आप के स्वास्थ्य के लिए हित कारी प्रतीत हों फिर भी उन्हें मत खाओ। जिह्वा के लाभ में न जाने हम क्या क्या खा जाते हैं। नाना प्रकार के जीव जन्तुओं की हत्या करके हम अपने पेट को कब्रिस्तान बना रहे हैं। अण्डा, माँस, मछली ये सब अभक्ष्य पदार्थ हैं। इन के खाने से शरीर में नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अत: इन्हें सर्वथा त्याग देना चाहिए। जैसा खायेंगे अन्न वैसा वनेगा मन। नाना प्रकार के प्राणियों की हत्या के फल स्वरूप हमें नाना प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। नाना प्रकार की योनियों में जन्म लेकर उन के कष्टों का अनुभव करना पड़ता है। हम अपने लोभ को छिपाने कई प्रकार की दलीलें पेश करते हैं किन्तु किसी भी दलील से हमारा किया हुआ पाप पुण्य नहीं बन जाता। संसार की अदालत में सच को झूठ और झूठ को सच बनाया जा सकता है पर प्रभु की न्याय व्यवस्था में तो दूध का दूध पानी का पानी होता है। उस ने मनुष्य के लिए खाने के पदार्थ विशेष रूप से बनाए हैं। उन में विशिष्ट प्रकार का रस व विशेष लाभ भी भर दिए हैं। बिना अन्न, फल, मेवे और दूध के एक माँसाहारी का जीवन भी नहीं चलता। पर बिना माँस के करोडों का जीवन चलता है। इस से सिद्ध है कि मनुष्य

CamScanner से स्कैन किया गया

जन्म जीव जन्तुओं को मार कर खाने का नहीं है। वह जन्म तो निकृष्ट पशु योनि के लिए है। यदि हम अपना पेट भरने व स्वाद के लिए किसी की जान ले लेते हैं तो वह कार्य पुण्य की श्रेणी में कभी नहीं आ सकता। अभक्ष्य पदार्थो के सेवन से आलस्य. प्रमाद और वासनायें बढ़ती हैं जिस के कारण मानव समाज में कलह घृणा का जन्म होताँ है। पशुओं की तरह मानव समाज भी अवनत होता चला जाता है।

मितभुक्-हर वस्तु को सीमित मात्रा में खाना चाहिए। आवश्यकता से अधिक खाना भी रोगों को निमंत्रण देना है। पेट के थैले को ठूंस कर भरना. दिन भर कुछ न कुछ खाते रहना. फिर पचाने के लिए दवाइयों की या डॉक्टर की शरण लेना बुद्धिमानी का कार्य नहीं है। नाना प्रकार की परेशानियों से बचने का सर्वोत्तम उपाय है कम खाना। समय पर खाना। अच्छे अच्छे पदार्थ खाना। दूसरा कोश है प्राणमय कोश-प्राणमय कोश में दस प्राणों का व्यापार चलता रहता है। जिस प्रकार अन्नमय कोश का मुख्य सम्बन्ध अन्न और जल से है उसी प्रकार प्राणमय कोश का मुख्य सम्बन्ध वायु से है। हमारे फेंफडे और हृदय इस कोश के प्रमुख भाग हैं। अन्नमय कोश का सम्बन्ध लीवर और किडनी से है। नाभि से लेकर कण्ठ तक प्राण मय कोश का विस्तार है। इस कोश की शुद्धि और शक्ति का मुख्य उपाय प्राणायाम है। शुद्ध वायु का सेवन और गहरी साँस लेने के व्यायाम इस कोश को पुष्ट करते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

वन्द कमरों या कुंद घरों में रहना। जहाँ दुर्गन्धित वायु हो वहाँ ठहरने या निवास करने से हमारा प्राणमय कोश विकृत होने लगता है। बहुत से लोग सोते समय घर के दरवाजे व खिडकियाँ बन्द कर लेते हैं या मुख पर ओढ़ना डाल कर सो जाते है। इससे सारी रात एक प्रकार की अशुद्ध वायु का सेवन हम करते हैं जिससे हमारा प्राणमय कोश विकृत होने लगता है। हम नाना प्रकार के श्वास रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं।

हमारे देश में वड़ पीपल और तुलसी की पूजा की जाती थी। इन की पूजा का अर्थ इनके सामने दीप जलाना नहीं है। पूजा का अर्थ है इन की रक्षा करना और इनके निकट रहना। तुलसी के पौधे में अनेक गुण हैं पर सबसे मुख्य गुण हैं कि यह पौधा चौबीसों घण्टे ऑक्सीजन फेंकता रहता है। जबकि अन्य वृक्ष केवल दिन में ही ऑक्सीजन फेंकते हैं। इसलिए हमें अपने आँगन में तुलसी का पौधा अवश्य लगाना चाहिए। प्रसंग वश हम यहाँ यह भी बतला दें कि अंगूर की बेल सदा कार्बन फेंकती रहती है उसे घर के निकट नहीं लगाना चाहिए अन्यथा मनुष्य के फेफडे विकृत होने की संभावना रहती है।

बहुत से मित्र सोचते होंगे कि शोक की इस घडी में दूसरी बातों की अपेक्षा परमात्मा की ही चर्चा होती रहे बस है। पर मनुष्य को जीने का सही तरीका बतलाना हमारी इस कथा का उद्देश्य है। परमात्मा की भक्ति का पहला फल यही है कि भक्त जीना सीखे। रोगी और व्यसनों में ग्रस्त व्यक्ति परमात्मा का भक्त नहीं कहला सकता। भक्ति के लिए

CamScanner से स्कैन किया गया

स्वस्थ रहना जरूरी है। स्व+स्थ का मतलब है हम अपने में स्थिर रहे। शरीर की हर शक्ति अपने अपने स्थान में ठीक तरीके से स्थिर रहे। स्व अर्थात् अपने मे स्थ अर्थात् स्थिर रहना। जब सब शक्तियाँ सब इन्द्रियाँ अपने अपने काम ठीक ढंग से करती हैं तभी हम अपने को स्वस्थ कह सकते हैं।

सिगरेट पीना प्राणमय कोश के लिए घातक सिद्ध होता है। हमारे ऐसे मित्र जो बीडी सिगरेट चुरट आदि का सेवन करते हैं मानो वे अपने प्राणों को अपने हाथ से ही निर्बल बना लेते हैं। सिगरेट पीने वाले न केवल अपने फेफडे खराब करते हैं बल्कि बाहर फेंके हुए धुएँ से सारे वायुमंडल को भी विषैला बना देते हैं। सिगरेट का प्रभाव हमारे प्राणमय कोश को किस प्रकार दूषित करता है इसे समझने के लिए हमें किसी लकडी के चूल्हे वाले रसोई घर में झाँकना होगा। वहाँ की दीवारों की कालिमा देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि सिगरेट पीने वालों के फेफडों की हालत उन काली दीवारों के समान ही हो जाती है। फेफडे कमजोर हो जाते हैं। खाँसी का रोग जब पीछे लग जाता है तो फिर किसी भी दवा से वह जाता नहीं बस जीवन संगिनी बन कर वह खाँसी ही हमारी मृत्यु का कारण बनती है।

इस आदमी को आप क्या कहेंगे जो अपने हाथों से अपने घर को आग लगा दे। यह हमारा शरीर भगवान् का दिया हुआ सब से प्यारा घर है। इस घर को आग मत लगाइए। इस प्रकार जिन जिन व्यवहारों से हमारा प्राणमय कोश बिग-

CamScanner से स्कैन किया गया

डता है वह वह काम हम न करें। प्राणमय कोश के बिगडने से हमारे प्राण दुर्बल बन जाते हैं। आज कल प्रायः लोगों के पेट में गैस बनने की शिकायत प्रचुर मात्रा में बढ़ गई है इसी कारण हृदय रोग से व्यक्ति पीड़ित हो रहे हैं।

ध्यान रखिए - अन्न से हमें अग्नि के रूप में ऊर्जा प्राप्त होती है और इसी ऊर्जा को शास्त्रों में प्राण कहा गया है। इसी प्राण से शरीर में वायु का संचरण होता है। अग्नि की विकृति से वायु की विकृति हो जाती है और व्यक्ति रोग ग्रस्त हो जाता है। वात रोगों का कारण भी प्राणमय कोश की विकृति ही है। अन्नमश कोश की विकृति से प्राणमय कोश की भी विकृति होती है। अतः प्रथम अन्नमय कोश की शुद्धि करनी होगी। तदनन्तर प्राणमय कोश की शुद्धि होगी। 'प्राण' हमारे शरीर में ऊर्जा रूप अग्निमय है। अपान' वायु से संचरित होता है। बायुमय है। 'समान' में अग्नि वायु और जल का मिश्रण है। 'उदान' में अग्नि तत्व और वायु का मिश्रण है और पाँचवा प्राण है 'व्यान' जो आकाश अग्नि. जल. वायु. पृथिवी पाँचो का मिश्रण है। इस प्रकार प्राणमय कोश की शुद्धि से हमारे पाँचों प्राण बलवान होते हैं।

मनोमय कोश - इस कोश में मन के साथ साथ हमारी पाँचों कर्मेन्द्रियों का सम्बन्ध है इन पाँच कर्मेन्द्रियों में पहली वाक् अर्थात् वाणी हमारे बोलने का यन्त्र. दूसरी हाथ तीसरी पैर चौथी पायु अर्थात् मल विसर्जत करने वाला अंग. पाँचवी उपस्थ जिस से मूत्र त्याग करते हैं। ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ ही

CamScanner से स्कैन किया गया

हमारे कार्य व्यापार में सहायक सिद्ध होती है। इनका संचालक हमारा मन है। मन इस श्रम विभाग का अधिपति है। मन के द्वारा ही हम अपने स्वतंत्र अस्तित्व का बोध कर पाते हैं। मैं और मेरा ये भाव आत्मोन्नति के संकल्प में तो सहायक होते हैं किन्तु भौतिक पदार्थों में मैं और मेरे की भावना दुःख का कारण बनती है। यह अहंकार केवल अपने अस्तित्व बोध की सीमा तक आवश्यक है किन्तु आत्मा से पृथक पदार्थों में अहं का भाव शोक को जन्म देने लगता है।

संसार में सुबह से शाम तक प्रतिदिन न जाने कितने लोग मरते हैं पर उन की मृत्यु हमारे लिए साधारण सी घटना बन कर रह जाती है। पर जब यह मेरे की सीमा में आ जाती है तब कितनी भयंकर व दुखदायी हो उठती है। इस का एक मात्र कारण है मैं और मेरे की भावना। जो चला गया क्या वह मेरा था ? मेरा होता तो मुझे त्याग कर क्यों जाता ? मेरा होता तो मुझे भी उसके साथ जाना पड़ता। पर ऐसा नहीं होता क्यों कि वह हमारा नहीं था। हमने अपने अज्ञान व मोह के कारण उसे अपना मान लिया था। यह ममत्व परमात्मा ने इसलिए दिया है कि इस निमित्त से एक माँ अपने बच्चे का पालन पोषण करती है। अपने स्तन का दूध पिलाती है। अपने प्राणों से भी बढ़कर उस बच्चे का ध्यान रखती है। यदि ये मोह और ममता न होती तो माता पिता अपने बच्चों की सेवा क्यों करते ? अपने बच्चों के लिए इतना श्रम और पुरुषार्थ न करते। किन्तु धीरे धीरे माता

CamScanner से स्कैन किया गया

रिता ने इसे अपनी ही दौलत समझ लिया। वे भूल गये कि यह संपत्ति तो मालिक की है, उस भगवान् की है। माना कि माँ ने इसे जन्म दिया पर जन्म से पहले जब शिशु गर्भ में होता है तो उसे यह भी पता नहीं होता कि उस के पेट में लड़का है या लड़की ! फिर भी हम समझ लेते हैं कि ये हमारे बच्चे हैं। ये केवल कर्तव्य करने के हेतु ही हमारे हैं। असल में संसार की सारी संपत्ति व दौलत का मालिक, हम सब का मालिक भी वही परमात्मा है। पर मन के भीतर विकृत हुआ यह अहंकार अपना साम्राज्य धीरे धीरे बहुत बढ़ा लेता है। इसी अहं भाव से संसार में अशान्ति, युद्ध, कलह, राग, द्वेष, ईर्ष्या जन्मती है और स्वर्ग सी धरती पर हाहाकार मच जाता है।

मनोमय कोश की शुद्धि से पूर्व अन्नमय व प्राणमय कोश की शुद्धि अत्यन्त आवश्यक है। बहुत से लोगों को शिकायत रहती है कि परमात्मा की भक्ति में उनका मन नहीं लगता। इस का कारण यही होता है कि उन्होंने अपने कोश को विकृत कर रखा है। उन्हें शुद्ध करके फिर मन की आदतों को सुधार-ने का प्रयत्न करना चाहिए। क्यों कि वर्षों से हम ने इसे आजाद छोड़ रखा है। हमारा मन बिना लगाम का घोड़ा या बिना नकेल का ऊँट बना हुआ है। वर्षों से यह मनमानी करता रहा है। वास्तव में मन हमारा मंत्री है। आत्मा इसका राजा है। पर जैसे कोई कोई मुनीम सेठ पर हावी हो जाता है उसी तरह यह मन रूपी नौकर मालिक पर अधिकार जमाये बैठा है।

CamScanner से स्कैन किया गया

जगाओ इस मालिक को ! यह सो रहा है । चेतो और जागो । अपनी आत्मा को जगाओ ? आँखे खोलो और अपने महत्व को समझो । आज न समझोगे तो बताओ फिर कब और कैसे समझोगे ?

बाल ब्रह्मचारी शंकर ने लिखा है 'जगज्जितं केन' ? संसार को कौन जीत सकता है ? फिर इसका उत्तर देते हुए शंकर कहते हैं 'मनोजितं येन' । जिसने मन को जीत लिया है वही विश्व को जीत सकता है । विश्व विजेता कहला सकता है ।

किन्तु एक मृत्यु भी हमें जगा नहीं पाती । वास्तव में मृत्यु हमें जगाने का एक उपक्रम है । एक घण्टी है. जो बजकर हमें जगाना चाहती है । किन्तु हमारी नींद कुंभकर्ण से भी अधिक गहरी है. बहुत गहरी ? कहते हैं वह छः महीने सोता और छः महीने जागता था । नियम तो यह है कि आठ घण्टे सोयें और सोलह घण्टे काम करें. पर कुंभकरण बारह घंटे सोता और बारह घंटे काम करता था । न जाने हम भी कितना सोते हैं ? नहीं नहीं हम तो भूल गए, हम तो कभी जागे ही नहीं ! आज इस शोक की घडी में हम थोड़ा सा जगने का प्रयत्न भी ईमानदारी से कर लें तो बेड़ा पार हो जायेगा और कहीं जगने का अभिनय मात्र हो तो फिर कुछ हाथ नहीं लगने वाला ।

मनोमय कोश की शुद्धि के लिए हम को फिर से अपना स्वामी बनना होगा । मन को अपना दास बनाना होगा । मन और इन्द्रियों का राजा बनना पडेगा । यदि इस संसार में

CamScanner से स्कैन किया गया

वास्तविक सुख का उपभोग करना चाहते हो तो सदा जागरूक रहो। मन पर अंकुश लगाओ। वाइन की दूकानों में एयर कण्डीशन थियेटरों में और उच्च श्रेणी के आलीशान होटलों की ओर इसे मत भागने दो। याद रखिए-जितना मन को दुःखी रखोगे उतने ही तुमने सुखी रहोगे और मन को जितना सुखी रखोगे उतने ही तुम दुखी रहोगे।

सोए हुए लोगों को जगाने के लिए परमात्मा ने मौत को पहरेदार बनाया है। वह बार-बार हमें सावधान करती है। इसी की आवाज सुनकर जागा था मूल शंकर ! जो आगे चल कर महर्षि दयानन्द बन गया। इसकी आवाज से ही जाग उठा था सिद्धार्थ जो आगे चल कर भगवान् बुद्ध बन गया। ये मृत्यु हमें जागरण का संदेश देती है। जैसे ही हम अपने आत्म तत्व को पहचान कर अपने मन के राजा बन जाते हैं वैसे ही हमारे राज्य में खुशहाली आने लगती है। जीवन एक संग्राम है। मन के गुलाम इससे घबराते हैं और जो मन के मालिक बन जाते हैं वे इन संघर्षों से न डरते हैं न घबराते हैं। हमारे प्यारे परिवार के सदस्यो ! मृत्यु से कभी मत डरो। एक बहादुर की भाँति इस घडी का मुकाबला करो। मरना और जीना कोई नई बात नहीं। जब से दुनिया बनी है तभी से हम मरते और पैदा होते आ रहे हैं और सदा ही हमें मरना और पैदा होना है। तो फिर घबराने की बात क्या है ? जब मन में पवित्रता होती है तब उस में दृढ़ता आ जाती है। हमारी इन्द्रियाँ बुरे कामों से बचने लगती हैं। क्योंकि कर्म में प्रवृत्ति हमारे मन से

CamScanner से स्कैन किया गया

ही होती है। अतः मनोमय कोश की पवित्रता से जीवन पवित्र हो जाता है। चौथा कोश है विज्ञानमय कोश - इस कोश का मुख्य केन्द्र है बुद्धि और चित्त। इन दोनों से हमारे शरीर में स्थित पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ संयुक्त रहती हैं। ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं - आँख, कान, नाक, रसना और त्वचा। इन्हीं पाँचों इन्द्रियों के माध्यम से हम बुद्धि में ज्ञान का संग्रह व विवेचन करते हैं।

सात्विक आहार से तथा प्राणायाम से एवं मन के शिव संकल्पों से हमारी बुद्धि दुराग्रह रहित होकर सत्य ज्ञान में प्रवृत्त होती है। अच्छी बुद्धि हमें कल्याण के मार्ग की और ले जाती है। बुद्धि के पवित्र होने से सुख और अपवित्र होने से दुःखों की सृष्टि होती है। बुद्धि के द्वारा ही हम ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ते हैं। बुद्धि की पवित्रता के कारण हम ज्ञान विज्ञान को लोक कल्याण और मानव हित के कार्यों में प्रयुक्त करते हैं अन्यथा बुद्धि के दोष पूर्ण होने पर हम इसी विज्ञान से स्वयं को और विश्व को विनाश के मुख में ढकेल सकते हैं। हमारी शान्ति और अशान्ति का मूल कारण हमारा विवेक या बुद्धि ही तो है। ध्यान रखिए - संसार में कोई पदार्थ अच्छा या बुरा नहीं है। जब हम पवित्र बुद्धि से किसी भी पदार्थ को हितकारी कार्य में लगाते हैं, तब वह अच्छा कहाता है और जब किसी पदार्थ का हम दुरुपयोग करते हैं तो उसे खराब कह देते हैं। यह अच्छाई, बुराई बुद्धि की होती है। प्रयोक्ता की होती है, पदार्थ की नहीं। उदाहरण के लिए विष को लीजिए। विष के सेवन से आदमी मर जाता है, किन्तु वही विष जब

CamScanner से स्कैन किया गया

जाती है। जिस का विज्ञानमय कोश पवित्र हो जाता है वह काम. क्रोध. लोभ. मोह. भय. शोक. घृणा. ईर्ष्या राग. द्वेष सभी से ऊपर उठ जाता है। ज्ञान के प्रकाश का उदय होते ही ये सब विकार वैसे ही भाग जाते हैं जैसे सूर्य के प्रकाश से खटमल. मच्छर. उल्लू और चिमगादड़ भाग जाते हैं। पाँचवाँ और अन्तिम कोश है आनन्दमय कोश - इसी से हम में प्रीति प्रसन्नता के भाव जगते हैं। वैसे तो शब्द आकाश से. स्पर्श वायु से. रूप अग्नि से. रस जल से और गन्ध भूमि से - प्रकट होते हैं। ये पंच भूत तो स्थूल साधन हैं। जैसे हम कानों से सुनते. त्वचा से स्पर्श का अनुभव करते आँखों से देखते. जिह्वा से रस ग्रहण करते और नासिका से गन्ध सूँघते हैं। किन्तु हम सूक्ष्म रूप से देखी हुई वस्तु को बिना आँखों के भी देखते. बिना कानों के सुनते. बिना जिह्वा से खाए खाने का आनन्द लेते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी में गन्ध गुण परमाणु से ही आया है यही सूक्ष्म स्वरूप कारण प्रकृति कहाती है। जिसका सम्बन्ध आनन्दमय कोश से है। विज्ञानमय कोश की पवित्रता से ही मनुष्य एक दिव्य आनन्द में विचरता है और जब इन कोशों में अपवित्रता आती है तो क्लेश. चिन्ता. शोक, पता नहीं. हम किन किन से घिर जाते हैं। पर जब हमारे पाँचों कोश पवित्र हो जाते हैं तब हमारी स्थिति दिव्य हो जाती है। प्रभु पिता परमेश्वर हम पर ऐसी कृपा करें कि हम अपने इन पाँचों कोशों को पवित्र कर जीवन को दिव्य बनाते हुए इसे आनन्द रस से भर लें।

CamScanner से स्कैन किया गया

छठा दिन

६

—चक्र कौन चलाता है ?

प्यारी माताओ ! बहनों. बेटियो ! और प्यारे भाइयो !

समय की गति बडी तेज है। कितनी तेजी से पाँच दिन बीत गए ओर आज हम छठे दिन फिर बैठे हैं. कुछ सुनने और समझने के लिए। अब यह भी अनुभव कर रहे हैं कि-हमारा शोक अब धीरे धीरे शान्त हो रहा है ! और होना भी चाहिए। अन्यथा फिर इस यज्ञ का और कथा का प्रयोजन ही क्या ?

हमें एक कहानी याद हो आई ! सूरज ढल चुका था और संसार गहन अन्धकार में डूब रहा था। पाँच व्यक्ति अपना काम पूरा कर अपनी ही नाव में बैठकर तहसील से दूर नदी तट पर स्थित अपने गाँव लौट रहे थे। तहसील में उनका काम तो पाँच बजे ही पूरा हो चुका था। पर इन्हें कुछ सामान बेचना था। सामान के भाव अच्छे लग गए. आशा से अधिक लाभ मिल गया तो खुश हो गए। फिर क्या था ? जेब गर्म हो गई तो पहुँच गए कुछ पीने के लिए ! बस उसके नशे

CamScanner से स्कैन किया गया

में वे खो गए। जब कुछ होश आया तो चल पड़े नदी तट पर अपनी नाव की ओर। नाव में बैठ गए और फिर क्या था ? दाण्डी हाथ में थी और चलानी शुरू कर दी। चांदनी रात उसमें फिर नाव की यात्रा। पिए हुए तो थे ही ? बारी बारी से दाण्डी चलाते जाते थे। गाते, आमोद करते, हाथ चलाते जा रहे थे। थोडी देर बाद चाँद भी छिप गया चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा था। गाँव कुछ दिखाई न देता था। देखते देखते उजाला हो गया और जब होश भी ठीक हो गया तो देखा कि-जिस तहसील से चले थे उसी के किनारे आ लगे। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। तभी एक साथी ने देखा कि-ये क्या? नाव की रस्सी तो किनारे हा बँधी पडी है। तब समझ में आया कि-बँधी हुई नाव में बैठ सारी रात दाण्डी चलाते रहे पर वह जहाँ की तहाँ बँधी पडी है।

कहीं हमारे जीवन की नाव की भी यह दशा तो नहीं है? प्रवचन होते भी रहे और हम शोक सागर के ही तट पर बँधे रहें। फिर प्रवचन का कोई मतलब नहीं रह जाता। यह जैसा हमने कहा-हम देख रहे हैं कि-शोक के तट से आपकी नाव धीरे धीरे आगे बढ़ रही है। ऐसा लगता है कि हम सब बहुत समझदार नाविक हैं। पीते तो हम भी हैं पर वह शराब नहीं जिसका नशा सुबह तक उतर जाए। हम तो वह अमृत पीएँगे कि जिसका नशा चढे तो फिर जीवन भर न उतरे। यह सोम रस इन अंगूरी बोतलों में समा नहीं सकता। इसके लिए तो अनोखी बोतल चाहिए। और पीने वाला भी कोई

CamScanner से स्कैन किया गया

अनोखा ही होता है। कौन है यह सोम और कैसा होता है उसका रस ? आइए आज हम इसी पर विचार करें।

आप और हम इस बात को मानते हैं कि-संसार में परमात्मा नाम की एक सर्वोपरि सत्ता है। किन्तु आज विज्ञान के आविष्कारक तथा उनके अनेक सहयोगी ईश्वर के अस्तित्व को ही नहीं मानते। दूसरी ओर हमारे साम्यवादी भाई भी धर्म और ईश्वर की सत्ता को नहीं मानते। इस प्रकार संसार में दो प्रकार की विचार धाराएँ हैं। इसमें एक आस्तिक है और दूसरी नास्तिक। आस्तिक वह है जो ईश्वर को अस्ति अर्थात् है कहता है और दूसरा नास्ति अर्थात् नहीं है ऐसा कहता है।

ये एक बडी विचित्र बात है कि-मृत्यु को हर कोई जानता है। पहचानता है. फिर भी मनुष्य मानता नहीं है। मान ले तो फिर उसे ठगी. चोरी. और सामान जमा करने की. बैंक में अपना बैलेन्स बढ़ाने की आवश्यकता न रहे। मौत को जानते हुए भी हम मानने तैय्यार नहीं कि-हमें भी मरना है। दूसरी ओर हम ईश्वर को मानते हैं पर जानते नहीं। जिस दिन हम मृत्यु को मानने और परमात्मा को जानने लगेंगे बस उसी दिन से धरती पर स्वर्ग छा जाएगा। पर आज के आदमी को परमात्मा को जानने की बात कैसे कहें क्यों कि वह तो मानने ही तैय्यार नहीं है। पर कोई परमात्मा को माने या न माने पर उसकी किसी व्यवस्था को कोई टाल नहीं. सकता।

CamScanner से स्कैन किया गया

नैपोलियन एक पराक्रमी सम्राट् था। उसका एक वैज्ञानिक मित्र था। उस मित्र ने सृष्टि विज्ञान पर एक पुस्तक लिखी और वह पुस्तक उसने नैपोलियन को भेंट की और उस पर नैपोलियन की सम्मति माँगी।

नैपोलियन ने पुस्तक को शुरू से अन्त तक बडे ध्यान से पढ़ा। जब पुस्तक का वैज्ञानिक लेखक उनसे मिलने आया और अपनी पुस्तक पर सम्मति जाननी चाही तो नैपोलियन ने उस पुस्तक की प्रशंसा तो बहुत की किन्तु अन्त में कहा कि-और तो सब कुछ अपकी पुस्तक में प्रशंसनीय है पर एक ही बात अखरने वाली है कि-आपने पुस्तक में कहीं परमात्मा का जिक्र नहीं किया ? इसको सुनकर वैज्ञानिक महोदय ने बडी तत्परता से कहा कि-मुझे इस पुस्तक के लिखते समय कहीं परमात्मा की आवश्यकता नहीं पडी। पड़ती भी कैसे ? जो है ही नहीं उसकी आवश्यकता पड़ने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। नैपोलियन चुप हो गए। कहते भी क्या ?

कुछ काल बीता और एक दिन नैपोलियन को पता चला कि-उसका मित्र जीवन की अन्तिम साँसे गिन रहा है। अपने मित्र की गंभीर हालत का पता चलते ही सम्राट् मित्र से मिलने पहुँचे। मरणासन्न वैज्ञानिक ने सम्राट् से कहा कि-मुझे आप से एक बात कहनी थी यदि वह बात कहनी न होती तो शायद मैं अब तक साँस छोड़ चुका होता। वैज्ञानिक की आँखें डब डबा आयीं और बोला सम्राट् ! आज मैं मरना

CamScanner से स्कैन किया गया

नहीं चाहता पर मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई शक्ति मुझे बलात् मृत्यु के मुख में ढकेल रही है। मेरी उस पुस्तक में आप मेरी ओर से इस शक्ति का जिक्र अवश्य कर दें कि-सारे ज्ञान विज्ञान के बाद मैं अन्तिम समय में इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि-इस ब्रह्माण्ड के ऊपर कोई ऐसी शक्ति है जो इस ब्रह्माण्ड का संचालन करती है।

इसलिए हम कहते हैं कि-कोई माने न माने किन्तु कोई ऐसा व्यक्ति है नहीं जो उसके नियमों को लाँघ सके। इसीलिए कहा है कि-

'विश्वस्य मिषतो वशी'

वह प्रभु स्वाभाविक रूप से ही सारे विश्व को अपने अनुशासन में, वश में रखते हैं। ये ठीक है कि-आज का वैज्ञानिक बहुत आगे बढ़ चुका है। वह उद्‌जन बम बना रहा है। और एक खतरनाक हथियार है नापाम बम! जो केवल चेतन जीव को ही नष्ट करेगा।

दूसरी ओर वैज्ञानिक चन्द्रमा तक जा चुके हैं, मंगल और शुक्र ग्रह पर भी जाने की तैय्यारी में हैं। लाखों मील दूर और लोक लोकान्तरों में भागना कोई मामूली बात नहीं है। हमारे वैज्ञानिक निश्चय ही बहुत आगे बढ़ चुके हैं। उनकी इस प्रगति का माप दण्ड है हमारा पिछला युग, बीता हुआ युग। जब हम बैलगाडी और घोड़ों पर भागते थे। उसके

CamScanner से स्कैन किया गया

मुकाबले तो आज हमने बहुत प्रगति कर ली है। जब तक बैलगाडी और घोडे का मापदण्ड है तभी तक यह हमारी दौड़ प्रशंसनीय और आश्चर्य जनक है। पर जब हम रात्रि में सिर उठा कर ऊपर की ओर देखते हैं तब हमें पता चलता है कि-इन लाखों अरबों खरबों असंख्यात लोकों में से अभी हम केवल चन्द्र पर ही पहुँचे हैं तब पता लगता है कि-समुद्र के तट पर जाकर रेती का एक कण उठाकर कोई समुद्र विजय की घोषणा करे बस हमारी यह प्रगति इतनी ही क्षुद्र और मामूली है।

ओ अभिमान करने वाले वैज्ञानिको! माना कि तुमने बडे बडे हथियार और मशीनरी तैय्यार कर ली है। पर उस प्यारे प्रभु के बनाए पदार्थों को हाथ न लगा कर क्या आप एक छोटी सी सुई भी बना सकते हो? सारा रॉ मटेरियल और फिर साँस लेने से लेकर और संसार के छोटे से छोटे पदार्थ तक सब कुछ उसी का बनाया है। हम तो कुछ नया बना भी नहीं सकते। हम केवल किसी भी पदार्थ का रूप बदल देते हैं और अपनी रचना पर झूठा अभिमान करते हैं। आज तक कोई वैज्ञानिक किसी मूल पदार्थ की संरचना नहीं कर सका और न कर सकता है। इससे ज्ञात होता है कि-आखिर इस छोटे से आदमी की दौड़ कहाँ तक है? जैसे कोई बालक एक माचिस की तिल को जला कर उसकी तुलना सूर्य से करने लगे बस ऐसी ही स्थिति बडे से बडे वैज्ञानिक की है। आज नहीं तो कल वैज्ञानिक इस तथ्य को अवश्य समझेगा।

CamScanner से स्कैन किया गया

संसार की संरचना कोई आकस्मिक घटना नहीं हैं। इस सृष्टि में नीचे से ऊपर तक एक सुव्यवस्था दृष्टिगोचर होती है। अरबों. खरबों. ग्रह उपग्रह तेजी से सौर मंडल में निरन्तर तीव्र गति से घूम रहे हैं. पर आज तक कभी कोई ग्रह दूसरे ग्रह से टकराता नहीं जब कि-मनुष्य की व्यवस्था में प्रतिदिन न जाने कितनी टक्करें व दुर्घटनाएँ होती रहती हैं।

सूरज और चाँद अपने समय पर कार्य कर रहे हैं। वैज्ञानिकों के बनाए विमान समय का उल्लंघन कर लेट हो जाते हैं. पर क्या मजाल है कि-ये सूर्य कभी लेट हो जाए। चन्दा मामा कभी रविवार को छुट्टी मना ले।

सृष्टि के कण कण में एक व्यवस्था है। एक सुनियोजित संयोजन है। याद रखिए जहाँ व्यवस्था होगी वहाँ व्यवस्थापक भी होगा। संयोजक होगा। नियमों को देख कर नियामक की कल्पना करना स्वाभाविक व अनिवार्य है।

हमारा वैज्ञानिक तो परमात्मा को छोड़िए अपने भीतर की आत्मा को भी नहीं मानता। जब कोई मरता है तो उसमें से क्या निकल जाता है? आँखें हैं पर देखती नहीं। कान हैं पर सुनते नहीं। कौन था वह देखने वाला और सुनने वाला। जब वह अभी आत्मा को ही नहीं जान सका तो परमात्मा की बात तो अभी बहुत दूर है।

एक डॉक्टर से हम बात कर रहे थे। वे अपने चिकित्सा के क्षेत्र में शरीर विज्ञान के बारे में बडे ही निपुण व

CamScanner से स्कैन किया गया

कुशल थे। हमने कहा डॉक्टर साहब ! जरा हमें बतलाइए कि-एक व्यक्ति किसी पदार्थ को खाने की बहुत इच्छा करता है और दूसरा उससे घृणा करता है इसका क्या कारण है ?तो वे बोले हमारे शरीर में एक प्रकार के जीवाणु होते हैं वे जिस चीज की माँग करते हैं बस उसी के वशीभूत आदमी उस वस्तु को पसन्द करता है। जब वे जीवाणु किसी चीज को नहीं मांगते तो वह व्यक्ति उस पदार्थ को नापसन्द कर देता है। हमने कहा कि-क्या यह पसन्द और नापसन्द हमारे शरीर के भीतर बैठा आत्मा नहीं करता ?तो वे बोले देखिए-हमारे विज्ञान में आत्मा को माना ही नहीं जाता। ये तो सब प्रकृति का ही खेल है। ये सब प्रकृति की करामात है। तो फिर हम बोले यदि ऐसी ही बात है तो हमें एक बात बतलाइए कि-मान लीजिए हमें मिठाई बहुत पसन्द है और उसमें भी गुलाबजामुन ! वैसे हम इस रोग से सर्वथा मुक्त हैं पर मान लीजिए कि-हमें शुगर की बीमारी हो गई है या हमारा लिवर खराब हो गया है। हमें गुलाब जामुन अच्छा लगता है पर हम उसे नहीं खाते। खाने से रोकने वाला भीतर कौन बैठा है ? कौन रोकता है हमें कि-मत खाओ गुलाब जामुन। जिसके आदेश से हमारे हाथ उसे उठाने भी तैयार नहीं ?तो एक मिनट खामोश हो गए और बोले-हाँ इस बात का कोई जवाब हमारे पास नहीं है। तो मेरे प्यारे मित्रो ? ध्यान देकर सुनो ! आज के विज्ञान की दौड़ तो केवल मिट्टी तक है। परमाणु तक है। वह भी कौन सा परमाणु जिसके टुकडे हो सकते हैं ; किन्तु

CamScanner से स्कैन किया गया

हमारे वैदिक शास्त्रों में कहा है कि-मूल प्रकृति रूप परमाणु तो वह है जिसके टुकडे कल्पना से भी नहीं किए जा सकते ! ऐसे सूक्ष्मतम परमाणु से भी हमारी आत्मा सूक्ष्म है और उस आत्मा से भी परमात्मा सूक्ष्म है।

जिस प्रकार तांबे के तार से हम बिजली को मार नहीं सकते क्योंकि-तार मोटा होता है और विद्युत तरंग सूक्ष्म होती है। वह उसके भीतर से भाग जाती है। वैसे ही हमारी आत्मा इन सब पदार्थों से सूक्ष्म है। वह इन सबके भीतर से बडी सरलता से आ जा सकती है। इन चीजों का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता। और इस आत्मा से भी सूक्ष्म है परम आत्मा। वह परमात्मा जो सबके भीतर सदा व्याप्त है।

जो कुछ जगत नाम से यह ब्रह्माण्ड दिखाई दे रहा है या जो दिखाई नहीं देता है उस सारे ब्रह्माण्ड से परमात्मा और भी अधिक बडे हैं। पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म हैं। कहा है-परमात्मा के एक चौथाई भाग में सारा ब्रह्माण्ड है।

एक सज्जन बोले चलिए ठीक है. हम परमात्मा को मान लेते हैं। पर एक बात बताइए कि-बिना हाथ पांव के भगवान ने दुनिया बनाई कैसे ? जैसे हम दुनिया में देखते हैं कि-किसी भी कार्य के लिए कुछ भी बनाने के लिए हमें हाथ की जरूरत पडती है। छोटी सी चीज के लिए भी. सुई में धागा पिरोने के लिए भी हाथ की आवश्यकता पडती है। तो इतनी बडी दुनिया परमात्मा ने बिना हाथ पैर के कैसे बना दी ?

CamScanner से स्कैन किया गया

पहले हमें इस बात को समझ लेना चाहिए कि-हमें हाथ पैर की आवश्यकता कब पड़ती है ? जब कोई पदार्थ हमारे शरीर से बाहर होता है तभी हमें उसे उठाने के लिए हाथ की आवश्यकता पड़ती है। पर जो हमारे शरीर के भीतर है। हमारे सामर्थ्य में है उसे उठाने के लिए हमें हाथ की आवश्यकता नहीं पड़ती। जैसे आप जब अपने पैर को उठाकर आगे रखते हैं तो क्या पैरों को हाथ से उठाते हैं ? नहीं. पैर अपने आप उठते हैं। गर्दन को घुमाने के लिए या आँख बन्द करने अथवा खोलने के लिए हमें हाथ की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसी तरह यह सारा संसार परमात्मा के भीतर है। प्रभु को इसे गति देने अथवा उठाने आदि के लिए हाथ की आवश्यकता इसीलिए नहीं है। वह अपने सामर्थ्य से ही सब कुछ कर लेता है। ठीक वैसे ही जैसे आप जब चाहें अपनी जबान को हिलाते हैं। हाथ को उठा लेते हैं। पेट व छाती को फुला लेते हैं। शरीर के किसी भी भाग को आप स्वयं भीतर से गति देते हैं ऐसी ही स्थिति उस सर्व शक्तिमान् परमेश्वर की है।

बहुत से लोग कहते हैं कि-यदि परमात्मा है तो आप हमें दिखा दीजिए। जो इस प्रकार का प्रश्न पूछता है आप उससे पूछिए-महाशय जी ! भगवान को तो बाद में देखेंगे पहले आप यह बतलाइए कि-आप भी इस संसार में हैं या नहीं ? हैं तो आप भी तो दिखलाई नहीं देते।

तब वे कहेंगें कि-मैं तो दिखाई देता हूँ। देखिए मैं तो सामने खड़ा हूँ। ये मेरा हाथ है ये मेरा मुख है। ये मेरा पेट

CamScanner से स्कैन किया गया

हैं। ये मेरे पैर हैं। साढे पाँच फीट का यह शरीर क्या आपको दिखाई नहीं दे रहा ?

इस बात को समझने की कोशिश कीजिए कि-हाथ तो अवश्य आपका है पर हाथ तो आप नहीं हैं। पैर आपके हैं पर पैर तो आप नहीं हैं। ये हाथ. पैर ही आपके नहीं हैं बल्कि आपका तो और भी बहुत कुछ है। यह घर भी आपका है. मोटर भी आपकी है। दुकान आपकी है। पर आप तो मोटर. दुकान घर. हाथ या पैर तो नहीं हैं। यह सब जिसका है. उसे आप दिखलाइए। जो असल में आप हैं-वह दिखाई नहीं देते। यह शरीर नहीं हैं। शरीर से कुछ भिन्न कुछ अलग आप हैं। शरीर आप नहीं हैं। शरीर अवश्य आपका है। यदि शरीर ही आप हैं तो फिर जब कोई मर जाता है तो कहते हैं वह अब नहीं रहा जब कि-उसका शरीर घर में धरा है। शरीर धरा रह गया पर शरीर का मालिक चला गया। जब वह आया था तब भी उसे किसी ने नहीं देखा था और जब वह चला गया तब मी उसे कोई देख नहीं पाता। किन्तु गतिशील शरीर को देख कर जैसे हम आपके अस्तित्व को मान लेते हैं। वैसे ही संसार को देखकर उस परमात्मा को भी मानना पडेगा। यह ब्रह्माण्ड उसका शरीर ही तो है। ये सूरज और चाँद उसकी आँखें हैं। ये अंतरिक्ष उसका पेट है। ये धरती उसके पैर के समान है।

इन सब में जो गति है वह उस परमेश्वर की ही तो है। जैसे आपके शरीर की गति के कारण ही आप स्वयं हैं वैसे ही

CamScanner से स्कैन किया गया

ब्रह्माण्ड रूपी शरीर में गति का कारण भी वही परमात्मा है जो अत्यन्त सूक्ष्म रूप से सृष्टि के कण कण में व्याप्त है । जब आपके शरीर को देख कर आपके होने में सन्देह नहीं रह जाता वैसे ही ब्रह्माण्ड को देख कर परमात्मा के प्रति हमें निस्सदेह हो जाना चाहिए । सदा ध्यान रखिए हमारी आँख अग्नि तत्व से बनी है । अग्नि से सूक्ष्म पदार्थ को देखने का सामर्थ्य इन आँखों में नहीं है । संसार में रूप की उत्पत्ति ही अग्नि से होती है । अतः हम उन्हीं वस्तुओं को देख सकते हैं जो अग्नि तत्व से बनी है। जैसे पानी मिट्टी व अग्नि को हम देख सकते हैं । पर इन आँखों से हम वायु को नहीं देख पाते क्यों कि - वायु के बाद ही अग्नि तत्व का निर्माण होता है अग्नि से वायु सूक्ष्म होती है । अतः वायु हमें दिखाई नहीं देती । केवल वायु का अनुभव हम चर्म के स्पर्श से कर लेते हैं और वायु के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं वैसे ही प्रभु की सत्ता भी अनुभव की जा सकती है । देखी नहीं जा सकती । क्यों कि - वे तो हवा से भी कहीं अधिक सूक्ष्मतम हैं ।

वास्तव में परमात्मा का अनुभव हमें हर समय होता है। जब भी हम कुछ करते हैं तो हमें उस कार्य के बारे में अन्तः प्रेरणा मिलती है । जब कभी हम कोई बुरा कार्य करते हैं तब भीतर से भय, शंका व लज्जा का अनुभव होता है और जब अच्छा कार्य करते हैं तो प्रसन्नता, उत्साह, निर्भयता जगती है । इन प्रेरणाओं को भीतर से जो दे रहा है वह परमात्मा ही है । कर्म करने वाला आत्मा है और भीतर से सकारात्मक और

CamScanner से स्कैन किया गया

नकारात्मक प्रेरणा देने वाला प्रभु ही तो है। विवेकी जन ही इसका भली प्रकार अनुभव करते हैं। यह बात तो हुई उनके लिए जो परमात्मा के अस्तित्व को नकारते हैं।

पर जो परमात्मा को मानते हैं वे भी उन्हीं नास्तिकों के बडे भाई हैं। नास्तिक कम से कम परमात्मा को जानने की इच्छा रखता है। वह सत्य को जानना चाहता है। पर ये मानने वाले तो कहीं अधिक अन्धकार में भटक रहे हैं। एक व्यक्ति ऐसा है जो कहता है कि-भारत में दिल्ली नामक कोई शहर नहीं है और दूसरा कहता है कि दिल्ली शहर है अवश्य. और यदि हम कन्या कुमारी से नाव में बैठकर जाएँ तो दिल्ली शहर मिल जाएगा।

आप जरा ध्यान देकर इस बात को समझने की कोशिश कीजिए कि-एक तो दिल्ली को मानता ही नहीं है। दूसरा मानता है पर जानता नहीं है। जो कुछ जानता है वह भी सर्वथा गलत। इन दोनों प्रकार के व्यक्तियों में कोई खास फर्क नही है। दोनों को भी दिल्ली मिल नहीं सकती। किसी बात को मान लेने से कोई फर्क नहीं पड़ता। जब तक उसे जाना न जाए। न जानकर मान लेना अन्ध विश्वास कहाता है।

बहुत से व्यक्ति बडे उदार हृदय वाले होते हैं। उदारता का मतलब पैसे देने में नहीं वा दान करने में नहीं। ये उदार होते है धर्म के बारे में। इनका कहना भी सुनिए। ये कहते हैं –

CamScanner से स्कैन किया गया

देखिए सब रास्ते अन्त में उधर ही जाते हैं जिसकी जैसी भावना है बस वही ठीक है। भावना से सब ठीक हो जाता है।

हमारे प्यारे मित्र की बात कितनी उदारता पूर्ण है। आप कन्या कुमारी से स्टीमर में बैठ कर क्या दिल्ली पहुंच सकते हैं? कभी नहीं। आप को दिल्ली जाना होगा तो आपको दिल्ली की ही ट्रेन में जाना होगा। जब तक आप दिल्ली की गाडी में नहीं बैठेगें दिल्ली पहुँच नहीं सकते। दिल्ली का मार्ग ही दिल्ली पहुँचा सकता है। कन्या कुमारी की ओर जाना अज्ञान में भटकना है।

परमात्मा के लिए भावना की बात तो बडे जोर शोर से कही जाती है। आपके हाथ में हम कोरे कागज के टुकडे थमा कर कह दें कि-आप इसमें नोटों की भावना कर लीजिए। अरे भाई कोरे कागज में कितनी ही नोट की भावना करते रहें वह नोट नहीं माना जाएगा। खोटे सिक्के में अच्छे की भावना कर लेने से वह अच्छा नहीं हो सकता वह तो खोटा का खोटा ही रहेगा।

आज परमात्मा के संबन्ध में जितना पाखण्ड और अज्ञान चल रहा है उतना अन्य किसी भी क्षेत्र में नहीं मिलेगा।

हमारे वणिक् वृत्ति के लोगों ने तो राम नाम के बैंक भी खोल लिए हैं। जितना तमाशा आज भगवान् के नाम पर चल रहा है। सचमुच के सब तमाशों को मिला भी लें तो उतना तमाशा बन न सकेगा।

CamScanner से स्कैन किया गया

भारत के बाजारों में भगवान भी बिकते हैं। एक रुपए के भगवान से लेकर लाखों रुपए मूल्य के भगवान यहां आप खरीद सकते हैं। सारी दुनिया के जेलों में जितने कैदी बन्द पड़े हैं उससे कहीं अधिक भगवान भारत के मन्दिरों में बन्द पड़े हैं। इनके दरवाजे समय पर खुलते हैं और फिर समय पर बन्द हो जाते हैं।

उधर हमारे मुसलमान भाई कहते हैं खुदावन्द ताला और इधर हिन्दुओं का ताला बन्द खुदा।

मुसलमान भाइयों ने और भी कमाल कर रक्खा है- उनके खुदावन्द ताला सातवें आसमान पर बेर के वृक्ष के नीचे डेरा डाले बैठे हैं तो हमारे ईसाई भाइयों के भगवान चौथे आसमान पर विराजित हैं।

इन दुनिया भर के भगवान के भक्तों ने मिलकर भगवान को अपने घर से निकाल कर जितना दूर हो सके भेज दिया है। जिसके भगवान भक्त से जितने दूर हैं बस वह भक्त भी जान लो भगवान से उतनी ही दूर है।

हम एक बार शिवरात्रि के दिन हैदराबाद की बोलारम छावनी के सैनिक क्षेत्र में भाषण देने आमंत्रित किए गए। हजारों सैनिक इस सभा में उपस्थित थे। उनके परिवार के सदस्य भी भारी संख्या में थे। जब हमारा भाषण आरम्भ हुआ तो हमने कहा कि-हम अपने सैनिक भाइयों से जानना चाहेंगे

CamScanner से स्कैन किया गया

कि आपके इस क्षेत्र के कोने पर यह जो भवन दीख रहा है यह क्या है ? वे बोले - जी यह मन्दिर है। फिर हमने पूछा - इस मन्दिर में क्या है ? तो सब ऊँची आवाज में बोले कि - भगवान शिव की मूर्ति है।

हमने कहा आप सब ठीक कह रहे हैं। देखिए, हम यहाँ भाषण दे रहे हैं हमारा नाम है वेदभूषण। अब आप हमारे जैसी एक मूर्ति बना कर रक्खें तो आप उसे कहेगें कि - यह वेदभूषण की मूर्ति है। जो असली है वह तो वेदभूषण है और जो उसकी नकल है वह है मूर्ति।

मन्दिर में शिव की मूर्ति है इससे स्पष्ट होता कि - मन्दिर में असली शिव नहीं हैं। 'डुप्लिकेट' शिव की प्रतिकृति मूर्ति है। आज हम आपको शिव की मूर्ति के बारे में कुछ नहीं बतलाएगें अपितु असली शिव के बारे में बतलाएँगें। इतनी साफ बात भी हमारे भाई समझ न पाएँ तो हम क्या करें ? हमें देश के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने का सौभाग्य मिलता है। हम पूरे भारत के शहरों और गावों में एक गीत सुनते हैं। इस गीत का नाम है 'आरती'। आप भी यहाँ जितने सज्जन बैठे हैं सब 'आरती' गाते होंगें।

एक बार हमारे सनातन धर्मी पंडितों के बीच गोपाष्टमी के अवसर पर हमें जाने का अवसर मिला। जब आरती गाई जाने लगी तो हमने उन सनातन धर्मी ब्राह्मण कहे जाने वालों

CamScanner से स्कैन किया गया

को आरती के बीच में ही रोक दिया और कहा कि-इन पक्तियों को आप दुबारा गाइए-वे पंक्तियाँहैं –

'तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति'

हमने कहा प्यारे भाइयो इस गीत में लिखा है कि-प्रभु अगोचर हैं अर्थात् वे इन्द्रियों से जाने नहीं जा सकते । वे इन्द्रियातीत हैं दृष्टिगोचर नहीं होते । ऐसे अगोचर भगवान की मूर्ति बना उसे गोचर बनाना उचित नहीं । वाणी में कुछ और कर्म में कुछ यह सज्जन का लक्षण नहीं हैं हम बडे प्यार से किन्तु बडी दृढता से कहना चाहेंगे कि-परमात्मा के नाम पर इन तमाशों को बन्द कर दीजिए ।

मेरे नादान मित्रो ! भगवान तो तुम्हारे हृदय रूपी मन्दिर, मस्जिद या चर्च में विराजमान हैं और तुम कस्तूरी मृग के समान उसे बाहर ढूँढते भटक रहे हो । जो हालत कस्तूरी मृग की होतीं है वही गति तुम्हारी भी हो रही है ।

भगवान को भीतर खोजो, वह बाहर नहीं मिलेगा । एक मित्र हमसे कहने लगे-पंडितजी भगवान तो सर्व व्यापक हैं ना? हमने कहा हाँ सर्व व्यापक हैं । तो फिर हमारी मूर्ति में भी तो हैं । हमने कहा अवश्य हैं पर वह तुम्हे मूर्ति में नहीं मिल सकेगें ? उसने पूछा क्यों ? हमने कहा इसलिए कि-मूर्ति में केवल भगवान हैं आप तो मूर्ति में नहीं हो । फिर कैसे होगा मिलन । देवदत्त नागपुर में है और सोमदत्त कानपुर में । कैसे

CamScanner से स्कैन किया गया

मिलेगें जब तक दोनों एक स्थान पर नहीं आजाएँगे । आप अपनी प्यारी देह से निकल कर पत्थर की मूर्ति में जाना पसन्द न करेंगें । फिर जाएगें भी कैसे ? चले भी गए त उसमें तो एक भी इन्द्रिय नहीं है पत्थर में या मूर्ति में ।

इसलिए परमात्मा से मिलने का सच्चा स्थान है मनुष्य का अपना हृदय । जहाँ तुम भी हो और वह प्रभु भी है ।

हृदय को जितना सत्य ज्ञान व सत्य आचरण. सत्य विचारों से पवित्र कर लोगे उतने ही उसके निकट पहुँचते चले जाओगे । प्रभु 'भर्गः' है अर्थात् शुद्ध स्वरूप हैं भर्गः और हम। क्या कहने-काम. क्रोध. लोभ. मोह. भय. शोक. घृणा. राग. द्वेष. अहंकार आदि पता नहीं कितनी बुराइयों से घिरे बैठे हैं । बस कौन करे अपने को पवित्र ? मन्दिर में जाकर नारियल फोड़कर चार आने का भोग चढ़ा दो और फिर सुबह से शाम-तक जो मर्जी करो तो फिर हमें कैसे मिलेगें भगवान ? हमने कभी सोचा है ?

इसी का परिणाम है दुख. कष्ट. मुसीबत ! हमारा उद्देश्य कभी भी यह नहीं है कि-हम किसी को चिढ़ाएँ या किसी की भावना को ठेस पहुँचाएँ । किन्तु सत्य बात प्रकट करना बहुत आवश्यक है ।

मूर्ति पूजा के बारे में बहुत से सज्जन कहते सुने जाते हैं कि-ध्यान को जमाने के लिए. मन की एकाग्रता के लिए

CamScanner से स्कैन किया गया

अथवा अभ्यास करने के लिए किसी न किसी वस्तु की आवश्यकता तो पडेगी ही ? इसीलिए हम मूर्ति में ध्यान सरलता से लगा सकते हैं ।

मेरे प्यारे बन्धु ! परमात्मा चर्म चक्षुओं से कभी भी दिखाई दे नहीं सकते । इनका तो केवल मात्र अनुभवन होता है । इस अनुभवन के लिए ध्यान आवश्यक है । महर्षि पतंजली कहते हैं कि –"ध्यानं निर्विषयं मनः' ध्यान का अर्थ है कि - मन को इन्द्रियों के विषय से पृथक् कर देना । किसी बाह्य पदार्थ पर मन को स्थित करने से मन बाहर विषयों में ही लग जाएगा । अतः मन को भीतर की ओर लगाने का अभ्यास कीजिए । बाह्य पदार्थों पर ध्यान एकाग्र करने से प्रभु का अनुभवन संभव न होगा । मन को भीतर की ओर एकाग्र कीजिए । अन्तर्मुखी बन जाइए । इन्द्रियों के समस्त व्यापार बन्द कर दीजिए । शरीर को भी स्थिर कर दीजिए । चेष्टा रहित - निश्चेष्ट हो जाइए । मन को एकाग्र करने का सर्वोत्तम उपाय है - हृदय के पास कण्ठ से नीचे पेट से ऊपर दोनों स्तनों के मध्य में जो गर्त्त है उस हृच्चक्र में परमात्मा को खोजना ही उपासना की श्रेष्ठ पद्धति है । साथ ही हृदय से ओ३म् का मौन जाप किया जाए । ओ३म् का जाप मन या मस्तिष्क में न कर हृदय में आत्मा से किया जाए । इससे मन शीघ्र एकाग्र हो जाता है । कुछ लोग इस प्रकार करके प्रकाश की कल्पना करते हैं । विभिन्न प्रकार के प्रकाश दीखते भी हैं पर ये प्रकाश तो हमारे शरीर में स्थित अष्ट चक्रों के प्रकाश हैं । परमात्मा का प्रकाश

CamScanner से स्कैन किया गया

इन प्रकाशों के तुल्य नहीं है। वह तो सूक्ष्मातिसूक्ष्म है। जैसे ज्ञान का प्रकाश। ज्ञान ही प्रकाश कहाता है। बोध भी इसे ही कहते हैं। स्मरण रखिए परमात्मा हृदय में हृदय से ही मिलेंगे अतः दिल से, दिल में प्रभु का स्मरण, या प्रभु का ध्यान श्रेयस्कर है।

मूर्ति या फिर बाहर कहीं भी ध्यान केन्द्रित करना उपासना का विषय नहीं है। हमें सदा सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में तत्पर रहना चाहिए। अतः किसी भी बात को समझने के लिए आग्रह रहित होकर सोचना ही श्रेयस्कर है। सही बात तो यह है कि-हिन्दू समाज में मूर्ति ने ही भेद पैदा कर रक्खें हैं। कोई शिव की मूर्ति बनाता है, कोई विष्णु की, कोई माता की, कोई बालाजी की। बस पूछिए नहीं ? इस मूर्ति पूजा ने इस तथाकथित हिन्दू जाति को खण्डित कर रक्खा है।

बहुत से साथी खण्डन मत कीजिए ऐसा उपदेश भी देते हैं। यदि इस सिद्धान्त को मानलें तो सारी दुनिया अज्ञान के अन्धेरे में डूब जाएगी। एक अध्यापक हैं जो गणित पढ़ाते हैं। उन्होने बच्चों से पूछा कि-बताओ दो और-तीन मिलकर कितने होते हैं ? अब कोई कहे कि-दो और तीन सात होते हैं या कोई बोले छः होते हैं। अब अध्यापक इन्हें गलत न कहें तो ये सब तो अज्ञान में फँस जाएँगें। हर ज्ञानी पुरुष का कर्त्तव्य है कि-वह सत्य बात का मण्डन और असत्य का खण्डन करे। किन्तु खण्डन का उद्देश्य चिढ़ाना, अपमानित करना या मजाक उड़ाना न हो किन्तु अत्यन्त हित भाव से सत्य का बोध कराना हो।

CamScanner से स्कैन किया गया

सदा स्मरण रखिए कि-परमात्मा की प्राप्ति का पहला साधन है-सत्य ज्ञान। सत्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए हमें सदा सत्य व बुद्धि को प्रभावित व प्रेरित करने वाले ग्रन्थों का निरन्तर स्वाध्याय करना चाहिए।

आज का आदमी केवल मात्र चाहता हैं कि-बस मैं अधिक से अधिक पैसा कमा लूँ। प्रातः उठते ही पैसों कीं चिन्ता और रात में सोने तक भी दिमाग में पैसा ही पैसा घूमता है। एक लाला जी ने अपनी ओढी हुई चादर ही नींद में फाड़ डाली। कपडे के फटने की आवाज से घर वाले भी जाग गए और चादर के फटते ही लाला जी की भी नींद खुल गई। घर वालों के पूछने पर कि-आपने चादर क्यों फाड़ ड़ाली ? तो लाला जी बोले कि-सपने में ग्राहक आ गया और कपडे का मोल तोल हो गया। तब मैंने कपड़ा फाड़ा। मुझे पता ही न चल सका कि-मैं स्वप्न देख रहा हूँ। लाला जी की कपडे की दुकान थी। यह हालत है आज के आदमी की। वह स्वप्न में भी व्यापार में ही लगा रहता है। पैसा कमाने में ही इतना पागल हो जाता है कि-वह खाना पीना और जीवन के दूसरे सब कामों को भी भूल जाता है। कबीर नें ठीक ही लिखा है-

माखी गुड़ में गडी रही. पंख लिए लिपटाए।
हाथ मले और सिर धुने. लालच बुरी बलाय।

इसलिए हमें केवल कमाने की ही चिन्ता छोड़ कुछ समय प्रभु भक्ति व प्रभु के सत्य स्वरूप को जानने. स्वाध्याय व सत्संग में भी लगाना चाहिए।

CamScanner से स्कैन किया गया

हम अपने उन साथियों से क्षमा चाहेंगे जिन्हें हमारी यह बात पसन्द न हो ! क्योंकि हमारा उद्देश्य किसी का विरोध करना नहीं है । बहुत से लोग यह भी कहते हैं कि-परमात्मा सब कुछ कर सकता है चाहे सो कर सकता है। यह बात भी भ्रान्तिपूर्ण है।

इस विशाल ब्रह्माण्ड के प्रभु ही नियामक हैं। जो दूसरों को नियम में चलाना चाहता है उसे पहले नियम में चलना होता है। प्रभु अपने नियमो में स्वयं बँधे हुए हैं। इसलिए वे सब कुछ नहीं कर सकते।

क्या परमात्मा ऐसा बड़ा पत्थर बना सकता है जो स्वयं परमात्मा से ही न उठे ? वे कभी नहीं बना सकते। जो करने योग्य काम नहीं हैं वे कभी नहीं कर सकते। कोई कहे कि-क्या परमात्मा कोई अपने जैसा दूसरा परमात्मा बना सकते हैं ? उत्तर होगा कभी नहीं।

अतः परमात्मा के सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान होने का अभिप्राय यह है कि-दुनिया में शक्ति व सामर्थ्य में वे सर्वोपरी हैं। किसी भी कार्य के करने में उन्हें किसी दूसरे की अपेक्षा नहीं पड़ती। वे करने योग्य कार्य ही कर सकते हैं न करने योग्य नहीं कर सकते। इसीलिए वे सर्व शक्तिमान् कहाते हैं। जानने योग्य बातों को ही वे जानते हैं। वे कभी अवतार भी नहीं लेते और न ले सकते हैं। अवतार का अर्थ है उतरना। जो सब जगह पहले से ही सदा मौजूद है उसका उतरना. आना.

CamScanner से स्कैन किया गया

या जाना संभव नहीं। इसीलिए हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए कि-हम परमात्मा के बारे में सत्य सत्य जानें।

स्मरण रखिए-परमात्मा ही एक मात्र हमारे आधार हैं। उन्हें प्राप्त करना ही मनुष्य जीवन का अन्तिम ध्येय है। परमात्मा ने हमें पैदा ही इसीलिए किया है कि-संसार को देख कर हम इसके बनाने वाले को जानें। जब तक हम जान नहीं लेंगे तब तक हमें इसी प्रकार जन्म जन्मान्तरों में भटकना होगा। इसी प्रकार जीवन और मरण के चक्र में घूमना होगा।

अतः बुद्धिमत्ता इसी में है कि-हम इसी अनमोल मानव जीवन में परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

जिस प्रकार दीपक की लौ सूर्य से आकृष्ट होती है। नदी जिस प्रकार सागर में मिलना चाहती है वैसे ही आत्मा का अन्तिम आधार भी परमात्मा ही है।

अतः जीवन के इस उद्देश्य को समझिए। खाओ. पियो. मौज करो. यह जीवन का उद्देश्य नहीं है। यह तो पशु. पक्षी भी करते हैं। हमारा उद्देश्य है एक मात्र परमात्मा को प्राप्त करना क्यों कि-वे आनन्द घन है। आनन्द को पा लेना ही प्रत्येक मनुष्य की. प्राणी की. स्वाभाविक इच्छा होती है। इसी आनन्द को पाने के लिए हम छट पटाते हैं या हाथ पैर पटकते हैं। हर कार्य के पीछे हमारा उद्देश्य आनन्द की प्राप्ति ही होता है। जो इस रहस्य को जानते हैं कि-परमात्मा के ही पास हमें

CamScanner से स्कैन किया गया

आनन्द मिल सकता है वे अपने को उस प्रभु के निकट ले जाने के लिए प्रभु के गुण. कर्म. स्वभाव को धारण करने लगते हैं। उन्हीं का जीवन सफल है। बस जो खोजेगा वही पाएगा। अतः परमात्मा के सत्य स्वरूप को जानकर जो सत्य मार्ग पर चलेगा वह व्यक्ति ही उसे अन्त में पा सकता है। आओ ! हम सब इस दिशा में ईमानदारी से प्रयत्न करें। वेदों में स्पष्ट रूप से परमात्मा का स्वरूप इस प्रकार वर्णित है।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्.
तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्थाः विद्यतेऽयनाय।

यजुर्वेद अ. ३१ मंत्र. १८

सहस्र शीर्ष आदि विशेषण युक्त वह पुरुष सर्वत्र परिपूर्ण है। सब मनुष्यों को उचित है कि उस परमात्मा को अवश्य जानें। वह कैसा है ? 'महान्तम्' बड़ों से भी बड़ा. उससे बड़ा वा तुल्य कोई नहीं है। 'आदित्य वर्णम्' आदित्यादि का रचक और प्रकाशक वही एक परमात्मा है तथा वह सदा प्रकाश स्वरूप ही है। 'तमसः परस्तात्' 'तम' जो अन्धकार. अविद्यादि दोष रहित करने वाला परमात्मा है। विद्वानों का ऐसा निश्चय है कि पर ब्रह्म के ज्ञान और उस की कृपा के बिना कोई जीव कभी सुखी नहीं होता। उस परमात्मा को जान के ही जीव मृत्यु को पार कर सकता है अन्यथा नहीं। क्यों कि बिना परमेश्वर की भक्ति और उस के ज्ञान के मुक्ति का मार्ग कोई नहीं है ऐसी परमात्मा की दृढ़ आज्ञा है। सब मनुष्यों को ऐसा ही वर्तना चाहिए और सब पाखण्ड और भ्रमजाल को अवश्य छोड़ देना चाहिए।

CamScanner से स्कैन किया गया

७

-तीन. जो सदा रहते हैं।

कल हमने बतलाया था कि-परमात्मा को पा लेना ही हमारे जीवन का उद्देश्य है। प्रश्न उठता है कि-क्या इस संसार में केवल परमात्मा ही है या और भी कुछ है?

हमने पहले ही बतलाया है कि-संसार में बहुत से लोग हैं जो भगवान को ही नहीं मानते। पर दूसरी ओर हिन्दू फिलॉसफी के बडे बडे विद्वान् कहते हैं कि संसार में परमात्मा के सिवाय कुछ है ही नहीं।

संसार में इन दोनों का झगड़ा सदा से चलता रहा है। एक कहता है भगवान है ही नहीं. तो दूसरा कहता है भगवान ही है और कुछ भी नहीं है।

जब परमात्मा के सिवाय कुछ भी नहीं है तो फिर आप. हम और ये दिखाई पड़ने वाली दुनिया. ये सब क्या है? वे कहते हैं कि-ये सब माया है। भ्रम जाल है। ये सब मिथ्या है। हम भी परमात्मा के अंश हैं। 'अहं ब्रह्मास्मि' में भी ब्रह्म का.

CamScanner से स्कैन किया गया

परमात्मा का ही अंश हूँ। अन्त में हम 'सब जैसे समुद्र से पानी उठकर बादल बन जाता है और-फिर वह पानी की बूंद बन कर समुद्र में मिल जाता है' वैसे ही हम सब परमात्मा से ही बने और अन्त में उसी में मिल जाएँगे। दूसरी ओर ठीक इससे उलटी बात है कि-भगवान कुछ नहीं है। प्रकृति ही सब कुछ है। हम मिट्टी के बने हैं और अन्त में मिट्टी में मिल जाते हैं।

हमारे मुसलमान भाई भी हिन्दुओं के भाई हैं। वे भी केवल खुदा को मानते हैं। वे कहते हैं पहले केवल खुदा था और कुछ न था। चारों ओर अन्धेरा था। खुदा ने हुक्म दिया 'कुन' बस जैसे ही खुदा ने 'कुन' कहा और उजाला हो गया। चारों ओर प्रकाश फैल गया। फिर खुदा ने आदम को बनाया इसी आदम से आदमी पैदा हुए। इस प्रकार मुसलमान भी केवल खुदा को ही मानते हैं और जो कुछ बना है वह खुदा से ही बना है ऐसा कहते हैं।

अब यदि हम अपने मुसलमान भाइयों से पूछें कि-खुदा ने 'कुन' कहकर हुक्म दिया। जब खुदा के सिवाय कुछ भी था ही नहीं तो खुदा ने किसे हुक्म दिया। किससे कहा-'कुन'! उजाला हो जा और उजाला हो गया। इस बात का कोई जवाब हमारे मुसलमान भाइयों के पास नहीं है।

दूसरी ओर हमारे पौराणिक भाई वेदान्ती जी कह रहे हैं-अहं ब्रह्मास्मि। संसार के लोगो! हम सब ब्रह्म हैं। इनसे पूछिए कि-जब आप भी ब्रह्म है और मैं भी ब्रह्म हूँ, फिर ये

CamScanner से स्कैन किया गया

उपदेश आप किसे दे रहे हैं ? क्या ब्रह्म को ही ब्रह्म उपदेश करता है ? अब आप और मैं ब्रह्म होने से एक समान हैं तो फिर ये उपदेश किसके लिए है ? आप हम दोनों ही ब्रह्म जो ठहरे । इसका कोई उत्तर इन ब्रह्म वादियों या वेदान्तियों के पास नहीं है । हमें अब विचार करना होगा कि-फिर सत्य क्या है ? आइए इस पर हम विचार करें ।

वास्तव में ये संसार सबसे बडी पुस्तक है । ये संसार न होता तो फिर हमें चाहे प्रभु चारों वेदों का ज्ञान दे देते पर वह सब बेकार हो जाता । हम वेदों को समझ ही कैसे सकते हैं बिना दुनिया के । इसलिए परमात्मा को जानने के लिए जितनी वेदों की आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता इस संसार की भी है । संसार को देखकर ही हम परमात्मा के गुण कर्म. स्वभाव व सामर्थ्य को जान सकते हैं । साथ ही संसार के नियम व क्रम को देख हम सभी सत्य नियमों को प्रत्यक्ष भी कर लेते हैं । संसार सत्य को परखने की सर्वोत्तम प्रत्यक्ष कसौटी है । प्रत्यक्ष के नियमों से हम अप्रत्यक्ष नियमों को भी सरलता से जान लेते हैं ।

सत्य की खोज के लिए. सत्य को जानने व पहचानने के लिए संसार सबसे महत्वपूर्ण कसौटी है । आइए इसी कसौटी पर हम संसार के सत्य स्वरूप को जानने का प्रयत्न करें ।

इस संसार में हम देखते हैं कि-किसी भी कार्य के संचालन में या व्यवहार में हमें तीन प्रकार के पदार्थों की या कारणों की

CamScanner से स्कैन किया गया

आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए एक विद्यालय को लीजिए। विद्यालय में हम देखते हैं कि विद्यालय के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है। एक अध्यापक. दूसरे विद्यार्थी और तीसरी विद्या। इन तीनों में से आप किसी भी एक को हटा दीजिए तब आप देखेंगे कि - विद्यालय चल नहीं सकता। अध्यापक न हो तो विद्यालय नहीं चलेगा और केवल अध्यापक हों और विद्यार्थी न हों तो भी विद्यालय नहीं चल सकता और दोनों भी हों और विद्या न हो. पढ़ाई न हो तो भी विद्यालय नहीं चल सकेगा।

यही बात दुकान के लिए भी है। एक विक्रेता. दुकानदार दूसरा ग्राहक. और तीसरा सामान या वस्तुएँ। बिना विक्रेता या माल के भी दुकान दुकान नहीं कहला सकती। ग्राहक ही न हो तो लेने वाला भी न हो तो भी व्यापार नहीं चल सकता। और वस्तु या माल न हो तो भी दुकान नहीं चल सकती।

इससे सिद्ध होता है कि-प्रत्येक कार्य के तीन कारण होते हैं। एक निमित्त कारण। किसी भी कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। बिना कारण के कार्य नहीं हो सकता। कारणाभावात् कार्याभाव:। कारण के अभाव से कार्य का भी अभाव हो जाता है। किसी भी कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। साथ ही प्रत्येक कार्य का कर्त्ता भी अवश्य होता है। बिना कर्ता के कार्य नहीं होता। कर्ता उसे कहते हैं जिसके निमित्त से कार्य हो या जिसके करने से कार्य हो वह कर्ता।

CamScanner से स्कैन किया गया

उसका संचालक। इससे पता चलता है कि प्रत्येक कार्य के लिए एक कर्त्ता आवश्यक है जो उस कार्य का निमित्त कहाता है। दूसरा किसी भी कार्य का एक उपादान कारण होता है। जिससे कार्य होता है या किसी भी वस्तु या कार्य का मूल पदार्थ। जैसे कुम्हार घड़ा बनाता है। घडे का बनाने वाला घडे का कर्त्ता है कुम्हार ! पर जिससे घड़ा बनाया जाता है उसे हम उपादान कारण कहेंगे। जैसे घड़ा मिट्टी से बनता है तो मिट्टी घडे का उपादान कारण है। तीसरा कारण है साधारण कारण जैसे घड़ा बनाने का चक्र या पहिया और जो घडे का प्रयोग करेगा वह ग्राहक !

ठीक यही बात संसार के इस प्रत्यक्ष नियम से संसार पर भी घटेगी। एक तो इस संसार को बनाने वाला होगा। इस संसार को जो भी बनाता है. उस बनाने वाली सत्ता को हम सृष्टि कर्ता कहेंगे। यह सृष्टि कर्ता भगवान् इस संसार का निमित्त कारण है। दूसरे संसार की प्रत्येक वस्तु परमाणु विशेष से बनती है। इस अखण्डनीय परमाणु का जो लघुत्तम अंश है वह प्रकृति कहाती है। प्रकृति सृष्टि का उपादान कारण है। किसी भी कार्य का कर्ता अर्थात् जिसके बनाने से कुछ बने और न बनाने से न बने ऐसा जो कर्ता है वह निमित्त कारण और जिस पदार्थ से जो बने या जिससे कोई वस्तु बनती है वह उसका उपादान कारण कहाता है। परमात्मा इस सृष्टि का निमित्त कारण है और प्रकृति उपादान कारण है। इस प्रकृति का उपभोग आत्मा करती है. जो इसका

CamScanner से स्कैन किया गया

साधारण कारण है । आत्मा के उपभोग के लिए ही प्रभु ने इस सृष्टि को रचा है । ये तीन वस्तुएँ है जिससे इस सृष्टि का व्यवहार हो रहा है ।

यदि परमात्मा अपने से ही संसार रचता तो सृष्टि के कण कण में परमात्मा के गुण आ जाते क्योंकि-जिस मूल वस्तु से कोई वस्तु बनती है उस मूल धातु या वस्तु के गुण भी बनाई गई वस्तु या पदार्थ में अवश्य ही आ जाते हैं ।

उदाहरण के लिए बताशा शक्कर से बनाया जाता है । अतः शक्कर का माधुर्य गुण बताशे में भी होता है । यह सृष्टि का प्रत्यक्ष नियम है । जैसा कि आधुनिक या नवीन वेदान्ती कहते हैं कि-यह सब पदार्थ ब्रह्म से बने हैं तो ब्रह्म चेतन है । ब्रह्म ज्ञानी है. ब्रह्म सर्व व्यापक है । किन्तु न तो प्रकृति चेतन है प्रकृति तो जड़ है । वह चेतन नहीं तो सर्वज्ञता का होना भी असंभव है । यदि आत्मा का निर्माण परमात्मा के अंश से माना जाएगा तो भी हम देखते हैं कि-आत्मा अज्ञानी होती है । आत्मा एक देशी है और आत्मा सुख-दुःख. कर्म विपाक से युक्त होती है । जब कि परमात्मा क्लेशादि दुःख और कर्म बन्धन से सर्वथा विमुक्त है । यह आत्मा एक देशी है जब कि-परमात्मा सर्व व्यापक है । यदि परमात्मा के अंश से कुछ बने तो परमात्मा खण्डित व विकारयुक्त हो जाएगा । जब कि-प्रभु निर्विकार. अखण्ड हैं । इस प्रकार हमें इन तीन सत्ताओं के अस्तित्व को स्वीकार करना होगा । ये तीनों पदार्थ संसार में विचारने से स्पष्टतः प्रतिभासित होते हैं ।

CamScanner से स्कैन किया गया

दूसरी ओर जड़ प्रकृति का स्वयं बनना और स्वयं बिगड़ना संभव नहीं। प्रकृति जड़ होने के कारण ज्ञान रहित है। जब कि-सृष्टि क्रम के संचालन में पग पग पर दृष्टि गोचर होता है कि सारा विश्व ज्ञान पूर्वक निर्मित है। सारी व्यवस्था किसी महान् ज्ञानी की है।

आधुनिक विज्ञान का भी एक सिद्धान्त सर्व मान्य है कि संसार में जो वस्तु नहीं है वह पैदा नहीं हो सकती और जो वस्तु है वह नष्ट नहीं हो सकती। इस सिद्धान्त के आधार पर भी हमें स्वीकार करना होगा कि-संसार में ये तीन पदार्थ ईश्वर जीव. प्रकृति का कभी न तो अभाव होगा और न ये कभी नष्ट होगें। अतः यह तीनों वस्तुएँ सदा अनादि. अजन्मा और अमर हैं। इसमें जो प्रकृति है वह रूपान्तरित होती है। आत्मा भी कभी स्वरूप नहीं बदलती है। हाँ उसके संस्कार व गुण बढ़ते घटते हैं जिसका मुख्य आधार ज्ञान. कर्म. व उपासना है। प्रकृति सदा बनती बिगड़ती है अर्थात् अपना रूप बदलती रहती हैं।

अतः हमें यह बात भली भान्ति समझ लेनी चाहिए कि-यह संसार तीन अनादि तत्वों से. पदार्थों से बना है। एक ईश्वर दूसरा जीव. तीसरी प्रकृति। इन तीनों के स्वरूप को जानने के लिए हमें एक शब्द याद रखना चाहिए। वह शब्द है सच्चिदानन्द। सच्चिदानन्द शब्द तीन शब्दों के मेल से बनता है। एक सत् दूसरा चित् और तीसरा आनन्द। इसमें सत् शब्द का अर्थ जानना जरूरी है। हमारे पौराणिक विद्वानों ने

CamScanner से स्कैन किया गया

जगत् को मिथ्या कहा है। किसी की मृत्यु के उपरान्त लोग शव यात्रा के साथ एक वाक्य दोहराते हैं कि - राम नाम सत्य है। पर वे यह नहीं जानते कि - संसार में जो कुछ भी है वह सब सत्य है। सत् शब्द का अर्थ है अस्तीति - सत्। जो पदार्थ है वह सत् है वह हमेशा ही रहेगा। यह प्रकृति भी सत् है क्योंकि प्रकृति भी हमेशा रहेगी। संसार में जो कुछ भी पदार्थ हैं वे कभी नष्ट नहीं होते। केवल उनका रूप बदल जाता है। ये शरीर मिट्टी से बनता है। मर कर फिर मिट्टी में मिल जाता है। केवल उसका रूप बदल जाता है. पर प्रकृति कभी नष्ट नहीं होती है। इस प्रकार ईश्वर. जीव और प्रकृति ये तीनों भी सत् है। ये हमेशा रहेंगें। कभी नष्ट नहीं होगें। इसलिए ये तीनों भी सत् हैं।

दूसरा शब्द है चित्। चित् शब्द का अर्थ है जानदार. चेतन। यह प्रकृति सत् है पर यह चित चेतन या जानदार नहीं है। यह जड़ है। चेतना रहित है। ईश्वर और जीव ये सत् भी हैं और चित् भी। जीव अर्थात् हमारी आत्मा चेतनशील है।

तीसरा शब्द है आनन्द। जीव में. आत्मा में आनन्द का अभाव है। इसीलिए हम सदा आनन्द प्राप्त करने की इच्छा करते हैं। हर प्राणी निरन्तर आनन्द प्राप्त करने के लिए ही प्रयत्नशील रहता है। इसके पास आनन्द नहीं है तभी तो यह आनन्द को प्राप्त करना चाहता है।

दुनिया के इस रूप को हमें भली प्रकार समझ लेना चाहिए। ईश्वर जीव और प्रकृति ये तीनों सत् हैं। ईश्वर

CamScanner से स्कैन किया गया

और जीव ये दोनों सत् और चित् हैं और ईश्वर सत् चित् और आनन्द स्वरूप है।

चूँकि हमारे पास आनन्द नहीं है। अत: हम आनन्द की प्राप्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं। आनन्द की प्राप्ति के लिए ही हमें परमात्मा की उपासना करनी पड़ती है। क्यों कि प्रभु के पास ही आनन्द है।

यहाँ एक बात और भी समझ लेनी चाहिए कि – प्राय: हम सुख और आनन्द को एक ही मान बैठते हैं। पर सुख और आनन्द में अन्तर है। सुख हमें प्रकृति से मिलता है और इसका अनुभव हम अपने शरीर द्वारा करते हैं। सु शव्द का अर्थ है अच्छा और ख शव्द का अर्थ है इन्द्रियाँ। हमारी इन्द्रियों को जिससे आराम मिलता है. हर्ष का अनुभव होता है वह सुख कहाता है।

सुन्दर रूप को देखकर, दृश्य को देख कर, आँखों को सुख मिलता है। अच्छा मीठा स्वर सुनकर कानों को सुख मिलता है। उत्तम सुगन्ध आने पर नाक को अच्छी अनुभूति होती है। गुलाव जामुन खाने से जिह्वा को मजा आता है. सुख मिलता है। बढ़िया मुलायम गद्दी पर सोने से या अपने अत्यन्त निकट व्यक्ति के स्पर्श से. त्वचा को सुख का अनुभव होता है। इस प्रकार के जितने भी सुख हैं ये सुख शरीर की इन्द्रियों से ग्रहण कर हमारी आत्मा अनुभव करती है। किन्तु परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की सूचना या लॉटरी

CamScanner से स्कैन किया गया

में इनाम मिलने की खबर पाकर जो हर्ष हमें होता है यह हर्ष किसी इन्द्रिय के माध्यम से नहीं होता. यह केवल मन के द्वारा आत्मा तक पहुँचता है। यह हर्ष इन्द्रियातीत है। इस हर्ष का कारण कोई इन्द्रिय नही हैं। ऐसे हर्ष को आनन्द कहा जाता है। यह आनन्द तो क्षणिक् होता है। पर जो जितना परमात्मा के निकट होकर जब तक उससे अपने को संयुक्त कर लेता है उतना ही दीर्घ काल तक आनन्द प्राप्त कर सकता है। इस आनन्द की प्राप्ति के लिए ही योगी जन संसार के सुखों और ऐश्वर्यों को लात मार कर प्यारे प्रभु के निकट जाने का प्रयत्न करते हैं।

उपरोक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो गई है कि-यह संसार तीन का ही खेल है। इस तीन के सिद्धान्त को शास्त्रों में त्रैत वाद कहा जाता है।

वास्तव में हमारा संसार तीन का ही खेल है। इसीलिए तीन का बड़ा महत्व है। देखिए जब कोई मुकाबला या मैच होता है। तो उसका आरंभ एक. दो और तीन से ही होता है।

नीलामी में भी एक. दो और तीन पर बोली छूट जाती है। हमारा सारा गणित एक दो और तीन से ही बना है।

सारा संसार इन्हीं तीन के चक्र से घिरा पड़ा है। काल तीन होते हैं। भूत. भविष्य और वर्तमान। वचन तीन होते हैं। लिंग भी तीन होते हैं। गुण तीन होते हैं सत् रज और

CamScanner से स्कैन किया गया

तम। इस प्रकार से दर्जनों उदाहरण दिए जा सकते हैं कि-इस संसार के मुख्य तीन ही आधार हैं। हमारे आधुनिक वैज्ञानिक भी कहते हैं कि–यह ससार इलेक्ट्रोन, प्रोटॉन तथा न्यूट्रॉन से बना है और संचालित हो रहा है।

इसीलिए हमारी संस्कृति में. वैदिक शुद्ध मानवीय संस्कृति में गायत्री मंत्र का बड़ा महत्व है क्यों कि–गायत्री मन्त्र के द्वारा इन तीनों शक्तियों के रहस्य खोले गये हैं।

जो मनुष्य इस मृत्यु रूपी दैत्य से बचना चाहता है उसे संसार के इस रहस्य को समझना होगा। क्यों कि–संसार में किसी भी कार्य की सफलता के लिए सबसे पहली आवश्यकता है ज्ञान की।

जब तक किसी के बारे में ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेते तब तक हम उसके अच्छे व बुरे परिणामों से बच नहीं सकते ! संसार में आकर यदि हमें दुःख से. क्लेश से. कष्ट से बचना है तो हमें इस संसार को समझना होगा कि संसार क्या है ? इस संसार को बनाने वाला कौन है ? इस संसार के बनाने का मुख्य प्रयोजन क्या है ? इस संसार में मनुष्य सुख या दुःख क्यों भोगता है ? यह दुनिया किसलिए बनाई गई है ? इन सारी बातों को समझे बिना हम अपने जीवन में वास्तविक सुख प्राप्त नहीं कर सकते। इन सारी बातों को समझने के लिए आवश्यक है कि-हम ज्ञान प्राप्त करें।

CamScanner से स्कैन किया गया

यदि हमें बम्बई जाना है तो पहले जानना होगा कि-बम्बई कहाँ है ? बम्बई कैसी है ? वहाँ का वातावरण कैसा है ? आदि आदि । बम्बई का ज्ञान प्राप्त किए बिना बम्बई जाना सम्भव नहीं है । जाने के लिए भी हमें पहले जाने के साधनों को भी जानना होगा ।

इसलिए ध्यान रखिए कि-जीवन में सबसे पहली आवश्यकता ज्ञान की होती है । इसीलिए हम पहले अपने बच्चों को ज्ञान प्राप्त कराने शिक्षणालयों में भेजते हैं । पर दुःख है कि-आज के शिक्षणालयों में केवल पैसा कमाने की विद्या सिखलाई जाती है । यह विद्या भी जरूरी है और पैसा भी जीवन में सुख प्राप्ति के लिए एक विशेष स्थान रखना है । पर संसार नाम केवल पैसे का ही नहीं है । यदि पैसे से ही सब कुछ होता है तो फिर पैसे से ही हम मृत्यु को भी खरीद लेते अर्थात् लम्बी आयु जी पाते । पर मरने और जीने की व्यवस्था में अमीर और गरीब का कोई फर्क नहीं है । अतः ज्ञान ग्रहण करना जीवन की बडी और पहली जरूरत है । ज्ञानी पुरुष यदि गरीब भी होगा तो वह ज्ञान से कल धनी बन सकता है और धनी व्यक्ति अपने अज्ञान से भिखारी बन जाता है । अतः हम आप से कहना चाहेंगे कि-ज्ञान सुख प्राप्ति की पहली शर्त है । इस संसार में तीन चीजों के बारे में जानना जरूरी है । एक तो परमात्मा के बारे में जानो । दूसरा अपनी आत्मा के बारे में जानो कि-यह क्या है और तीसरा प्रकृति के बारे में जानो कि यह क्या है ? आज का वैज्ञानिक केवल प्रकृति के, दुनिया के बारे में

CamScanner से स्कैन किया गया

कुछ कुछ ज्ञान प्राप्त कर सका है। अभी वह न तो आत्मा के बारे में जानता है और न परमात्मा के बारे में। इस प्रकार उसका ज्ञान अभी तो एक तृतीयांश से भी कम है। क्यों कि अभी वह दुनिया के बारे में भी पूरा पूरा नहीं जान सका है। इसीलिए शास्त्रों में कहा है। 'स्वाध्यान्मा प्रमदः' ज्ञान के ग्रहण करने में आलस्य मत करो। क्यों कि—जीवन तो बहुत छोटा होता है और ज्ञान अनन्त है। ज्ञान प्राप्त करने के बारे में एक बात बडी विचित्र है। जब तक आदमी यह समझता है कि-मैं बहुत जानता हूँ. मैं बहुत समझता हूँ तो समझ लीजिए कि-वह अभी ज्ञान के किनारे ही खड़ा है बल्कि वह ज्ञान-समुद्र से बहुत दूर है। इसीलिए उसे समुद्र बहुत छोटा सा प्रतीत हो रहा है। किन्तु जब मनुष्य ज्ञान के किनारे. तट पर आजाता है तब उसे ऐसा अनुभव होता है कि—मैं तो अभी कुछ जानता ही नहीं हूँ। जो थोड़ा ज्ञानी होता है वह अपने को अल्पज्ञ समझने लगता है। हमारी सारी जीवन यात्रा का मूल उद्देश्य है ज्ञान की प्राप्ति।

यह संसार एक युनिवर्सिटी है। विश्व विद्यालय है। जैसे विद्यालयों में विद्यार्थी एक वर्ष में एक श्रेणी आगे बढ़ता है। वैसे ही हमारा एक जीवन एक वर्ष है। हर जन्म में हमें पहले से आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। इस संसार में यदि एक छात्र मैट्रिक पास कर ले या दसवीं पास करले तो फिर वह हमेशा दसवीं पास माना जाता है। वह आगे बढ़ सकता है पर वह दसवीं से नीचे नहीं जाता। पर परमात्मा की व्यवस्था

CamScanner से स्कैन किया गया

में आत्मा आगे और पीछे भी आ जा सकता है। इसलिए हमें निरन्तर ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। यदि हम अपने इस जीवन में ज्ञान प्राप्त करते हैं तो निश्चय ही हमारा अगला जन्म ज्ञानी के घर होगा और हमारी बुद्धि भी तेज रहेगी। यदि एक जन्म में भी हम अनपढ़ रह गए तो फिर क्षुद्र बुद्धि बन जाते हैं। ज्ञान चाहे हम पढ़कर प्राप्त करें, चाहे सुनकर प्राप्त करें, चाहे अनुभव से प्राप्त करें, बस हर तरीके से हमें ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

ज्ञान रहित अज्ञानी पुरुष जीवन में प्रगति कर ही नहीं सकता। उसे आगे बढ़ने के लिए ज्ञान प्राप्त करना ही होगा।

ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद सुख प्राप्ति की दूसरी शर्त है, ज्ञान के अनुसार हमारा आचरण, व्यवहार और कर्म भी होना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करके तदनुसार आचरण न करना अज्ञानी रहने से भी अधिक बुरा है। केवल ज्ञान प्राप्त करने से भी हमें सुख नहीं मिल सकता। जैसे आपने बम्बई के बारे में सब कुछ जान लिया है। जानकर भी जब तक आप बम्बई नहीं जाते आपका जानना न जानना कोई माने नहीं रखता। ज्ञान का फल ज्ञान के अनुसार आचरण करने से ही मिलता है।

मान लीजिए हमारे सिर में दर्द रहता है। हम जान चुके हैं कि सिर दर्द का विशेष कारण पेट की खराबी होती है। यह जानकर भी यदि हम अपने पेट को ठीक न कर लें तब तक

CamScanner से स्कैन किया गया

हम सिर दर्द से मुक्ति नहीं पा सकते। कोई ऊपरी दवा लगा कर थोडी देर के लिए हम राहत पा सकते हैं। राहत भी कर्म से ही मिलेगी केवल दवा के जानने भर से नहीं अपितु जानकर. दवा को खाकर ही हम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

पहले किसी के भी बारे में ठीक ठीक जान लेना. दूसरे ठीक ठीक जानकर उसी ज्ञान के अनुसार आचरण करना सुख प्राप्ति की दूसरी शर्त है। सत्य ज्ञान और ज्ञान के अनुसार आचरण और उसके बाद अपनी असमर्थता होने पर परमात्मा से सहायता प्राप्त करना या सामर्थ्य वाले की उपासना. यह तीसरी शर्त है। जो इस संसार मे इन तीन बातों पर चलेगा वह सुखी और जो न चलेगा वह निश्चित रूप से दुःख पाएगा। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि-वह जीवन की इन तीन बातों को जान ले जिन पर हमें चलना होता है।

आज के युग में ही नहीं हमेशा से संसार में पैसे का महत्व रहा है और पैसे का महत्व हमेशा रहेगा। जीवित रहने के लिए जैसे हवा जरूरी है। बिना वायु के मनुष्य जी नहीं सकता। वैसे ही जीवन में सुख प्राप्ति के लिए पैसा भी जरूरी है। बिना धन के काम नहीं चलता।

संसार मे दो प्रकार से मनुष्य धनवान बनता है एक तो परिश्रम से. मेहनत से. और दूसरा बिना मेहनत और परिश्रम से।

CamScanner से स्कैन किया गया

ध्यान दीजिए जो धन मेहनत व परिश्रम करके ईमानदारी से धर्म पूर्वक कमाया जाता है वह धन मनुष्य को सुख प्रदान करता और जो धन. बाप-दादा की कमाई का या फिर गलत ढंग से अथवा चोरी या डाके से अथवा लाट्री आदि जुए के ढंग से आता हैं वह प्राप्त होकर भी मनुष्य को सुख नहीं देता। क्यों कि-बिना श्रम से कमाये धन के मूल्य को उसका जो वर्तमान मालिक है वह जानता नहीं। जो धन के मूल्य को नहीं जानता. धन भी उसका मोल नहीं करता।

धर्म से जो धन अर्जित किया जाता है उस धन को व्यय करने के बारे में पुरुषार्थी पर्याप्त सोच विचार कर खर्च करता हैं. वह धन का सदुपयोग करता है और वह धन उसको सुखी बनाता है।

जो धन पूर्वजों द्वारा अर्जित है-वह अपने उत्तराधिकारी को आलसी व अकर्मण्य बना देता है। क्योंकि-जो व्यक्ति पुरुषार्थ हीन होता है वह धीरे धीरे पूर्वजों के धन को नष्ट करता है और वह बिना परिश्रम का धन उस उत्तराधिकारी को नष्ट कर देता है। हां पूर्वजों के धन को प्राप्त कर जो अत्यन्त पुरुषार्थी बन कर्म रत रहता है. वह भी अपने श्रम के धन को भोगता है. वह भी सुखी होता है और जो धन. चोरी. डकैती अथवा जुए एवं कहीं से अकस्मात् प्राप्त कर लिया जाता है वह धन. प्राप्त करने वाले को प्राप्त होकर भी सुख का कारण नहीं बनता।

CamScanner से स्कैन किया गया

ध्यान दीजिए जो धन मेहनत व परिश्रम करके ईमानदारी से धर्म पूर्वक कमाया जाता है वह धन मनुष्य को सुख प्रदान करता और जो धन. बाप-दादा की कमाई का या फिर गलत ढंग से अथवा चोरी या डाके से अथवा लाट्री आदि जुए के ढंग से आता हैं वह प्राप्त होकर भी मनुष्य को सुख नहीं देता। क्यों कि-विना श्रम से कमाये धन के मूल्य को उसका जो वर्तमान मालिक है वह जानता नहीं। जो धन के मूल्य को नहीं जानता. धन भी उसका मोल नहीं करता।

श्रम से जो धन अर्जित किया जाता है उस धन को व्यय करने के बारे में पुरुषार्थी पर्याप्त सोच विचार कर खर्च करता है. वह धन का सदुपयोग करता है और वह धन उसको सुखी बनाता है।

जो धन पूर्वजों द्वारा अर्जित है-वह अपने उत्तराधिकारी को आलसी व अकर्मण्य बना देता है। क्योंकि-जो व्यक्ति पुरुषार्थ हीन होता है वह धीरे धीरे पूर्वजों के धन को नष्ट करता है और वह बिना परिश्रम का धन उस उत्तराधिकारी को नष्ट कर देता है। हाँ पूर्वजों के धन को प्राप्त कर जो अत्यन्त पुरुषार्थी बन कर्म रत रहता है. वह भी अपने श्रम के धन को भोगता है. वह भी सुखी होता है और जो धन. चोरी. डकैती अथवा जुए एवं कहीं से अकस्मात् प्राप्त कर लिया जाता है वह धन. प्राप्त करने वाले को प्राप्त होकर भी सुख का कारण नहीं बनता।

CamScanner से स्कैन किया गया

वैसे ही जैसे परिश्रम से अर्जित धन से आप मिठाई खरीदें और बडे आनन्द से औरों को खिलाएँ और स्वयं खावें तो उसमें अत्यन्त सुख प्राप्त होता है। अब किसी दुकान से आप मिठाई चुराकर ले आवें और खावें ! वह मिठाई आप के पेट में भी पहुँच जाती है पर उसे खाते समय मन में भय और भीतर ही भीतर मानसिक उतार चढ़ाव के कारण खाने वाला खाकर भी उसके आनन्द से वंचित रह जाता है। अत: ब्लैक मार्केट. मिलावट और अधिक मुनाफाखोरी या अवसर का लाभ उठाकर ग्राहक का शोषण. आदि धनपति को धन दे जाते हैं पर उसके हृदय को निरन्तर कंगाल बनाते चले जाते हैं। वह धनपति नहीं वह दु:खपति बन जाता है। डॉक्टर. वकील. सरकार चोर. डाकू उसके धन को धीरे धीरे नष्ट कर देते हैं।

अत: सावधान ? गलत तरीकों व उपायों से धन कमाने वालो जागो ! गलत ढग से धन को मत कमाओ। ऐसी दौलत तुम्हारे घर को हरा भरा नहीं करेगी अपितु आपके उपवन को सुखा डालेगी।

यहाँ प्रसंग वश धन की बात आपको बताई गई है। पर ध्यान रक्खो केवल पैसा भी सब कुछ नहीं है। पैसा मिट्टी का बना है अत: इस पैसे से आपके मिट्टी के शरीर को सुख मिल जाएगा। पर आपकी आत्मा मिट्टी की नहीं है। आत्मा के आनन्द के लिए पैसे से हट कर बहुत कुछ करने की आवश्यकता होती है। आत्मा और परमात्मा की प्राप्ति के लिए पैसा सहायक नहीं है। पैसा तो केवल इस शरीर के लिए ही है. जिस

CamScanner से स्कैन किया गया

शरीर को एक दिन अग्नि में भस्म कर दिया जाता है। शरीर के लिए धन और आत्मा के लिए धर्म की आवश्यकता है। धर्म नाम है उन मानवीय गुणों का जिन गुणों को प्राप्त कर मनुष्य मनुष्य बन जाता है। धर्म का पालन धन कमाने से भी अधिक कठिन है। तो धन केवल इसी जीवन का साथी है और धर्म हमारा जन्म जन्मान्तर का साथी होता है। धर्म क्या है? इस विषय पर आगे किसी प्रसंग में प्रकाश डाला जाएगा। यहाँ इतना ही समझ लेना चाहिए कि-जिन सद्गुणों से मनुष्य संसार में उत्तम यश और कीर्ति को प्राप्त करता है ऐसे धारण करने योग्य गुण ही धर्म कहाते हैं।

धर्म मनुष्य को परोपकारी. पुरुषार्थी. समदर्शी बनाता है। मैं और मेरे की सीमा से निकाल कर जो धर्म हमें जितना विश्व व्यापी बनाता है वह धर्म उतना ही श्रेष्ठ और महान होता है। जब मनुष्य ईश्वर. जीव. और प्रकृति के रहस्यों को जान लेता है तभी वह धार्मिक बन जाता है। आज के मनुष्य का धर्म से संबन्ध टूट रहा है इसका कारण अज्ञान ही है। क्यों कि-उसे न तो आत्मस्वरूप का बोध है और न ईश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान है और न प्रकृति के सही नियमों पर वह चलता है। अतः आज का मनुष्य तीनों प्रकार के दुःख से घिरा हुआ है। वह अपनी आत्मा की दुर्बलताओं से. प्राकृतिक प्रकोप से. ईश्वरीय न्याय से पीड़ित होकर घायल अवस्था में जो रहा है। भीतर. बाहर सर्वत्र अशान्ति ही अशान्ति उसे तड़पा रही है। अतः आवश्यकता है कि-हम जिस दुनिया में चल रहे हैं उसे और उसके रहस्यों को जानें और अपने तथा दूसरों के जीवन को सँवार कर सुख के मार्ग की ओर आगे बढ़ें।

CamScanner से स्कैन किया गया

आठवाँ दिन

८

–संसार कैसे बना ?

पिछले दिन यह बता चुके हैं कि-इस संसार में तीन पदार्थ अनादि हैं जो हमेशा रहते हैं। यह सारा संसार इन्हीं तीन पदार्थों का खेल है।

प्रत्येक मनुष्य यह जानना चाहेगा कि-आखिर यह दुनिया बनती कैसे है ? जब इस संसार का आरंभ हुवा तब मनुष्य कैसे बना ? क्यों कि-उस समय तो माता पिता भी नहीं थे। बिना स्त्री और पुरुष के मानव का निर्माण कैसे हुवा। यह जानने की उत्कण्ठा हर समझदार आदमी के दिल में पैदा होती है।

वैज्ञानिकों का कथन है कि-संसार में प्रत्येक कण अपनी जगह बड़ी तीव्रता से घूम रहा है। शास्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति के दो मूल तत्व बताए हैं। एक है अग्नि कण और दूसरा है सोम कण। 'अग्निष्टोमाभ्यामिदं जगत्' यह जगत् अग्नि और सोम तत्व से निर्मित होता है।

CamScanner से स्कैन किया गया

वैज्ञानिक अग्नि तत्व को अपने शब्दों में इलेक्ट्रॉन कहते हैं। सोम कण को प्रोटोन कहते हैं। इलेक्ट्रॉन और प्रोटोन मिल कर कार्य करते हैं। प्रोटोन इलेक्ट्रॉन का वरण करता है और इलेक्ट्रॉन के लिए प्रोटेन वरेण्य है। तीसरा तत्व है न्यूट्रॉन जो एक संयुक्त इलेक्ट्रोन और प्रोटोन के चारों ओर परिभ्रमण करता रहता है।

किन्तु जब इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन भी गति नहीं कर रहे थे तब सारी सृष्टि एक गहरे अन्धकार से आवृत्त थी। 'स आसी-त्तमसा गूढ़मग्रे' जगत् की, संसार की उत्पत्ति से पहले चारों ओर गहरा अन्धकार था। यह बात सबको माननी होगी। क्यों कि-आज भी संसार में हमें प्रकाश का देने वाला सूर्य है जो अग्नि तत्व से बना है। जब सूर्य पृथिवी के दूसरे भाग में पहुँच जाता है तब हम अपने देश में अन्धकार में डूब जाते हैं। यह अन्धेरा तो तब है जब आकाश में असंख्य लोक लोका-न्तर तारों के रूप में प्रकाश कण बिखेरते रहते हैं।

अतः यह बात निश्चित है कि-सूर्य और अनेक नक्षत्रों के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान अंधकार से भी कहीं बहुत गहरा अन्धकार संसार में व्याप्त था। उस समय संसार में केवल सूक्ष्म प्रकृति के कण सर्वत्र फैले हुए थे। प्रकृति की हालत उस समय ठीक वैसी ही थी जैसे एक गहरी नींद में सोए हुए मनुष्य की। जैसे मनुष्य देह गति शून्य हो जाता है। यद्यपि उसके भीतर आत्मा होती है जो जागृत रहती है पर शरीर

CamScanner से स्कैन किया गया

फिर भी निश्चेष्ट रहता है। ठीक इसी प्रकार उस विराट् परमात्मा के गर्भ में प्रकृति का कण कण निश्चेष्ट पड़ा होता है। जैसे मनुष्य निश्चेष्ट सो जाता है तो फिर उसके शरीर में एक नया उत्साह और नई शक्ति आजाती है। हम रोजाना जब सोकर उठते हैं तब अपने में नई शक्ति का अनुभव न करते हैं।

परमात्मा द्वारा मनुष्य के लिए दिए गए ज्ञान वेद में स्पष्ट लिखा है कि-उस सूक्ष्मतम सर्वव्यापक प्रभु के एक चौथाई भाग में यह ब्रह्माण्ड स्थित है। इससे स्पष्ट होता है कि-जिस अनन्त ब्रह्माण्ड को हम नाप नहीं सकते उस ब्रह्माण्ड से प्रभु चार गुना विशाल हैं। सारा संसार परमात्मा के एक चौथाई भाग में है। जैसे हमारे देह में पेट की स्थिति है बस वैस ही प्रभु के गर्भ में. पेट के भीतर ये सारा संसार है।

उस हिरण्यगर्भ परमात्मा के गर्भ में हिरण्य रूप प्रकृति के सूक्ष्म कण निश्चेष्ट रूप में व्याप्त रहते हैं. और सारा संसार गहरे अन्धकार से घिरा होता है।

ये जो प्रकृति के कण हैं जिसे हम कल्पना से भी काट नहीं सकते ऐसी अखण्डनीय अन्तिम इकाई परमाणु कहाती है। प्रकृति का यह कण जो आज के परमाणु से भी कहीं अधिक सूक्ष्म और बारीक होता है। उस परमाणु से अधिक सूक्ष्म है हमारी आत्मा और हमारी आत्मा से भी अधिक सूक्ष्म अर्थात् बारीक वह परमात्मा है। परमात्मा के गर्भ में प्रकृति और

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रकृति के गर्भ के भीतर आत्मा रहती है। परमात्मा और आत्मा चेतन हैं। जानदार होते हैं या जानदार हैं और प्रकृति जड़ है। बे जान है। क्यों कि-जड़ प्रकृति में अनुभवन [फीलिंग्स] की शक्ति नहीं है। इसमें इच्छा, द्वेष सुख, दुःख प्रयत्न और ज्ञान के गुण नहीं होते। इसलिए यह जड़ कहाती है। आत्मा चेतन है और आत्मा में इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, प्रयत्न और ज्ञान दृष्टिगोचर होता है। परमात्मा केवल ज्ञान मय हैं। दूसरे सबविध सामर्थ्यों से परिपूर्ण हैं। उनमें इच्छा या चाह भी नहीं होती। जब किसी के पास कोई चीज नहीं होती तब वह उसकी चाह करता है। परमात्मा के पास सब कुछ है अतः उसके पास चाह भी नहीं है। फिर भी परमात्मा में एक 'ईक्षण' नाम की प्रवृत्ति है। जिसे हम निष्काम भाव से अपने कर्तव्य पालन की प्रवृत्ति कहते हैं। इसी 'ईक्षण' वृत्ति से सृष्टि में प्रवृत्ति के कण कण में गति प्रारंभ होती है। परमात्मा में, जो स्थान ईक्षण का है। मनुष्य में वह ईक्षण इच्छा के रूप में दिखलाई पड़ती है। इच्छा में अभाव और स्वार्थ दोनों का समन्वय होता है। जब कि ईक्षण में इन दोनों का अभाव होता है। मानव देह में आत्मा के माध्यम से जो भी गति होती है उसके पीछे इसी इच्छा शक्ति का हाथ होता है। इच्छा से शरीर के अंगों को प्रेरणा मिलती है। यह प्रेरणा आत्मा से मन में और मन से इन्द्रियों में एजन पैदा करती है। परमात्मा के ईक्षण से महान प्रेरित होता है। यह महत्तत्व परमात्मा और प्रकृति के बीच में वैसा ही तत्व है जैसा

CamScanner से स्कैन किया गया

कि आत्मा और शरीर के बीच में या ज्ञानेन्द्रियों के बीच में मन या बुद्धि।

जैसे आत्मा की इच्छा मात्र से मन गतिशील हो जाता है और वह ज्ञानेन्द्रियों में गति का संचार कर देता है वैसे ही परमात्मा की ईक्षण वृत्ति से मनस् तत्व में. महत् तत्व में गति का संचार हो जाता है। इस महत्तत्व से प्रकृति का प्रत्येक सूक्ष्म कण गतिशील हो उठता है। असंख्यात परमाणुओं में जब गति जन्म लेती है तो सत् रज. तम गुण युक्त तीन प्रकार के परमाणुओं में से सत् और रज का संयोग होता है। सत् रज के संयोग से इलेक्ट्रॉन की उत्पत्ति होती है। जैसे हमारे देह में गति के पीछे हमारी ज्ञान शक्ति कार्य करती है वैसे ही परमात्मा की ईक्षण शक्ति से प्रकृति गतिशील हो उठती है। उसमें गति के जन्म लेते ही सत् और रज कण परस्पर एकाकार हो उठते हैं एक दूसरे में समा जाते हैं। इससे रिक्त स्थान होता है जिसे हम आकाश का पैदा होना कहते हैं। सत् और रज से इलेक्ट्रॉन और रज और तम के मिश्रण से प्रोटोन और तम की प्रधानता से न्यूट्रॉन जन्म लेते हैं।

इस प्रकार ये तीनों अत्यन्त तीव्र गति से घूमने लगते है। जो शक्ति इन परमाणुओं को घुमाती है उसे सूत्रात्मा वायु कहा जाता है। इस सूत्रात्मा वायु का इस सृष्टि में बड़ा महत्व है। यह इतना सूक्ष्म है कि यह इस जगत में महतत्व के ही समान परिपूर्ण है। यही सूत्रात्मा वायु है जिससे प्रकृति का कण कण ही नहीं लोक लोकान्तर भी घूम रहे हैं। जीवात्मा भी

CamScanner से स्कैन किया गया

इसी सूत्रात्मा वायु कें सहारे ही सर्वत्र परि भ्रमण करता है तथा गतिशील हो जाता है। जड़ जगत् और चेतन आत्मा को. दोनों को ही सूत्रात्मा वायु ही गतिशील रखता है। महत्तत्व समान रूप से जड़ और चेतन दोनों में गति को जन्म देता है। और सूत्रात्मा वायु उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य करता है। जैसे ही महत्तत्व परमाणु और आत्मा में गति उत्पन्न करता है वैसे ही एकाकार सूक्ष्म प्रकृति पृथक् पर-माणु में विभक्त हो जाती है और प्रत्येक कण अपने अपने पृथक् पृथक् अस्तित्व में आ जाता है। जहाँ जड़ जगत् में प्रत्येक अणु अस्तित्व ग्रहण करता है वहाँ प्रत्येक आत्मा में अहं जागृत होता है। और प्रत्येक आत्मा पृथक् पृथक् गतिशील होती है। इस प्रकार ऋत्-ज्ञान ग्रहण करने का सामर्थ्य संजोकर चेतन तत्व आत्मा और सत्य रूपा जड़ प्रकृति को प्रभु अपने ईक्षण से गतिमान कर देते हैं। इस गति के बाद भी सर्वत्र रात्रि का सा अन्धकार आवृत्त रहता है। सब ओर अन्धेरा ही अन्धेरा होता है पर पहले जैसी अन्धकार में प्रगाढ़ता नहीं रह पाती है। क्यों कि-परिछिन्ना प्रकृति स्थूलाकार होकर रिक्तता उत्पन्न करती है। प्रकृति और आत्मा में पृथक् पृथक् अस्तित्व की निर्मिति होती है। जिसे अहंकार कहते हैं। इस अहं की स्थिति में शब्द. स्पर्श. रूप. रस. गन्ध का सूक्ष्म सा विभाजन होता है। जिन्हें पंच तन्मात्रा कहते हैं। ये महत्तत्व में स्थित होते हैं और अहंकार के साथ साथ पृथक् पृथक् अस्तित्व में आजाते हैं। पृथक् अस्तित्व में आते ही जीवात्मा का सूक्ष्म

CamScanner से स्कैन किया गया

शरीर जागृत हो जाता है। जीवात्मा के संस्कार सूक्ष्म शरीर में कर्मों के भोग के लिए पांच कर्मेन्द्रियाँ और ज्ञान भोग के लिए पांच ज्ञानेन्द्रियाँ भी अस्तित्व ग्रहण कर लेती हैं। जिससे आत्मा प्रकाशित होता है। इनमें पंच कर्मेन्द्रियों का जो समूह है वह सूक्ष्म प्रकृति जन्य है और पंच ज्ञानेन्द्रियाँ और छठा मन का जो समूह है चेतन सत्ता से प्रेरित है। आग्नेय तत्व चेतन गुण युक्त है और सोम तत्व प्रकृति गुण युक्त। इन दोनों का संयोजन महतत्व द्वारा ही होता है। चेतन की ज्ञानमय गति और प्रकृति को कर्म करने का [ऐक्शन] सामर्थ्य. इन दोनों से ही यह विश्व बनता है। शब्द. स्पर्श. रूप. रस. गन्ध इन पांच तन्मात्रा में जो क्रिया रूप होता है वह प्रकृति का है और जो ज्ञान रूप है वह चेतन का है।

यहाँ यह बात और स्पष्ट रूप में समझ लेनी चाहिए कि-सत्व जो शुद्ध गुण या शक्ति है वह चेतन ब्रह्म की परमात्मा की है। रज जो मध्यम रूप है वह चेतन और जड़ का मिश्रण रूप है और जो तम जाड्य है वह केवल जड़ प्रकृति का रूप है। इन तीनों का संघात अर्थात् ईश्वर शुद्ध रूप और रज अर्थात् ईश्वरीय शुद्ध और जड़ प्रकृति का मिश्रण और तम केवल प्रकृति का मूल स्वरूप इन्ही दोनों के परस्पर संघात से इस स्थूल प्रकृति का निर्माण होता है। इसमें जो अस्थिमय देह है वह तमोगुण आवेष्टित है। तमोगुण प्रधान प्रकृति है। इसमें जो कार्य करने का सामर्थ्य है वह ईश्वर व प्रकृति के मिश्रित सामर्थ्य से है और जो मन व ज्ञानेन्द्रिय का सूक्ष्म

CamScanner से स्कैन किया गया

शरीर है वह ईश्वरीय सत्व प्रधान शक्ति के संयोग से है। हमारे मनस् चक्र में-मन. बुद्धि. चित्त. अहंकार की गणना की जाती है। इसमें से मन और अहंकार तो प्रकृतिमय हैं और बुद्धि और चित्त. सत्व शक्ति. चेतन गुण प्रधान हैं बद्धि और चित्त सत्वगुण से निर्मित हैं और मन आैर अहंकार चेतन और जड़ के योग से निर्मित हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि-बुद्धि और चित्त आग्नेय तत्व प्रधान हैं आैर ज्ञानेन्द्रिय समूह में परिगणित होते हैं। मन और अहंकार सोम गुण युक्त प्रकृति प्रधान हैं आर कर्मेन्द्रिय समूह में उनकी गणना होती है।

प्रकृति के रहस्य को जानने के लिए हमें शरीर के रहस्य को जान लेना चाहिए। क्यों कि ब्रह्माण्ड को पिण्ड से अर्थात् संसार को शरीर से आैर पिण्ड से अर्थात शरीर से इस संसार को भली भान्ति समझा जा सकता है।

हमारे शरीर में दो प्रकार की शक्तियाँ सन्निविष्ट हैं। एक शक्ति है शारीरिक और दूसरी शक्ति है आत्मिक। किसी भी प्रकार का शब्द करना यह कार्य प्रकृति का है आैर किए गए शब्द के भाव को. मतलब को समझानें का कार्य आत्मा का है। स्पर्श करने की क्रिया तो प्रकृति द्वारा हो रही है। पर स्पर्श के पीछे जो अनुभूति का सामर्थ्य है वह आत्मा का है। ठीक इसी प्रकार सृष्टि में शब्द. ध्वनि रूप जो क्रिया है वह जड़ की है आैर उस शब्द से जो ज्ञान का प्रकाश होता है

CamScanner से स्कैन किया गया

वह परमात्मा का है । सूर्य में जो कार्य रूप अग्नि है. अग्निपुंज है वह प्रकृति का है। किन्तु उससे जो प्रकाश फैलता है. वह चेतन सत्ता का है । शब्द में ज्ञान. स्पर्श में अनुभव. रूप में सौन्दर्य. रस में आस्वादन. गन्ध में गन्धानुभूति. ये सब चेतन शक्ति द्वारा होते हैं और शब्द. स्पर्श. रूप. रस. गन्ध का स्वरूप जड़ प्रकृति का है ।

पंच तन्मात्राओं से दो धाराएँ भिन्न भिन्न रूपों में फूटती हैं। एक धारा है जिससे ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय के समूह बन रहे हैं. जो चेतना के पुंज हैं और दूसरी ओर आकाश. वायु. अग्नि. जल और पृथिवी ये पच भूत जो जड़ के पुंज है । शब्द रूपी मूल शक्ति से स्थूल आकाश. स्पर्श शक्ति के स्थूल रूप में वायु. रूप के मूल रूप से अग्नि. रस के मूल रूप से जल और गन्ध के मूल से स्थूल पृथिवी की रचना होती है ।

इस प्रकार एक ओर जड़ प्रकृति की रचना प्रकट हुई दूसरी ओर चेतन आत्मा का सूक्ष्म शरीर जीवित हो उठा ।

अग्नि तत्व का उत्कृष्ट कोश सूर्य बना । वायु तत्व का स्थूल रूप प्राण वायु ऑक्सीजन और कार्बन के रूप में यह स्थूल वायु मंडल । जल तत्व का स्थूल रूप समुद्र और भू तत्व का स्थूल रूप यह पृथिवी बनी । आकाश तो खाली स्थान का नाम है. जो सर्व व्यापक है । आकाश ही सब पदार्थों को अपने में धारण किए हुए है । इसमें अग्नि और जल की जोडी है और दूसरी ओर वायु और धरती की जोडी है । वायु की पुत्री

CamScanner से स्कैन किया गया

अग्नि है. सूर्य है. और जल की पुत्री धरती है। वायु और अग्नि बँधे हुए हैं और जल और पृथ्वी बँधे हैं। अग्नि तत्व पुरुष का स्रष्टा है। और जल तत्व नारी का स्रष्टा है। जल चन्द्रमा से बँधा और अग्नि सूर्य से बँधी हुई है। अग्नि तत्व का चेतनमय कोश पुरुष और सोम तत्व का चेतन मय कोश नारी है। इस प्रकार से समस्त सृष्टि का कण कण दो वंशों में. विभागों में विभक्त है। एक सूर्य वंशी और दूसरे चन्द्र वंशी या सोमवंशी।

समस्त सृष्टि के पदार्थों की संरचना इन्ही दो तत्वों से होती है। इस बात को समझ लेना चाहिए। अग्नि तत्व में तत्व प्रधान है और सोम तत्व गौण और सोम में ओज तत्व प्रधान है और अग्नि तत्व न्यून।

ये ही दोनों शक्तियाँ मिलकर इस समस्त सृष्टि का निर्माण करती हैं।

जब परमात्मा ने आकाश. वायु. अग्नि. जल और पृथ्वी का निर्माण किया तो सर्व प्रथम जल तत्व प्रधान जलीय प्राणियों की रचना हुई। जलीय प्राणियों की संरचना के बाद भूतत्व प्रधान वृक्ष व वनस्पतियों की रचना हुई। वृक्ष व वनस्पतियों की रचना के बाद वायु तत्व प्रधान कीट. पतंग एवं पक्षियों की संरचना हुई। जलीय तथा वायवीय प्राणियों की रचना के बाद जल और भूतत्व प्रधान कीट व प्राणियों की रचना हुई। तद-नन्तर थलचर पशुओं की रचना हुई और अन्त में स्त्री और पुरुष जो ईश्वर की सर्व श्रेष्ठ कृति हैं. उनका निर्माण हुवा।

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रश्न यह उठता है कि-सृष्टि के आदि में जब स्त्री, पुरुष न थे तो ये कैसे पैदा हुए ? हम पहले बतला चुके हैं कि-चेतन प्राणियों की रचना में अग्नि और सोम तत्व प्रधान है। अग्नि और सोम तत्व के सार को युक्ति पूर्वक यदि बाहर भी संयुक्त किया जाए तो भी प्राणियों की उत्पत्ति संभव है। पर यह अग्नि तत्व और सोम तत्व किन पदार्थों से संयुक्त किया जाना है यह ध्यान देने योग्य अनुसंधान का विषय है।

संसार में जितने प्रकार के जीव जन्तु व प्राणी हैं उनमें नर और मादा दो प्रकार की जातियां हमें दृष्टिगोचर होती हैं। प्रत्येक कोटि के नर में अग्नि तत्व की प्रधानता होती है और मादा में सोम तत्व की।

पुरुष के शरीर में उत्पन्न होने वाली शरीर की सातवीं धातु वीर्य कहाती है और स्त्री के शरीर में उत्पन्न होने वाली सातवीं धातु रज कहाती है।

हम जो कुछ खाते व पीते हैं उससे हमारे शरीर में सात धातु बनती हैं सर्वप्रथम रस, फिर रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा, वसा फिर उससे वीर्य की रचना होती है। हम जो कुछ खाते अथवा पीते हैं उसमें अन्न, वनस्पति और जल, आदि पदार्थ होते हैं। ये समस्त पदार्थ मिट्टी व जल से ही उत्पन्न होते हैं। खाया हुवा अन्न हमारे पेट की जठराग्नि से पक कर नाना प्रकार की धातुओं में परिवर्तित

CamScanner से स्कैन किया गया

होता है और ये ही धातुएँ अन्त में एक ऊर्जा में परिवर्तित होकर हमें प्राण शक्ति प्रदान करती हैं वह स्पष्ट ही है।

हम संसार के किसी भी भाग में चले जाएँ जहाँ जहाँ मानवीय सभ्यता विकसित हुई है वहाँ हम एक सत्य को सर्वत्र देखते व सुनते हैं। भारत के लोग अपने देश या मिट्टी को मातृ-भूमि कहते हैं। अरब देशों में इसे उर्दू भाषा में मादरे वतन कहते हैं अंग्रेजी में जन्म भूमि को मदर लैण्ड कहते हैं। इस प्रकार यह बात निर्विवाद रूप से मानी जाती है कि-यह भूमि अथवा धरती हमारी माँ है।

यह कोई भावनात्मक बात नहीं है अपितु यह एक सत्य है। ध्रुव सत्य।

सृष्टि के आरंभ में समस्त प्राणियों को जन्म देने वाली माँ यही धरती माता है। हमारे शरीर का निर्माण इसी मिट्टी और जल से ही होता है।

सृष्टि के आदि में सूर्य के ताप से जल में तीव्र उष्णता का संयोग हुआ और सूर्य ने पिता के रूप में धरती में गर्भ का आधान किया। समस्त प्राणियों की उत्पत्ति सूर्य एवं पृथिवी के संयोग से ही हुई। जो सृष्टि आरंभ में होती है उसे शास्त्र अमैथुनी सृष्टि कहते हैं। जब नर और मादा के संयोग से उत्पत्ति होती है वह मैथुनी सृष्टि कहलाती है। मिथुन शब्द का अर्थ है जोड़ा। हमारी माँ का सामर्थ्य अल्प

CamScanner से स्कैन किया गया

होता है। वह नौ मास में एक नन्हे शिशु को जन्म देती है पर आदि में धरती माता जो अत्यन्त शक्तिशालिनी थी उसने सभी प्रकार के प्राणियों के हजारों जोडों को अपने गर्भ से जन्म दिया। धरती माता के गर्भ से उत्पन्न होने वाले जीव शिशु के रूप में नहीं अपितु युवा जोडों के रूप में होते है। और फिर आगे इस कार्य का दायित्व नर और मादा संभाल लेते हैं। जिस प्रकार हमारी माता में भी ४० वर्ष अथवा ५० वर्ष के बाद शिशु को जन्म देने का सामर्थ्य नहीं रह जाता उसी प्रकार एक प्रसव के बाद धरती की भी स्थिति ऐसी ही हो जाती है। वह अब इतना सामर्थ्य नहीं रखती। फिर आज भी अनेक कीट व जन्तुओं को यह धरती बिना नर मादा के जन्म देती है। वर्षा ऋतु में एक प्रकार के लाल रंग के मखमली कीडे जिसे बीर बहूटी कहते हैं आज भी धरती के गर्भ से पैदा होते हैं। फिर पैदा होने वाले ये प्राणी दो चार दिन में ही बच्चों को जन्म देते हैं। इस प्रकार सृष्टि का आरंभ होता है। अनेक प्रकार के मेंढक, बिच्छु आदि भी अनेक बार धरती के गर्भ से सीधे जन्म लेते रहते हैं। धरती के गर्भ में जब स्त्री, पुरुष पूर्ण युवा हो जाते है तब वे जिस प्रकार जमीन से बीज अंकुरित होकर भूमि की परत फाड कर पैदा होता है वैसे ही मनुष्य भी जन्म धारण कर भू गर्भ से बाहर आ जाते हैं।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा जिसे वर्ष का प्रथम दिन माना जाता है उसे युगादि भी कहा जाता है। इसी युगादि के दिन मनुष्य ने धरती के गर्भ से निकल कर सृष्टि पर अपनी चहल कदमी आरंभ कर दी।

CamScanner से स्कैन किया गया

चौदह जनवरी जो मकर संक्राति का पर्व कहाता है इस के आसपास सूर्य और पृथिवी ने विधिवत् परिभ्रमण आरंभ किया। वसन्त ऋतु का शुभागमन हुवा। धरती पर वृक्ष. वनस्पति पूर्ण रूप से फलों से परिपूर्ण थ। नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ वसुन्धरा पर तैयार थे।

अपने प्यारे पुत्र पुत्रियों के लिए उस परमात्मा ने कितनी सुन्दर व्यवस्था की थी। जो व्यवस्था आज भी चली आ रही है।

जिस प्रकार आज ईस्वी सन १९८२ चल रहा है। १९८२ वर्षों की यह गिनती परम्परा से जैसे चली आ रही है वैसे ही सृष्टि के आदि से आज तक की एक एक दिन. मास और वर्ष की गणना आर्यों ने आज तक सुरक्षित रखी है। भारतीय जनता में जो संस्कार कराए जाते हैं उस संस्कार से पूर्व ब्राह्मण यजमान से आज भी जो सकल्प उच्चारण करवाता है उसमें वह पूरी सृष्टि की आयु दुहराता है। एक वर्ष के बाद इस गणना को चार युगों में बाँधा गया है। ये चार युग हैं-सतयुग. त्रेता. द्वापर. कलयुग।

चार लाख बत्तीस हजार वर्ष का एक कलयुग होता है। कलयुग से दुगुना द्वापर. कलयुग से तिगुना त्रेता और कलयुग से चौगुना सतयुग होता है। इन चारों युगों को मिलाकर एक चतुर्युगी होती है और एक हजार चतुर्युगी की एक सृष्टि होती है। सृष्टि का यह क्रम प्रवाह से अनादि रूप में चला आ रहा है। पर हर सृष्टि की आयु निश्चित है।

CamScanner से स्कैन किया गया

इस आयु की समाप्ति पर महा प्रलय होता है। इस प्रलय की आयु भी ठीक उतनी ही होती है जितनी सृष्टि की। इस प्रकार एक सृष्टि और प्रलय परमात्मा का एक दिन और एक रात कहाता है।

सृष्टि की आयु में अर्थात् जब से सूर्य और पृथिवी बनें उनकी आयु में और मनुष्य के पैदा होने की आयु में थोड़ा अन्तर है। मनुष्य उत्पत्ति की गणना मन्वन्तर से मानी गई ह। इकहत्तर चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर और १४ मन्वन्तरों की एक मानवीय सृष्टि। सृष्टि की आयु एक हजार चतुर्युगी है और मनुष्य सृष्टि की कुल आयु नौ सौ चौरान्नवे चतुर्युगी होती है।

सृष्टि उत्पत्ति के तीन चतुर्युगी के बाद मनुष्य जन्म लेता है और तीन चतुर्युगी सृष्टि की आयु शेष रहने पर मनुष्य की सृष्टि समाप्त हो जाती है। यह गणना आदि सृष्टि से चली आ रही है। इस समय हम सातवें मन्वन्तर की अट्ठाईसवीं चतुर्युगी के कलयुग में चल रहे हैं। इस प्रकार हम लगभग आधी आयु के निकट आ चुके हैं और त्रितालिस चतुर्युगी के बाद सृष्टि ठीक अपनी आयु के आधे भाग को पार कर लेगी। इस प्रकार परमात्मा ने अपनी इस सृष्टि के चलाने की कितनी सुन्दर व्यवस्था कर रक्खी है। यह सदा एक जैसी चलने वाली सृष्टि व्यवस्था का पूरा वर्णन वेदों में प्राप्त होता है। वेदों में ईश्वर. जीव और प्रकृति का पूरा ज्ञान बीज रूप में है। वेद मन्त्र अपने आप में एक फार्मूला हैं। जिन फार्मूलों से हम सारे

CamScanner से स्कैन किया गया

ज्ञान, विज्ञान को जान सकते हैं। इसीलिए वेदों के पढ़ने पढ़ाने पर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बहुत जोर दिया है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखी दो पुस्तकों को प्रत्येक मनुष्य को अवश्य पढ़ना चाहिए।

एक सत्यार्थ प्रकाश और दूसरी पुस्तक है ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका।

इन दोनों पुस्तकों को जो ध्यान पूर्वक समझ कर पढ़ लेता है वह संसार के सारे रहस्यों को भली भान्ति समझने लगता है। मनुष्य को एक सीधा और सरल रास्ता मिल जाता है।

हम सब भाइयों और बहनों से कहना चाहेंगे कि - इन दोनों पुस्तकों को पढ़ डालिए। झूठे अन्ध विश्वासों में फँसकर हम अपने जीवन को व्यर्थ न गँवाएँ।

ज्ञान की बातें जरा कठिन प्रतीत होती हैं किन्तु जब हम इन्हें जान लेते हैं तो फिर हमें अपने जीवन के रहस्यों का एवं उद्देश्यों का पता लग जाता है। जिसे समझ लेने के बाद फिर शोक नाम की कोई घटना हमें उद्विग्न नहीं कर पाती।

ज्ञान की गहरी बातों को भी हमें समझ लेना चाहिए।

केवल किस्से, कहानियों से हम अपने को बहलाना चाहते हैं। ज्ञान समझने की वस्तु है दिल बहलाने की चीज नहीं है। अतः आप ज्ञान की इस चर्चा से थकें नहीं अपितु जितना कुछ आप प्राप्त कर सकते हैं प्राप्त कर लीजिए। सत्य ज्ञान से ही हमारे जीवन में सुख के फल लगेंगे। संसार के इस क्रम को आप भली भान्ति समझने की कोशिश कीजिए। कल हम हमारी आत्मा की जो अनन्त यात्रा है उस पर विचार करेंगे।

CamScanner से स्कैन किया गया

तो मैंने फिर बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि-जैसा बायबिल में और कुर्आन में आता हैं कि-जब कयामत का दिन आएगा तब हमारा फैसला होगा। जो अच्छे काम करेंगें उन्हें जन्नत और जो बुरे काम करेंगें खुदा उन्हें दोजख देगा। तो कृपा करके यह बतलाइए कि-जन्नत या दोजख किसे मिलेगी। तब वे बडे सकपकाए और बोले कि-ऐसा लगता है कि-पीछे कुछ अवश्य रहता होगा।

मैंने कहा लगता नहीं है बल्कि यह एक सच्चाई है कि-मृत्यु के बाद हमारा शरीर नष्ट हो जाता है किन्तु हमारी आत्मा जिसे सोल या रूह कहते हैं वह शेष रह जाती है। जीव कभी मरता नहीं हैं। हम बार बार जन्म लेते हैं। इसके लिए हम किसी शास्त्र का प्रमाण नहीं देंगे क्यों कि आप उन्हे नहीं मानते। किन्तु हम एक ऐसा तर्क देंगे जिससे आपको पुनर्जन्म मानना पडेगा।

देखिए ईसाई लोग यूरोप के मूल निवासी हैं। उनकी वर्तमान भाषा अंग्रेजी है। अंग्रेजी में एक शब्द है 'रिटायर्ड'। कभी कभी शब्द अनेक रहस्यों को. तथ्य को प्रस्तुत करते हैं। देखिए रिटायर्ड शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है? री याने दुबारा. टायर्ड अर्थात् थकना। कृपया बताएँ कि-हम पहले कब थके थे? निश्चय ही यह शब्द बतलाता है कि-हम सदा से जन्म जन्मान्तरों में थकते रहे हैं। हर जन्म में हम बूढे होते हैं इसलिए हम टायर्ड नहीं रिटायर्ड होते हैं। वे इस बात को

CamScanner से स्कैन किया गया

सुनकर बडे प्रसन्न हुए और बोले कि-वास्तव में ऐसा लगता है कि-हमारी आत्मा मरती नहीं और हम बारंबार जन्म लेते हैं।

इसी प्रकार सर्च शब्द है जो बतलाता है कि-ज्ञान को हम पैदा नहीं करते। वह अविनाशी है हम केवल लुप्त हुए ज्ञान को दोबारा खोज कर ढूँढ निकालते हैं। क्यों कि-री सर्च शब्द स्वयं हमारी बात को पुष्ट कर रहा है। हम सदा से ही सर्च करते चले आए हैं हमारी आत्मा और ज्ञान दोनों अमर हैं जो कभी मरते नहीं. अविनाशी हैं।

हम पहले ही बता चुके हैं कि-तीन चीजें कभी मरती या नष्ट नहीं होती। ईश्वर. जीव. और प्रकृति। ईश्वर का गुण है ज्ञान। वह सर्वज्ञ एवं सदा ज्ञानी है।

एक बार हमें कानपुर जाना पडा। वहाँ एक सज्जन हमें मोटर द्वारा स्टेशन तक पहुँचाने आए। रास्ते में बोले-पंडित जी! यह पुनर्जन्म की बात तो व्यर्थ की है। देखिए पहले हमारे देश में तेतीस करोड़ आदमी थे और अब कितने हैं? सारी दुनिया की आबादी तेजी से बढ़ रही है। ये सब कहाँ से आ रहे हैं? इसी प्रकार अनेक लोग कहते हैं कि-किसे पता है पुनर्जन्म होता भी है या नहीं? भगवान ने हमें जन्म दिया है। बस खूब खाओ. पियो. मौज करो। आगे पीछे की कौन जाने? किन्तु हम अपने भाइयों से बडी दृढ़ता से कहना चाहेंगे कि-विश्वास करो कि-हमारी आत्मा कभी मरती नहीं। वह अजर और अमर है।

CamScanner से स्कैन किया गया

इस विश्वास के अनेक कारण हैं। सर्व प्रथम प्रत्येक प्राणी चींटी से लेकर मनुष्य तक मृत्यु से डरता है। यदि हमारा पूव जन्म न हुवा था तो हम मृत्यु से क्यों डरते हैं ? जब कि हम कभी मरे ही नहीं तो यह डर हमारे भीतर कहाँ से आ गया ?

इसके प्रतिपक्ष में कुछ लोग यह तर्क देंगे कि-किसी की मृत्यु देखकर अथवा लोगों से सुनकर हम मृत्यु से डरते हैं। एक समझदार व्यक्ति के बारे में यह बात कुछ अशों में ठीक हो सकती है पर एक छोटा बालक भी मौत से घबराता है। बालक की बात छोड़िए किसी भी पशु. पक्षी यहाँ तक चींटी भी प्राण रक्षा के लिए प्रयत्न करती नजर आती है। ऐसा क्यों ? यह स्पष्ट प्रमाण है कि-हम जन्म जन्मान्तरों में मरते रहे हैं वही भय प्राणी के भीतर होता है इसलिए हर प्राणी मृत्यु से भय खाता है। दूसरे पुनर्जन्म के बारे में अनेक ऐसी घटनाएँ समाचार पत्रों में और पुस्तकों में प्रकाशित होती रहती हैं जिनमें अनेक लोगों ने छोटी अवस्था में अपनी पूर्व जन्म की बातें बतानी शुरू कर दीं और जो जांच करने पर सत्य पायी गईं। यह भी पुनर्जन्म के बारे में एक प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ऐसी ही एक घटना मथुरा की है। मथुरा में एक आयुर्वेदिक रसायन शाला है जो एक जमाने में बडी प्रसिद्ध थी। उसका नाम सुख संचारक कंपनी था। सुख संचारक कंपनी के मालिक जब गुजर गए तो उनके चार-पाँच पुत्र थे। उनमें

CamScanner से स्कैन किया गया

आपस में संपत्ति के बँटवारे पर विवाद खड़ा हो गया। इसी विवाद में जब बँटवारा हो गया तब एक भाई ने क्रुद्ध होकर अपने एक भाई को गोली मार कर खत्म कर दिया। गोली खाकर मरा हुआ पुत्र साल भर बाद दिल्ली में पैदा हो गया। चार वर्ष की आयु में ही उसने अपनी पूर्व जन्म की बातें बतानी शुरू कर दीं। उसके माता पिता जब उसे मथुरा ले गए जो वहाँ जाकर वह अपने घर का मार्ग स्वयं बताने लगा। घर जाकर उसने अपने उस भाई को पहचानते हुए कहा कि- तुमने ही मुझे गोली मार दी थी। अपनी पत्नी को भी उसने पहचान लिया। ऐसी एक नहीं दर्जनों घटनाएँ हैं जिनसे यह पुष्ट होता है कि हम हमेशा जन्म लेते और-मरते हैं। तीसरा हम यह देखते हैं कि-कुछ बालक जन्म से ही अति तीव्र बुद्धि होते हैं तो कुछ अल्प बुद्धि। क्यों कि-ज्ञान के संस्कार जन्म जन्मान्तरों में हमारे साथ चलते हैं। इसी से कोई बुद्धिमान और कोई मूर्ख होता है। मूर्ख व्यक्ति प्रायः पशु आदि अन्य भोग योनिओं से आते हैं। चौथा-एक बालक अच्छे घर में जन्म पाता है। दूसरा गरीब के घर आता है। एक को जन्म से ही सुख प्राप्त होता है तो दूसरा जीवन भर कष्ट झेलता है। इस प्रकार का भोग हमारे पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर ही बनता है। फिर हम देखते हैं कि-प्रत्येक मनुष्य की अपनी अपनी वृत्ति भी भिन्न भिन्न होती है। कोई क्रोधी होता है. कोई डरपोक होता है. तो कोई बहादुर होता है। ये वृत्तियाँ भी हमारे पूर्व जन्म के संस्कारो से ही हममें आतीं है। कभी जन

CamScanner से स्कैन किया गया

संख्या बढ़ती और घटती है यह भी हमारे पूर्व जन्मों के फल के अनुसार ही होता है। जन संख्या के बढ़ने और घटने से कोई ये समझ कि-आत्मा नाशवान है यह सर्वथा भ्रम है।

इस अनन्त सृष्टि में कितने लोक लोकान्तर हैं। कभी कहीं और कभी कहीं घटना और बढ़ना साधारण बात है। और लोकों की बात छोड़िए। इस धरती पर ही पहले कभी हमारे देश में गायों की संख्या प्रति मनुष्य के पीछे १०-१५ तक होती थी जब कि अब गायों की संख्या नगण्य हो गई है। मनुष्य की संख्या के मुकाबले कीट. पतंगों की संख्या का कोई हिसाब भी संभव नहीं है। किसी की संख्या घटे और किसी की बढे इसे घटना. बढ़ना नहीं माना जा सकता।

यदि आत्मा को भी हम पैदा होने वाली मान लें तो फिर प्रश्न होगा कि-आत्मा किस तत्व से बनती है ? फिर वह तत्व किससे बनता है इसका कोई उत्तर संभव नहीं है। युक्ति पूवक सोचने के बाद आत्मा को अमर ही मानना पडेगा। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि-संसार में हम देखते हैं कि-कोई आत्मा मनुष्य का जन्म पाती है तो कोई पशु का. कोई पक्षी का. कीट. पतंगे आदि का। इसका क्या कारण है ? आइए हम विस्तार से थोड़ा इस संबन्ध में विचार करें।

हम संसार में दो प्रकार की योनियाँ स्पष्ट रूप से देखते हैं। एक तो कर्म योनि और दूसरी भोग योनि।

CamScanner से स्कैन किया गया

कर्म योनि में हम स्त्री और पुरुष को देखते हैं। मनुष्य योनि में हम कार्य करने की स्वतंत्रता को प्रत्यक्ष देखते हैं। आदमी यहाँ काम करने में स्वतन्त्र होता है। वह जो चाहे खाए. जो चाहे पिए. जो चाहे न पिए। चाहे जहाँ इच्छा हो घूमे। वह धरती से ऊपर चन्द्रलोक भी जा सकता है। यह योनि बुद्धि प्रधान कर्म योनि कहाती है।

दूसरी योनि हम देखते हैं भोग योनि की। मनुष्येतर जितने भी प्राणी हैं वे सब भोग योनि के हैं। उनकी हर क्रिया स्वाभाविक व सीमित होती है। उनकी हर व्यवस्था किसी दूसरे के द्वारा पूर्व निर्धारित होती है। इनके पास न तो विवेक शक्ति होती है न ही विशेष बुद्धि। बस जो ज्ञान उन्हें स्वाभाविक रूप से शैशव में दिया गया वे उसका विकास भी नहीं कर पाते। एक सीमित व्यवस्था में वे खाते. पीते. सोते. जागते. किसी से डरते किसी को डराते और बच्चों को जन्म देने तक इनके जीवन का क्षेत्र सीमित है। जैसे कहा भी जाता है।

आहार निद्रा भय मैथुनंच. सामान्यमेतद् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषां अधिको विशेषो. धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।

आहार. निद्रा. भय. और मैथुन ये बातें तो मनुष्य और पशु में समान रूप में पायी जाती हैं पर मनुष्य में जो अपनी धर्म और नियम की व्यवस्था है वह विशेष है।

CamScanner से स्कैन किया गया

अब यहाँ यह विचार करना होगा कि-आत्मा को मनुष्य योनि या कर्म योनि कब मिलती है और कब भोग योनि प्राप्त होती है।

वास्तव में मनुष्य योनि या कर्म योनि एक परीक्षा भवन के समान है। जहाँ विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर देने में स्वतंत्र है। उसकी इस स्वतन्त्रता में कोई हस्तक्षेप नहीं करता। परमात्मा ने मानव जीवन को एक कर्म क्षेत्र के रूप में निर्मित किया है। हमें यहाँ कर्म करने की पूरी आजादी है। यह आजादी अपने सामर्थ्य और योग्यता के अनुसार ही हम प्राप्त कर सकते हैं। हमारी स्वतन्त्रता भी यद्यपि बहुत विस्तृत है फिर भी असीम नहीं है। एक सीमा तक हम स्वतन्त्र हैं। इसीलिय हमें बुद्धि का भी वरदान मिला हुवा है। जो अच्छे और बुरे का विवेक कर सकती है। इस मानव देह में आकर हम जैसे भी कर्म करते हैं उसके अनुसार हम अगला जन्म पाते हैं।

कुछ कार्य तो हम प्रत्यक्ष रूप में अपनी कर्मेन्द्रियों द्वारा करते हैं। ये शारीरिक कर्म होते हैं इस कार्य में हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ हमें बहुत सहायक होती हैं।

दूसरा कर्म हम अप्रत्यक्ष रूप में मन द्वारा विचारों के रूप में करते रहते हैं। हमारे द्वारा किए हर कर्म और हर विचार का संस्कार निरन्तर हमारी आत्मा पर पड़ा करता है। जैसे प्रिण्टिग मशीन कागज पर छाप डालती है। वैसे ही हमारे सूक्ष्म से सूक्ष्म कार्य व विचार की एक छाप हमारी आत्मा पर

CamScanner से स्कैन किया गया

पड़ जाती है। ये संस्कार हमारे भविष्य के कर्मों के लिए बीज का कार्य करते हैं। ये आत्मा पर पडे संस्कार बीज रूप में आत्मा के साथ संयुक्त रहते हैं। जो अनुकूल भूमि और वातावरण पाकर पल्लवित. पुष्पित और फलित होते चले जाते हैं। हमारे द्वारा संचित एक छोटा सा कर्म का संस्कार जब वृक्षाकार होता है तो वह बहुत भारी फल देने वाला बन जाता है। यदि संस्कार अच्छा होगा तो उसका फल भी अच्छा व सुखदायी होगा। संस्कार बुरा होगा तो फल भी बुरा व दुःखदायी होगा। ध्यान देने योग्य बात यह है कि-हमारे द्वारा किए कर्मों की अपेक्षा हमारे मन के द्वारा वैचारिक रूपेण किए कर्मों का संस्कार अधिक प्रभावशाली होता है। अतः वैचारिक शुद्धता तथा मानसिक पवित्रता की ओर हमें बहुत अधिक ध्यान देना चाहिए। हमारी सूक्ष्म इच्छाएँ हमारी वृत्तियों के. स्वभाव के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः कर्मों से भी अधिक ध्यान मन को शिव संकल्पमय बनाने पर देना चाहिए। जिससे कर्म का मूल आधार ही श्रेष्ठ व उत्कृष्ट हो जाए।

मानव जीवन कोई साधारण तमाशा व खेल नहीं है। यह जीवन बहुत ही महत्वपूर्ण होता है. जो हमारे युगों युगों के भविष्य को बनाने वाला होता है। पूर्ण कर्म क्षय होने अथवा पाप और पुण्य के समान होने अथवा पाप के कम और पुण्य के अधिक होने पर हमें मानव जन्म प्राप्त होता है। जैसे जैसे हमारे पाप बढ़ते है और पुण्य घटते हैं वैसे वैसे हम नाना प्रकार की भोग योनियों में चले जाते हैं। पाप और

CamScanner से स्कैन किया गया

पुण्य का निर्माण हमारे कर्मों से ही होता है । सत्कर्मों से पुण्य और बुरे कर्मों से पाप का निर्माण होता है । पाप दुखदायी और पुण्य सुखदायी होता है ।

मनुष्य जन्म के नौ स्तर हैं । तीन प्रकार के गुण होते हैं एक सत्व. दूसरा रज और तीसरा तम । इन तीनों गुणों के भी तीन तीन विभाग हैं । जैसे उत्तम. मध्यम और निकृष्ट । उत्तम सत्व. मध्यम सत्व और निकृष्ट सत्व । इसी प्रकार उत्तम रज. मध्यम रज और निकृष्ट रज । उत्तम तम. मध्यम तम और निकृष्ट तम । इस प्रकार सभी मनुष्य अपनी वृति और संस्कार से अपनी अपनी योनी को प्राप्त करते चले जाते हैं । ये हमारे जीवन की नौ सोपान है. श्रेणियाँ हैं । कभी मनुष्य श्रेष्ठ विचार व कर्म से ऊपर और गन्दे विचार और कर्म से नीचे की योनि में भी पहुँच जाता है ।

इस स्थिति को समझने के लिए एक खेल का हमें स्मरण हो आया । इस खेल 'को साँप सीढी' का खेल कहते हैं । इस खेल में खानें होते हैं और गिट्टी के अनुसार हम आगे के स्थानों में बढ़ते हैं । यदि हम किसी सीढी के खाने में पहुँच जाते हैं तो हम ऊपर चढ़ जाते हैं और कहीं साँप के मुख वाले खानें में हमारी गिट्टी पहुँच गई तो नीचे चले जाते हैं । बस हमारा जीवन साँप सीढी के खेल के समान अच्छी और बुरी वृत्तियों के चक्र में चलता है । सत्य ज्ञान. सत्य आचरण और सत्य उपासना हमें सीढी के समान ऊपर ले जा सकती है और

CamScanner से स्कैन किया गया

असत्य ज्ञान और असत्य आचरण और असत्य उपासना से हम साँप के मुख के समान नीचे भी जा सकते हैं। हम यहाँ मानव जीवन की इन नौ प्रकार की श्रेणियों को गिनाते हैं. जो मनुस्मृति में बताई गई हैं –

इससे हम अपनी वृत्ति और आचरण को देख कर अपनी श्रेणी का पता स्वयं भी लगा सकते हैं। अत्यन्त पुरुषार्थ से मानव जीवन में हमें सदा आगे बढ़ने या फिर पीछे हटने के अवसर सुलभ होते हैं।

अपनी वृत्ति और आचरण के सुधार के लिए हमें पैसे की आवश्यकता नहीं होती। ये तो गुणों को ग्रहण और दोषों के परित्याग से ही संभव होता है। इसमें अमीर- गरीब का भेद नहीं होता।

मनुष्य की वृत्ति के निर्माण में कान और आँखों की भूमिका मुख्य होती है। हम जैसा सुनते व देखते हैं अनायास हम वैसे ही बन जाते हैं।

सबसे पहले हमें सत्वगुण किसे कहते हैं ? उसकी क्या कसौटी है ? जान लेना चाहिए –

सत्व का मतलब - शान्त प्रकृति. पवित्रता. सद्विद्या एवं सद्विचार। सुखी जनों से मित्रता. दुःखी जनों पर दया. पुण्यात्माओं से हर्षित होना व सत्संग करना. दुष्टात्माओं से न प्रीति न वैर। यह सत्व गुण के द्योतक हैं। रजोगुणी वृत्ति की

CamScanner से स्कैन किया गया

कसौटी - ईर्ष्या. द्वेष. काम. अभिमान और विक्षेप युक्त होना. है। तमोगुण का द्योतक मनुष्य में क्रोध. मलिनता आलस्य. प्रमाद आदि दोषों का बढ़ना है। यह भी निश्चय जानना चाहिए कि · मनुष्य मन से जिस शुभ या अशुभ कार्य को करता है उसको मन का. वाणी से किए को वाणी का और शरीर से किए को शरीर के सुख दुःख के रूप में भोगता है। मानसिक पाप पुण्य का फल मन में दुःख सुख का होना। वाणी से किए का फल वाणी के सुख दुःख और शरीर के किए कर्मों का फल जिस जिस अंग से करता है उस उस अंग को अवश्य ही भोगना पड़ता है। मन - वाणी और शरीर के जिस अंग में कष्ट हो जिस अंग से दु:ख हो जानो कि वह उस अंग द्वारा किए किसी पाप या पुण्य का फल है।

जो नर शरीर से चोरी. पर स्त्री गमन. श्रेष्ठों को मारने आदि दुष्ट कर्म करता है उस को वृक्षादि स्थावर का जन्म. वाणी से किए पाप कर्मों से पक्षी और मृगादि तथा मन से किए दुष्ट कर्मों से चाण्डाल आदि का शरीर मिलता है। जो गुण इन जीवों के देह में अधिकता से वर्तता है वह गुण उस जीव को अपने सदृश कर लेता है।

जब आत्मा में ज्ञान हो तब सत्व. जब अज्ञान रहे तब तम और जब राग. द्वेष में आत्मा लगे तब रजोगुण जानना चाहिए। ये तीन प्रकृति के गुण सब संसारस्थ पदार्थों में व्याप्त हो कर रहते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

जब आत्मा में प्रसन्नता. मन प्रसन्न तथा शान्त हो तब समझना चाहिए कि सत्व गुण प्रधान है तथा रजोगुण. तमोगुण अप्रधान है । जब आत्मा और मन दुःख संयुक्त. प्रसन्नता रहित विषय में इधर-उधर गमन. आगमन में लगे तब समझना कि रजोगुण प्रधान और सत्वगुण. तमोगुण अप्रधान है ।

जब मोह अर्थात् साँसारिक पदार्थों में फँसा हुआ आत्मा और मन हो. जब आत्मा और मन में कुछ विवेक न रहे. विषयों में आसक्त. तर्क-वितर्क-रहित. जानने के योग्य न हो तब निश्चय समझना कि इस समय हम में तमोगुण प्रधान और सत्व गुण तथा रजोगुण अप्रधान है ।

अब जो इन तीन गुणों का उत्तम मध्यम और निकृष्ट फलोदय है उस को कहते हैं –

जो वेदों का अभ्यास. धर्मानुष्ठान. ज्ञान की वृद्धि. पवित्रता की इच्छा. इन्द्रियों का निग्रह. धर्म क्रिया और आत्मा का चिन्तन होता है यही सत्वगुण का लक्षण है । जब रजोगुण का उदय और तमोगुण का अन्तर्भाव होता है तब आरंभ में रुचिता. धैर्यत्याग. असत् कर्मों का ग्रहण. निरन्तर विषयों के सेवन में प्रीति होती है । तभी समझना कि हम में रजोगुण प्रधानता से वर्त रहा है । जब तमोगुण का उदय और दोनों अन्य गुणों का अन्तर्भाव होता है तब अत्यन्त लोभ अर्थात् सब पापों का मूल बढ़ता. अत्यन्त आलस्य और निद्रा. धैर्य का नाश. क्रूरता का होना. नास्तिक्य अर्थात् वेद और ईश्वर में श्रद्धा का न रहना.

CamScanner से स्कैन किया गया

भिन्न भिन्न अन्तःकरण की वृत्ति और एकाग्रता का अभाव और किन्हीं व्यसनों में फँसना होवे तब तमोगुण का लक्षण विद्वान् को जानना योग्य है।

जब अपना आत्मा जिस कर्म को करके या करते हुए और करने की इच्छा से लज्जा, शंका और भय को प्राप्त होवे, तब जानो कि हम में प्रवृद्ध तमोगुण है।

जिस कर्म से इस लोक में जीवात्मा पुष्कल प्रसिद्धि चाहता, दरिद्रता होने में भी चारण भाट आदि को दान देना नहीं छोड़ता, तब समझना कि हम में रजोगुण प्रधान है। जब मनुष्य का आत्मा सब से ज्ञान और गुण ग्रहण करता जाये, अच्छे कर्मों में लज्जा न करे और जिस कर्म से आत्मा प्रसन्न होवे अर्थात् धर्माचरण में ही रुचि रहे तब समझना कि हम में सत्व गुण प्रबल है। तमोगुण का लक्षण काम, रजोगुण का अर्थ-संग्रह की इच्छा और सत्व गुण का लक्षण धर्म-सेवा करना है। तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सत्वगुण श्रेष्ठ है। अब जिस जिस गुण से जिस जिस गति को जीव प्राप्त होता है उस उस को लिखते हैं।

जो मनुष्य सात्विक हैं वे देव अर्थात् विद्वान्, जो रजोगुणी होते है, वे मध्यम मनुष्य और जो तमोगुण युक्त होते है वे नीच गति को प्राप्त होते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

जो अत्यन्त तमोगुणी हैं वे स्थावर वृक्षादि कृमि-कीट. मत्स्य. सर्प. कच्छप. पशु और मृग के जन्म को प्राप्त होते हैं। जो मध्यम तमोगुणी हैं वे हाथी. घोड़ा. शूद्र. म्लेच्छादि निन्दित कर्म करनेहारे सिंह. व्याघ्र वराह अर्थात् शूकर के जन्म को प्राप्त होते हैं।

जो उत्तम तमोगुणी हैं वे चारण [कवि खुशामदी] सुन्दर पक्षी. दाम्भिक पुरुष अर्थात् अपने सुख के लिए अपनी प्रशंसा करने हारे. राक्षस जो हिंसक. पिशाच. अनाचारी अर्थात् माँसादि आहार कर्ता और मलिन रहते हैं यह उत्तम तमोगुणी कर्म का फल है।

जो अधम रजोगुणी हैं वे झल्ला अर्थात् तलवार आदि से मारने वा कुदार आदि से खोदने हारे. मल्ला अर्थात् नौका आदि के चलाने वाले. नट. जो बाँस आदि पर कला. कूदना चढ़ना-उतरना आदि करते हैं। शस्त्रधारी भृत्य और मद्य पीने में आसक्त हो. ऐसे जन्म नीच रजोगुण का फल है। जो मध्यम रजोगुणी होते हैं वे राजा. क्षत्रिय वर्णस्थ राजाओं के पुरोहित. वाद विवाद करने वाले [वकील. बैरिस्टर] दूत. युद्ध विभाग के अध्यक्ष आदि का जन्म पाते हैं।

जो उत्तम रजोगुणी हैं वे गन्धर्व [गानेवाले] गुह्यक [वादित्र बजाने हारे] यक्ष [धनाढ्य] विद्वानों के सेवक और अप्सरा अर्थात् उत्तम रूप वाली स्त्री का जन्म पाते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

जो तपस्वी. यति. संन्यासी. वेदपाठी विमान के चलाने वाले. ज्योतिषी और दैत्य अर्थात् देह पोषक मनुष्य होते हैं उन को प्रथम सत्वगुण के कर्म का फल जानो।

जो मध्यम सत्वगुण युक्त होकर कर्म करते हैं. वे जीव. यज्ञकर्ता. वेदार्थ वित् विद्वान्. विद्युत् आदि और साध्य-कार्य सिद्धि के लिए सेवन करने योग्य अध्यापक का जन्म पाते हैं।

जो उत्तम सत्वगुण युक्त होके उत्तम कर्म करते हैं वे ब्रह्मा सब वेदों के वेत्ता. विश्वसृज-सब सृष्टि क्रम की विद्या को जानकर विविध विमानादि यानों को बनाने हारे. धार्मिक. सर्वोत्तम. बुद्धियुक्त. और अव्यक्त के जन्म और प्रकृति वशित्व सिद्धि को प्राप्त होते हैं।

जो इन्द्रिय के वश होकर विषयी. धर्म को छोड़कर अधर्म करने हारे अविद्वान् हैं. वे मनुष्यों में नीच जन्म-बुरे बुरे दुःख रूप जन्म को पाते हैं। इस प्रकार सत्व. रज और तमोगुणयुक्त वेग से जिस जिस प्रकार जीव कर्म करता है उस उस को उसी उसी उसी प्रकार फल प्राप्त होता है। जो मुक्त होते हैं वे गुणातीत अर्थात् सब गुणों के स्वभावों में न फँसकर महायोगी होकर मुक्ति का साधन करें।

बहुत ही स्पष्ट रूप से हमने मनुष्य के कर्म फल चित्र को देख लिया है। इसलिए हमें आज ही से अपनी वृत्तियों को सुन्दर से सुन्दर बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। यथा सभव हमें

CamScanner से स्कैन किया गया

सत्वगुण की श्रेणी में आने के लिए आज ही से प्रयत्न आरंभ कर देना चाहिए। चाहे आपका दो घण्टे का ही जीवन शेष हो पर हमें इसी क्षण से अपने को बदलने में प्रवृत्त हो जाना चाहिए। जितना हम अपने को बुराईयों से बचा लेंगेउतना ही हमारा भविष्य उज्वल होगा। पर ध्यान रहे कि-जीवन की साधना शुरू होती है आहार से। 'आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि' अपने आहार को सुधारना अत्यन्त जरूरी है। आत्मा की उन्नति के लिए परमात्मा की स्तुति. प्रार्थना. उपासना भी अत्यन्त आवश्यक है। जैसे अग्नि के पास जाने से हम गरम हो जाते हैं वैसे ही परमात्मा के निकट बैठने से हम अपने को बहुत शीघ्र ही सुधार सकते हैं। क्योंकि हमारे सब कर्मों के साक्षी तो वही प्रभु हैं। जब हम हृदय से अच्छे बनना चाहेंगे और ईमानदारी से अच्छे बनने की कोशिश करेंगे तो निश्चय जानिए कि-प्रभु हमारी सब प्रकार से सहायता करते हैं और प्रभु के निकट जाकर हम धीरे धीरे पवित्र होते चले जाते हैं।

अब प्रश्न यह पैदा होता है कि-क्या हमें हमारे किए कर्मों का फल अभी मिल जाता है या अगले जन्म में मिलता है। हमारे कर्म तीन प्रकार के होते हैं एक संचित कर्म. दूसरे क्रियमाण और तीसरे प्रारब्ध। एक तो प्रत्येक कर्म का फल हमें कर्म के साथ ही साथ मिलता जाता है। जैसे आज हमने अग्नि में हाथ डाला तो हमारा हाथ अग्नि में डालते ही जल जाता है। ऐसा तो नहीं होता कि-हमने आज अग्नि में हाथ डाला था और एक महीने बाद हमारा हाथ जलेगा। ऐसे क्रियमाण कर्मों

CamScanner से स्कैन किया गया

के फल. कर्म के साथ ही मिलने आरंभ हो जाते हैं। किन्तु आज हमारा हाथ जल कर बेकार हो गया अब इसका फल कितना दीर्घ कालिक होगा कल्पना कीजिए।

हमारा प्रत्येक कर्म चाहे वह शरीर से किया गया हो चाहे वाणी से चाहे मन से. हर कर्म का एक संस्कार बीज रूप में हमारी आत्मा के साथ संयुक्त हो जाता है। यह संस्कार ही हमारा सचित कर्म बन जाता है। प्रत्यक्ष कर्म के फल से भी कहीं अधिक दु:खदायी ये संस्कार रूपी बीज होते हैं। इन संस्कारों की भिन्न श्रेणियाँ है। जैसे हर चोरी एक ही बीज में संस्कार में संग्रहित होती है। एक प्रकार के कर्म एक ही संस्कार को और अधिक शक्तिशाली बनाते चले जाते हैं। जो संस्कार जितना गहरा होगा वह उतना ही शीघ्र फलीभूत होगा। ऐसे संचित संस्कार हमें इस जन्म में ही नहीं जन्म जन्मान्तरों में भी सुख दु:ख प्रदान करते रहते हैं। इसमें जो संस्कार पूरे पक जाते हैं वे हमारे प्रारब्ध का. भाग्य का निर्माण करते हैं। परिपक्व संस्कारों के फल हमें भोगने ही पड़ते हैं। संचित संस्कारों को हम अपने प्रयत्न से शिथिल व प्रभावहीन कर सकते हैं।

जैसे कोई रोग जब तक साधारण होता है तो वह चिकित्सा से ठीक हो जाता है पर जब वह सीमा से परे हो जाता है तब वह असाध्य हो जाता है। असाध्य संस्कारों के फल भोगने ही होते हैं। साध्य संचित संस्कारों को हम सदा-

CamScanner से स्कैन किया गया

चरण व सत्य ज्ञान द्वारा बदल सकते हैं और प्रत्येक कर्म का प्रत्यक्ष फल सुख व दुःख के रूप में हमें प्रत्यक्ष मिलता ही चला जाता है। इस जन्म के संपूर्ण अच्छे और बुरे कर्मों से हमारा सूक्ष्म शरीर उसी के अनुरूप बनता चला जाता है। यह सूक्ष्म शरीर जैसा बन जाता है वैसा ही हम अगला जन्म प्राप्त कर लेते हैं। वर्तमान जन्म हमारे अगले जन्म की तैय्यारी का है। हमारे अगले जन्म का नक्शा हमारे ज्ञान, कर्म और उपासना से इसी जन्म में बनता जाता है और उसी सूक्ष्म शरीर के आधार पर हम अगला जन्म प्राप्त कर लेते हैं। यदि हमने पाप अधिक किए हैं तो हमारी योनी मानव कोटि से नीचे चली जाएगी और पाप पुण्य बराबर या अधिक होगें तो उसी के अनुरूप हम उत्तम मानव जन्म प्राप्त कर लेंगे। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि-संसार में हम देखते हैं अनेक बार अच्छे कर्म करने वाले लोग कष्ट उठाते हैं और बुरे कर्म करने वाले आनन्द उठाते हैं। फिर इस कर्म व्यवस्था पर कैसे विश्वास करें ?

आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि-यदि हम कोल्हू में मूंग फली डालेंगे तो मूंग फली का तेल ही निकलेगा और तिल डालेगें तो तिल का तेल निकलेगा यदि ऊपर मूंगफली डाली

CamScanner से स्कैन किया गया

गई है और नीचे तिल्ली का तेल नजर आए तो निश्चित रूप से जानिए कि-पहले अवश्य तिल्ली का ही तेल निकाला गया है और बाद में अब मूंग फली डाली गई है अभी उसका तेल निकाला नहीं है किन्तु शीघ्र निकलेगा।

ठीक इसी प्रकार कोई आदमी गलत ढंग के काम करके भी सुखी है तो यह सुख उसके पहले के कर्मों का परिणाम है। जो अच्छे काम उसने पहले किए हैं। किन्तु आज जो बुरे काम कर रहा है उसका फल उसे दुःख के रूप में ही आगे अवश्य भोगना पडेगा और इसी प्रकार आज अच्छे कर्म करने वाला व्यक्ति दुःखी है तो वह दुःख पहले किए बुरे कर्मों का फल है। आज के अच्छे कर्मों का फल उसे आगे अवश्य अच्छा ही मिलेगा। यह बात निश्चित है कि-बुराई का फल बुरा होगा और भलाई का भला फल होगा।

अतः गलत ढंग के नतीजों को सामने रख कभी बुरे कामों में प्रवृत्त मत होइए। याद रखिए कि-हर बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है। परिणाम में देर हो सकती है पर परिणाम कभी उलटा नहीं हो सकता।

वास्तव में अच्छे और बुरे काम की कसौटी ही यही है कि-जिस काम के करने से आरंभ में सुख या आनन्द और अन्तिम

CamScanner से स्कैन किया गया

परिणाम दुःखदायी हो वह काम बुरा है। जिस काम के करने में आरंभ में कष्ट पर अन्तिम परिणाम सुखकर होता है वह काम अच्छा होता है। इसलिए कभी किसी बुरे काम में लगे व्यक्ति को सुखी देखकर यह मत समझिए कि-बुरे का फल भी अच्छा होता है। क्यों कि-बुरे कर्मों में आरंभ में जो सुख मिलता है उसे देखकर प्रायः लोग बुराई में प्रवृत्त हो जाते हैं और धोखा खाकर अन्ततः पश्चाताप करते हैं। स्मरण रखिए जिस काम के करते हुए भीतर से भय. शंका. लज्जा. अनुत्साह जगता है वह काम भूल कर मत कीजिए और जिस काम के करने में हर्ष. उत्साह निर्भयता जगे वह कार्य उत्तम होता है। कृपालु परमेश्वर भीतर बैठ कर हमें ही नहीं प्रत्येक प्राणी के हृदय में सदा सत्प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। हमें भीतर से गलत कर्मों को न करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। उस प्यारे प्रभु की अन्तः प्रेरणा की अवहेलना कर स्वार्थी मनुष्य पापाचरण में प्रवृत्त हो जाता है और नाना प्रकार के कष्टों को भोगता है। कर्म फल की इस व्यवस्था को समझकर जो व्यक्ति कष्ट उठाकर भी सत्य मार्ग पर चलेगा अन्त में उसके जीवन में सुख और शान्ति होगी। वह मानव जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रायः जब हम किसी प्रभावशाली महापुरुष सन्त, महात्मा का उपदेश सुनते हैं या किसी उत्तम पुस्तक को पढ़ते अथवा सुनते हैं तो सहसा हमारे भीतर कुछ क्षण के लिए सत्व गुण जाग उठता है। हमारे भीतर बुराइयाँ को त्याग देने और अच्छे गुणों को धारण कर उत्तम आचरण करने के संकल्प जाग उठते हैं। ऐसे समय हम भीतर ही भीतर अच्छे बनने का संकल्प धारण करते हैं। किन्तु फिर जब हम कुछ काल बाद अथवा कुछ दिनों बाद फिर अपने शुभ संकल्पों के प्रतिकूल पुनः बुराइयों में प्रवृत्त हो जाते है। इस दुर्बलता का मूल कारण हमारा आलस्य, विषयों में फँसी हमारी इन्द्रियाँ और मुख्य रूप से हमारा दुर्बल मन ही होता है।

अतः जब मन हमें भीतर से अच्छाइयों के प्रति दुर्बल बनाता है तब तब हमें मन की प्रताड़ना करनी चाहिए। मन की भर्त्सना व इसे नाना प्रकार से दण्डित करना चाहिए। जब इस प्रकार आत्मा मन को प्रताड़ित करता है तब मन फिर आत्मा के अनुकूल आचरण करने लग जाता है। अतः अपनी वृत्ति और संस्कारों की पवित्रता के लिए हमें अपने मन पर कठोर नियन्त्रण स्थापित करना चाहिए।

इस प्रकार जो मनुष्य मन को अनुशासित कर लेता है वह ही जीवन में महान सफलताओं और सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है।

अतः अपने शिव संकल्पों पर दृढ़ रहने के लिए हमें मन के बहकावे में नहीं आना चाहिए और कष्ट सहकर और तप करके निरन्तर अच्छे मार्ग पर ही चलना चाहिए। उन्नति का एक मात्र यही मार्ग है।

CamScanner से स्कैन किया गया

१०

–मानव जीवन का उद्देश्य

प्यारे परिवार के प्यारे सदस्यो ! पिछले दिनों में निरन्तर हमें ज्ञान की अनेक बातें सुनने को मिलीं । यदि हम सब कुछ जानकर भी मानव जीवन के उद्देश्य को न जान सकें और उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयत्न न करें तो हमारा जीवन व्यर्थ हो जाएगा ।

अपने प्रिय की मृत्यु को देख कर स्वाभाविक रूप से एक प्रश्न हमारे भीतर उठता है कि-क्या एक दिन हम भी ऐसे ही मर जाएँगे ?

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम आपने सुना होगा । वास्तव में महर्षि स्वामी दयानन्द इस युग के सबसे महान दिव्य पुरुष थे । जिन्होने अपना न तो कोई नया पन्थ चलाया न कोई चेली चेला बनाया । उन्होने स्पष्ट लिखा है कि-मैंने जितनी बातें बतायीं हैं वे सब प्राचीन ऋषि मुनियों और वेद शास्त्रों की है ।

CamScanner से स्कैन किया गया

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का बचपन का नाम मूल शंकर था। बालक मूल शंकर जब छोटे थे तब एक दिन अपने घर से बाहर कहीं गए थे तब अचानक उनकी छोटी बहन को हैजा हो गया। जब वे घर लौटे और देखा कि-सारे घर में करुण क्रन्दन, रोना धोना मचा हुआ है और पता चला कि-उनकी बहन की मृत्यु हो गई है। उनके जीवन में यह पहली मृत्यु की घटना थी। उन्हें पूछने पर बतलाया गया कि-संसार में एक दिन सबको इस मृत्यु का शिकार होना ही पड़ता है? इस घटना को देख व सुनकर बालक मूल शकर के हृदय में एक खलबली सी मच गई। परिवार के सब सदस्य रो रहे थे पर बालक मूल शंकर एक कोने में पत्थर की भान्ति मौन खडे रहे। वे सोच रहे थे कि-मृत्यु क्या है?

अभी इस घटना को कुछ ही दिन बीते थे कि-बालक मूल शंकर के चाचा का भी देहान्त हो गया। चाचा मूलशंकर को अत्यधिक स्नेह करते थे। इस बार बालक मूलशंकर भी फूट फूट कर रोए और उन्होंने निश्चय किया कि-मैं मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का उपाय खोजूँगा। जिस से संसार इस कष्ट और दुःख से बच सके। सारा जीवन वे इसी खोज में रहे। अगाध ज्ञान प्राप्त कर उन्होंने अन्त में मृत्यु से बचने का उपाय खोज निकाला। अब हम सब जानते हैं कि-संसार में हम सबको एक दिन मर जाना है। किन्तु हममें से बहुत कम लोग जानते हैं कि मृत्यु से बचने का भी एक उपाय है। क्या मौत से भी बचा जा सकता है? हम बडी विनम्रता किन्तु दृढ़ता से

CamScanner से स्कैन किया गया

कहना चाहेगें कि-हाँ मृत्यु पर भी हम विजय प्राप्त कर सकते हैं। वेद में एक स्थान पर आता है कि-

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युं अपाघ्नत ।

परमात्मा में गति करके मनुष्य मृत्यु को भी दूर हटा देता है। परमात्मा को प्राप्त करना सबसे बड़ा तप है।

हम प्रतिदिन स्तुति प्रार्थना. उपासना के तीसरे मन्त्र में पढते हैं कि-'यस्य च्छाया अमृतं' जो उसकी छाया में चला जाता है वह अमृत हो जाता है। वह फिर मरता नहीं।

परन्तु भगवान को पाने के लिए कुछ शर्तें हैं। देखिए परमात्मा ने स्वयं वेदों में इन शर्तों को रख दिया है। जो इन शर्तों को मानेगें उन्हें प्रभु मृत्यु के चक्र से छुड़ा देते हैं। वेद में प्रभु स्वयं कहते हैं –

स्तुता मया वरदा वेदमाता
प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्ति द्रविणं, ब्रह्म
वर्चसं मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्म लोकम् ।

प्रभु कहते है–हे संसार के लोगो सुनो ! यदि तुम मृत्यु से बचना चाहते हो और ब्रह्म लोक को प्राप्त करना चाहते हो जो सात वस्तुएँ मुझे दे दो और बड़ी खुशी से इस मर्त्य लोक

CamScanner से स्कैन किया गया

से ब्रह्म लोक में आजाओ। क्यों कि – ब्रह्म लोक में जन्म - मृत्यु का चक्र ही नहीं है।

परमात्मा को पाने के लिए सबसे पहले वरदा वेद माता का स्तवन करना होगा. वेदों को पढ़ना होगा। जिससे हमें ब्रह्म लोक के नियमों का ज्ञान हो सके। बिना ब्रह्म को जाने ब्रह्म लोक को कैसे जा सकेगें? पहले ब्रह्म के सत्य. शुद्ध स्वरूप को जानना पडेगा। द्विज बनना होगा। प्रश्न है कि - द्विज किसे कहते हैं? द्विज का अर्थ है दो जन्म। जिसके दो जन्म हो जाते हैं वह द्विज कहाता है। पहला जन्म तो मां के गर्भ स और दूसरा जन्म आचार्य या गुरु के गर्भ से होता है।

आचार्य उपनयनमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः

आचार्य ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में ले जाता है अर्थात् अपने अनुशानन में ले लेता है। पहले वह परीक्षा लेता है कि - यह गर्भ में. आश्रम में रहने योग्य भी है या नहीं? योग्य छात्र को ही प्रवेश मिलता है। अयोग्य छात्रको नहीं।

ज्ञान के गर्भ से जन्म लेने वाले ऐसे विद्वानों को जिनका गुण. कर्म. स्वभाव श्रेष्ठ हैं। राग. द्वेष. ईर्ष्या. काम. क्रोध. लोभ मोह. भय. शोक. मद. अहंकार का रत्ती भर मैल उसके हृदय में न रहे। क्योंकि भगवान के पास तो हृदय को पवित्र बना कर ही जाना होगा। पावमानी सत्य ज्ञानियों को ही वेदमाता

CamScanner से स्कैन किया गया

ब्रह्मलोक जाने का अधिकार देती है। ये सात वस्तुएँ है। जिन्हें हमें प्राप्त करना और छोड़ना है। आयु –जो ब्रह्मलोक को जाना चाहता है उसे आज ही से निर्णय करना होगा कि मैं अपनी आयु का दान करता हूँ अर्थात् समस्त आयु अब परमात्मा की उपासना में लगा दूँगा प्रभु की आज्ञा के पालन में शेष आयु अर्पित करता हूँ। ज्ञान प्राप्त करके फिर समस्त आयु प्रभु को अर्पित करनी होगी। दूसरी वस्तु है प्राण. अपनी समस्त ऊर्जा. जीवनी शक्ति को. प्राणो को भी हथेली पर रख कर जीना होगा। चाहे कोई गोली मार दे. चाहे विष का प्याला पिला दे। पर सत्य का त्याग नहीं करूँगा। वह है प्राणार्पण. प्राण का दान। प्रजा-यदि तुम्हारी सन्तान है तो उसे भी ब्रह्म को अर्पित कर दो। उसके मोह का भी त्याग कर दो। आयु की कामना को अर्थात् इच्छा को. प्राणों के लोभ को. सन्तान के मोह को छोड़ना पडेगा। पशूं। पशु का अर्थ है बल. शक्ति. सामर्थ्य अर्थात् अपने अहकार को. मद को. अपनी यश और कीर्ति को। निन्दा अथवा स्तुति की भावना को और द्रविणं तुम्हारी समस्त भौतिक सपत्ति. चाहे झोंपडी हो या बंगला जो कुछ भी दौलत है. संपूर्ण दौलत का परित्याग करना होगा। इतना सब कुछ माँग लिया इतना देकर भी एक वस्तु हमारे पास है. वह है सत्य ज्ञान। सत्य ज्ञान का रहना तो आवश्यक है. पर इस ज्ञान के साथ कहीं अभिमान न जन्म ले ले जो प्रायः विद्वानों में होता है जिसे ज्ञानभिमान कहते हैं इसलिए ब्रह्म वर्चस् को भी छोडना पडेगा। कपडे उतारने का नाम निहंग नहीं है। अपितु इन सात प्रकार के आवरणों का त्याग

CamScanner से स्कैन किया गया

करके जो निर्हंग हो गया है ऐसे ब्रह्म ज्ञानी परम वैरागी. वीत-राग. सर्वस्व त्याग करने वाले के लिए ब्रह्म लोक के द्वार खुले हैं। यह याद रखिए ! जब मृत्यु आजाएगी तो अरे नादान लोगो ! तब भी तो ये सातों चीजें छीन ली जाएँगी। तो फिर स्वेच्छा से ही इनका दान क्यों न कर दिया जाए ? जिन वस्तुओं में कुछ नहीं रक्खा है उसी में हमने सब कुछ मान रक्खा है। यही है वह अज्ञान का पर्दा जिसे हम हटा नहीं पाते।

इसीलिए हम जन्म मरण के चक्र से छूट नहीं सकते। मृत्यु से बचने का एक ही तरीका है कि-जन्म से बचो ! जो जन्म से बचेगा तो फिर मरने की बात ही कहाँ रह जाती है ? किन्तु हम तो जीने के लिए ही मरते हैं। ये मौज ये मजा ये मस्ती कहाँ मिलेगी ? सुरा सुन्दरी और दौलत के पीछे पागल हुआ इन्सान जिन्दगी को कैसे छोड़ सकता है ?

किन्तु जब जबर्दस्ती इससे छुड़ा दी जाती है तो फिर इसने आगे की तैय्यारी भी कर ली है। पूछो इन पौराणिक भाइयों से ! इन्हें इन्द्र लोक में अप्सराएँ मिलेंगी। उर्वशी और मेनका की दौड़ तो स्वर्गलोक में भी है। इन प्यारे मुसलमान भाइयों को पूछो कि-जन्नत में क्या चाहिए ? हूरें और शराब। यही हैवन में ईसाइयों को भी चाहिए।

पर वेद की शिक्षा तो कुछ और है। वेद जानता है कि-जन्म और मरण के साथ भूख. प्यास. सर्दी. गर्मी. सुख. दुःख. लगा ही हुआ है। इसलिए वेद कहता है कि-हे मनुष्य सुख

CamScanner से स्कैन किया गया

और दुःख दोनों से छुटकारा पाले। इसी छुटकारे का नाम है मोक्ष या मुक्ति। अब रूढ़ि में लौकिक भाषा में निर्वाण शब्द भी मोक्ष वाची माना जाने लगा है।

मोक्ष का अर्थ ही है छुटकारा। किससे छुटकारा! दुःख से। दुःख क्या है ? सुख का ही एक दूसरा रूप। किसी को किसी वस्तु से सुख मिलता है तो दूसरे को उसी से दुःख। सुख और दुःख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए सुख-दुःख से छुटकारा पाने के लिए जन्म और मरण दोनों से ही छुटकारा माँगना होगा।

जब मनुष्य के सारे पाप क्षय हो जाते हैं और पुण्य ही पुण्य शेष रह जाते हैं तो फिर वह आत्मा ब्रह्म लोक अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

क्या मोक्ष या मुक्ति में जानेके बाद फिर आत्मा कभी जन्म मरण के चक्र में आता ही नहीं ? आता तो अवश्य है पर बहुत लम्बे समय के बाद।

हम पहले बता चुके हैं कि - इस दुनिया की आयु - चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की है। अभी तो इसे बने एक अरब छयान्नवे करोड़ आठ लाख तिरपन हजार त्रियास्सी वर्ष हो चुके है।

इस सृष्टि की कुल आयु है चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष। जब प्रलय होगा तो प्रलय भी इतने ही समय का होता है। अर्थात् एक सृष्टि और प्रलय मिलाकर आठ अरब चौसंठ करोड़

CamScanner से स्कैन किया गया

वर्ष के होते हैं। इस प्रकार छत्तीस हजार बार दुनिया बने और बिगडे यह है मोक्ष का काल या अवधि।

इतने समय तक मोक्ष प्राप्त करने वाली आत्मा जन्म-मरण के चक्र से मुक्त रह कर परमात्मा के आनन्द मे लीन रहती है। सदा आनन्द में ही मग्न रहती है।

एक सृष्टि और एक प्रलय यह परमात्मा का ब्राह्म दिन और ब्राह्म रात्रि कहाती है। ऐसे तीस दिन तीस रात का एक महिना और ऐसे तीनसौ पैंसठ दिन का एक वर्ष। ऐसे सौ वर्षों तक मोक्ष का समय वेदों में दर्शाया गया है।

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि - मोक्ष में आत्मा क्या करता है?

इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व हमें यह जान लेना चाहिए कि हमारी आत्मा के साथ जब हम जीवित होते हैं तब हमारे तीन शरीर होते हैं। एक तो स्थूल शरीर जिसे हम देखते ही हैं। दूसरा शरीर जिससे हम स्वप्न में सारे कार्य करते हैं यही सूक्ष्म शरीर हमें हमारे आगे के जन्म में नई योनि प्राप्त कराता है। जब पापों का सर्वथा क्षय हो जाता है तब यह सूक्ष्म शरीर भी नष्ट हो जाता है उस समय केवल तीसरा शरीर जो सूक्ष्माति सूक्ष्म है वही रह जाता है। इस सूक्ष्माति सूक्ष्म शरीर में केवल पाँच ज्ञानेन्द्रियों की सूक्ष्म शक्ति और बुद्धि की सूक्ष्म शक्ति इस प्रकार बस छः इन्द्रियाँ रहती हैं। कर्मेन्द्रियाँ नष्ट हो जाती हैं। स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ. पाँच कर्मेन्द्रियाँ और मन इस प्रकार ग्यारह इन्द्रियाँ होती हैं। किन्तु तीसरे सूक्ष्म शरीर

CamScanner से स्कैन किया गया

में कुल छः इन्द्रियाँ होती हैं। इस अति सूक्ष्म शरीर से आत्मा मोक्ष में सब प्रकार का ज्ञान प्राप्त करता है। क्योंकि हम आत्मा के स्वरूप में अल्पज्ञ और अल्प सामर्थ्य वाले हैं।

इस संसार में हम चाहे कितने ज्ञानी हो जाएँ पर हमारा वह ज्ञान सीमित ही होता है। संसार में बहुत से ऐसे प्रश्न रह जाते हैं जिन्हें हम जान नहीं सकते ! न समझ पाते हैं। किन्तु जब हम परमात्मा की शक्ति के साथ सयुक्त हो जाते हैं तब हम सब प्रकार की बातों का जानने व समझने का सामर्थ्य पा लेते हैं। इस ज्ञान से ही हमें आनन्द की प्राप्ति होती है।

वास्तव में ज्ञान का ही फल आनन्द है। पैसे से सुख मिलता है पर ज्ञान से आनन्द की प्राप्ति होती है। इसीलिए संसार में ज्ञानियों का सर्वत्र सन्मान होता है।

स्वदेशे पूज्यते राजा. विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

इसलिए हम आपसे आग्रह करेंगे कि-निरन्तर स्वाध्याय का व्रत लीजिए। बिना ज्ञान के मानव की उन्नति सभव नहीं है। विना ज्ञान के न कर्म होता है. न उपासना। अज्ञान से हम सत्कर्म भी नहीं कर सकते न सच्ची उपासना ही। इसलिए ज्ञान एक अनिवार्य शर्त है परमात्मा को पाने के लिए भी और संसार में जीने के लिए भी। अतः हमें निरन्तर ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

CamScanner से स्कैन किया गया

जब मोक्ष की अवधि समाप्त होती है तब वह मुक्त आत्मा फिर से संसार में जन्म लेती है। ऐसी आत्माएँ ही संसार में आकर अपने श्रेष्ठ आचरण से लोगों के दिलों को मोह लेती हैं। जिन्हें हम अवतार कह देते हैं। महापुरुष कहते है। कोई उन्हें पैगम्बर कहता है। कोई खुदा का बेटा कहता है। ऐसी आत्माएँ जन्म लेकर संसार के लोगों के हृदयों पर अपनी गहरी छाप छोड़ देती हैं। इन्हें कुछ लोग तो भगवान ही मान बैठते हैं। प्रत्येक प्राणी आनन्द प्राप्ति के लिए छटपटा रहा है। किन्तु वह इस मार्ग पर चलता नहीं। क्यों कि - इस मार्ग में बड़ा तप करना होता है। दुर्बल आत्मा इस मार्ग पर चलने से वैसे ही घबरा जाती है जैसे लोग सबेरे चार बजे उठने में ही घबराते हैं। जो चार बजे उठने का तप नहीं कर सकता वह कैसे इस रास्ते पर चल सकेगा ! आपको तो पता ही नही प्रातः चार बजे उठने का क्या आनन्द है ?कभी उठकर बाहर घूमने चले जाइए ऐसा आनन्द तो किसी पिकनिक मे भी नहीं मिल सकता।

पर मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है आलस्य. आलस्य. आलस्य। सुबह कैसे उठें ? जल्दी उठा ही नहीं जाता। आप किसी से भी यह बात सरलता से सुन सकते हैं –

जो सोवत है. सो खोवत है।

अतः जागो ? मृत्यु को लाँघने के लिए परम पुरुषार्थ करो। पुरुषार्थी. उद्योगी. परिश्रमी ही इस संसार का और परलोक के

CamScanner से स्कैन किया गया

सुख को भोगने का अधिकारी होता है। आलसी तो न दीन का होता है न दुनिया का। हिम्मत और साहस से दृढ़ संकल्प करो कि-आनन्द प्राप्ति की जो कामना हमारे हृदय में है उसे कष्ट उठाकर भी प्राप्त करके रहेंगे। परमात्मा हमें ऐसी प्रेरणा प्रदान करें कि हम भी मोक्ष को प्राप्त कर सकें।

क्यों कि–ज्ञान का ही फल आनन्द है। मोक्ष में आत्मा को आनन्द की प्राप्ति होती है इसका एक अभिप्राय यह भी है कि-मोक्ष में आत्मा को ज्ञान प्राप्त होता है।

जितने सम्प्रदाय या मतवादी जन हैं उन्होने आनन्द प्राप्ति का साधन भौतिक विषयों को ही मान रक्खा है। इसीलिए इन्होने स्वर्ग. जन्नत या हैवेन में भी सुख के रूप में सुरा और सुन्दरी की ही कल्पना कर रखा है। सुरा और सुन्दरा तो धरती पर ही मनुष्य को आनन्द नहीं दे पाते। उल्टे ये रोग. कष्ट. कलह के कारण बन जाते हैं। इस बात को प्राय: हम सभी भला प्रकार जानते हैं।

वेदों में जिस मोक्ष का उल्लेख है वहाँ आनन्द प्राप्ति ही मोक्ष का फल दर्शाया गया है। अत: यह बात स्पष्ट है कि–मोक्ष को प्राप्त कर जीवात्मा अपनी उन अनन्त जिज्ञासाओं को ज्ञान के द्वारा निवृत्त करना है जिस ज्ञान को वह अपनी क्षुद्र बुद्धि व अल्प सामर्थ्य द्वारा शरीर में रहते हुए समझ नहीं पाता या प्राप्त नहीं कर सकता। क्यों कि इस अनन्त सृष्टि में जिसका विस्तार हमारी कल्पना से भी परे है इस ज्ञान को

CamScanner से स्कैन किया गया

जानने के लिए ही हमें उस सर्वज्ञ परम ज्ञानी परमात्मा से सयुक्त होना पडेगा।

यदि हम परमात्मा की बनाई इस सृष्टि की ओर दृष्टिपात करें तो हमें पता चलेगा कि – आज का मनुष्य जो अपने आपको विश्व विजयी मान रहा है। जिस विज्ञान के आधार पर वह लोक लोकान्तरों में उड़ कर पहुँच जाना चाहता है यदि उसे प्रकाश की गति से भागने वाले वाहन मिल जाएँ तो भी वह उन दूरस्थ लोकों तक पहुँच नहीं सकता। क्यों कि उसकी आयु की सर्वाधिक सीमा केवल चार सौ वर्ष की है। इस छ टी सी अवधि में वह एक सौर मण्डल तक की यात्रा भी पूरी नहीं कर सकता। इस प्रसंग में यदि हम थोडी सी चर्चा अपने इस ब्रह्माण्ड की भी कर लें तो यह अप्रासंगिक न होगा।

हम जिसे पृथिवी या धरती माता कहते हैं जिस पर हम रह रहे हैं उस धरती की परिधि चौबीस हजार नौ सौ दो मील बतलाई जाती है। हमारी यह धरती प्रति घण्टा लगभग एक हजार मील की गति से घूम कर चौबीस घण्टे में अपनी परिधि का एक चक्कर पूरा करके दिन और रात की स्थिति का निर्माण करती है।

वैज्ञानिकों के एक अनुमान से हमारी इस धरती का वजन छियासठ की संख्या के आगे बीस शून्य लगा कर लिखें उतने टन होता है। हमारी पृथिवी से दिखाई पड़ने वाला यह सूर्य नौ करोड़ तीस लाख मील दूरी पर है। यह सूर्य इतना विशाल

CamScanner से स्कैन किया गया

है कि—इस सूर्य में हमारी पृथिवी जैसी तेरह लाख पृथिवियाँ समा सकती हैं। हमें इस पृथिवी से प्रायः रात्रि में एक चन्द्रमा नजर आता है। हमारे इस सौर मण्डल में अनेक बडे बडे ग्रह हैं। जैसे हमारी पृथिवी के साथ एक चन्द्रमा है वैसे ही मंगल ग्रह में दो चन्द्रमा हैं। इसी प्रकार गुरू के बारह उपग्रह रूप में बारह चन्द्रमा हैं। इसी प्रकार शनि ग्रह के साथ दस चन्द्रमा हैं। रात्रि में जो तारे हमें इस आकाश में नजर आते हैं ये सारे ग्रह उपग्रह खरबों मील की दूरी तक फैले हुए हैं। घनी रात में आकाश के बीच में हमें सफेद दूधिया रंग की एक पट्टी सी नजर आती है जिसे आकाश गंगा भी कहते हैं। इस आकाश गंगा में लगभग एक खरब से भी अधिक ग्रह. उपग्रह हैं। यह आकाश गंगा तो हमारे सौर मण्डल की है। पर इस प्रकार के एक खरब सौर मण्डल इस अनन्त सृष्टि में जाने जा चुके हैं। इस सृष्टि में सूर्य से भी बडे बडे नक्षत्र विद्यमान हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र का व्यास तीन हजार नौ सौ लाख मील है जब कि सूर्य का व्यास केवल आठ दशमलव चौंसठ लाख मील है। अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में एक साथ नौ करोड़ सूर्य समा सकते हैं।

एसडोराडस नामक एक और नक्षत्र का वैज्ञानिकों ने पता लगाया है। इसका व्यास सूर्य के व्यास से चौदह सौ गुना बड़ा है। यह नक्षत्र एक अरब इक्कीस करोड़ मील लम्बा है। सूर्य इसके सामने बिलकुल छोटा सा प्रतीत होता है।

लोक लोकान्तरों की दूरी को समझाने का सामर्थ्य हमारे गणित के अंकों में नहीं है अतः हमारे वैज्ञानिकों ने प्रकाश वर्ष

CamScanner से स्कैन किया गया

नाम से एक नया माप दण्ड बनाया है। जिनसे इनको दूरी को समझा जा सके।

प्रकाश की गति एक सेकण्ड में एक लाख छियास्सी हजार दो सौ बयास्सी मील होता है। एक प्रकाश वर्ष का अभिप्राय है साठ खरब मील। इस प्रकार एक सौर मण्डल से दूसरा सौर मण्डल चार दशमलव सत्रह प्रकाश वर्ष दूरी पर स्थित है इसे अपने हिसाब से गिनना चाहें तो पच्चस पर बारह शून्य लगाएं तो मील दूरी का पता चल जाएगा।

आकाश गंगा या नीहारिका मण्डल के केन्द्र से हमारे इस सूर्य की दूरी पैंतीस हजार प्रकाश वर्ष है।

एक नीहारिका मंडल में एक-एक खरब से भी अधिक नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह समूहों की गणना की गई है। ऐसे नीहारिका मंडल इस सृष्टि में एक खरब से भी अधिक हैं यहाँ तक तो हमारे आधुनिक वैज्ञानिकों की सप्रमाण कल्पना है। पर इसके आगे कुछ नहीं है ऐसा दावा कोई भी वैज्ञानिक नहीं कर सकता।

यह है इस सृष्टि का एक संख्या चित्र। इससे स्पष्ट होता है कि—मानव का प्राप्त किया हुवा सारा ज्ञान कुल मिलाकर समुद्र के सामने एक रेती के कण बराबर है। कैसी अद्भुत् है यह सृष्टि। इस अद्भुत् सृष्टि का स्रष्टा व उसका सामर्थ्य हमारी कल्पना में भी नही समा सकता। योग विद्या द्वारा हम ऐसे महान प्रभु की छवि मात्र का या थोडे से आभास मात्र

CamScanner से स्कैन किया गया

का अनुभव कर पाते है। निरन्तर साधना व तप से हमारी आत्मा. मन व हमारे संकल्प. वृत्ति व गुण. कर्म स्वभाव सर्वथा शुद्ध हो जाते हैं।

आत्मा के अज्ञान का आवरण नष्ट हो जाता है। तब हमारी आत्मा का सामर्थ्य परम पवित्र परमात्मा के सामर्थ्य से संयुक्त हो जाता है। उस सामर्थ्य से संयुक्त होकर इस संसार की सारी उत्पत्ति. स्थिति. प्रलय तथा अपने और परमात्मा के स्वरूप को प्रत्यक्ष करने के लिए एक मुक्त आत्मा को छत्तीस हजार बार सृष्टि की उत्पति और प्रलय काल तक की अवधि मिल जाती है। इस प्रकार मोक्ष में आत्मा परमात्मा और उनका ज्ञान और उसका फल आनन्द ही होता है। दुःख और अज्ञान का लेश भी वहाँ नहीं होता। यह है वह स्थिति जिसे हमें प्राप्त करना है।

इतना स्मरण रखिए कि—संसार के पदार्थों में जो कुछ भी सामर्थ्य हमें दीख पड़ता है वह उस पदार्थ का नहीं अपितु उस प्रभु पिता परमेश्वर का ही है। प्रकृति के ये कण तो उसके सामर्थ्य को प्रगट करने के साधन मात्र हैं।

इसको समझाने के लिए हम एक अत्यन्त सारपूर्ण उदाहरण देकर इस बात को यहाँ स्पष्ट करते हैं। परमात्मा के स्वरूप और नियमों को जानने के लिए हमें अपने को और अपनी शरीर की स्थिति को जानना होगा।

हम आँख से देखते हैं। कान से सुनते हैं। मुख से बोलते हैं। इस प्रकार ज्ञानेन्द्रियों से हम जो कुछ जान पाते हैं व अनुभव कर पाते हैं यह हमारा संपूर्ण ज्ञान व अनुभव ईश्वरीय सत्ता का है। परमात्मा का ही है प्रकृति का नहीं।

CamScanner से स्कैन किया गया

उदाहरण के लिए. हम पैरों से चलते हैं। पैरों में चलने का जो सामर्थ्य है वह आत्मा का है। पैर का नही है। पैर तो हमारी गति को प्रकट करने का एक माध्यम है। आँख से हम देखते हैं आँखे देखने का वैसे ही माध्यम है जैसे ऐनक देखती नहीं वैसे आँख देखती नहीं। कौन देखता है आँखों से ? जो देखता है वही आत्मा है।

इसी प्रकार सूर्य की चमक. वायु की गति. आकाश की ध्वनि. जल का या फल वनस्पतिओं का रस और नाना प्रकार के दिखाई पड़ने वाले रूप तथा धरती से प्रकट होने वाली नाना प्रकार की गन्ध. उसी प्रभु की है। इन प्रकृति के कणों की नहीं है। ये सब उस प्रभु के सामर्थ्य का बोध कराते हैं। उसके गुण. कर्म. स्वभाव और सामर्थ्य को जानना अत्यन्त आवश्यक है।

किन्तु हमारा यह ज्ञान तो अत्यन्त साधारण है। जब हम उस असीम. अनन्त. सर्वज्ञ से संयुक्त हो जाते हैं तब हम आनन्द के सागर में ज्ञान का अवगाहन कर पाते हैं।

हमारे जीवन का आन्तिम लक्ष्य है उस परम शक्ति से संयुक्त होकर असीम आनन्द को प्राप्त करना। इसी स्थिति को हम मुक्ति या मोक्ष कहते हैं। आइए हम अपने इस सत्य मार्ग पर चलने का पवित्र संकल्प करें।

जो मनुष्य देह को प्राप्त कर मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करता वह इस सुनहरे अवसर को विषय वासना में फँस कर व्यर्थ खो देता है। जीवन के इस परम सत्य को जानकर इस मानव जीवन का पूरा पूरा सदुपयोग करना ही हमारा कर्त्तव्य है।

CamScanner से स्कैन किया गया

ग्यारहवाँ दिन

११

– योग और मोक्ष

मृत्यु से मनुष्य डरता है। इस भय का मुख्य कारण जब शरीर में स्थित मुख्य पाँच प्राण असन्तुलित और अनियमित होने लगते हैं तब नाना प्रकार के कष्ट जाग उठते हैं। एक ओर प्राणो के अनियमन का कष्ट तो दूसरी और अपने आत्मीय जनों से संबन्ध समाप्त होने का मोह अत्यन्त कष्ट दायक होता है। यह वेदना जहाँ शारीरिक होती है वहाँ मानसिक उद्वेग भी कम कष्ट दायक नहीं होता और इन वेदनाओं के असंह्य हो जाने पर प्रायः मरणासन्न व्यक्ति चेतना शून्य अर्थात् बेहोश हो जाता है। चेतना शून्य होकर भी मनुष्य का आत्मा प्राण त्यागने तत्पर नहीं होता अपितु वह अपनी समग्र शक्ति से मृत्यु से जूझने लगता है। प्रत्येक प्राणी में जिजीविषा होती है जिसे जीने की अत्यन्त लालसा कहते हैं। जब आत्मा समग्र शक्ति से संघर्षरत होती है तो ऐसा लगता है जैसे उसने मृत्यु को परास्त कर दिया है। किन्तु प्राणों के असहयोग के कारण वह अकेली अधिक समय तक संघर्षरत नहीं रह पाती। किन्तु यह वह घडी होती है जब सेवा सुश्रुषा करने वाले सम-

CamScanner से स्कैन किया गया

करते हैं कि - अब मरणासन्न व्यक्ति स्वस्थ हो गया है। व्यक्ति अचानक एकदम स्वस्थ सा होने लगता है। किन्तु वास्तव में यह स्थिति प्रायः उसके बन्धन मुक्त होने का पूर्व संकेत मात्र होती है। कभी कभी मृत्यु का आक्रमण इस प्रकार अकस्मात होता है कि-मरने वाला व्यक्ति समझ भी नहीं पाता कि क्या हो रहा है? और वह सदा के लिए चल बसता है। मृत्यु के अचानक आजाने पर सोचने विचारने का अवसर भी नहीं मिल पाता ऐसी स्थिति में किसी प्रकार के संघर्ष का बोध भी नहीं हो पाता। कुछ भी हो पर मृत्यु का एक भयानक भय आत्मा पर अंकित हो जाता है।

प्रायः मानव शिशु जन्म के समय भी एक: दम नए वातवरण में आकर घबरा जाता है ? और शिशु जोर जोर से क्रन्दन कर उठता है। जहाँ रोने की क्रिया आत्मा के दुःखी होने का संकेत है वहाँ रोने की प्रक्रिया शिशु की श्वासोच्छवास प्रक्रिया को चलाने में सहायक सिद्ध होती है। इस प्रकार जन्म और मरण दोनों भी दुःखमय होते हैं और लम्बे जीवन में भी हमें नाना प्रकार के दुःखों को भोगना ही पड़ता है। इसलिए महर्षि पतंजली ने अपने योग दर्शन में स्पष्ट कहा है कि-

परिणाम ताप संस्कार दुःखै र्गुणवृत्ति
विरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः।

हर कर्म का अन्तिम परिणाम तथा नाना प्रकार के प्रत्यक्ष कष्ट व संताप. सुखकर लगनेवाले कार्यों के अन्तिम

CamScanner से स्कैन किया गया

दु:खदायी संस्कार. गुणों की वृत्तियों का परस्पर विरोध आदि से ज्ञानी पुरुष समस्त संसार को ही दु ख सागर मानते हैं।

प्यारे सदस्यो ! जरा ध्यान से विचार तो कीजिए कि-इस संसार में कौनसा ऐसा सांसारिक कार्य है जिसका अन्तिम परिणाम दु:खदायी न हो ? सदा स्मरण रखिए कि-जो वस्तु जितने अंश में हमें सुख प्रदान करती है वह अन्त में ठीक एक दम थर्मामीटर के नाप की तरह उतना ही दु:ख देती है। उदाहरण के लिए जो पति-पत्नी आपस में जितने स्नेह से रहते हैं अन्त में उनका विछोह भी उतना ही अधिक दु:खदायी होता है। दौलत संपत्ति का भी यही हाल है। सोना. आभूषण आदि जितने प्रिय लगते हैं वे ही कभी जान लेवा बन जाते हैं। इसीलिए विशेष ज्ञानी लोग सर्वस्व त्यागकर विरक्त हो जाते हैं। वे इस दु:ख सागर से छूटने के उपाय खोजते हैं। आइए हम भी आज इसी विषय पर विचार करें कि-जन्म मरण और दु:ख के इस बन्धन से कैसे मुक्त हों !

आज के वैज्ञानिकों ने चन्द्र लोक और शुक्र ग्रह मंगल ग्रह आदि तक जाने का मार्ग तो खोज लिया है पर मुक्ति का मार्ग वे भी नहीं जानते। हमारे प्राचीन ऋषि महर्षियों ने मोक्ष का मार्ग भी खोज लिया था। एक बात हम बता चुके हैं कि-हमारे संस्कार व हमारे जन्म का मुख्य आधार हमारी इच्छा शक्ति ही है। जब मनुष्य सर्वथा भीतर से इस संसार को त्यागना चाहेगा तभी वह इस वन्धन से मुक्त होने के मार्ग पर

CamScanner से स्कैन किया गया

अग्रसर हो सकता है। संसार से छूटने और परम पिता परमेश्वर से मिलने अथवा संयुक्त होने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है अष्टांग योग।

महर्षि पतंजली ने अपने योग दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के लिए आठ सोपान बताए हैं। जो कोई इन पर आचरण करेगा वह निश्चय ही परमात्मा को प्राप्त कर लेगा। क्यों कि परमात्मा आनन्द स्वरूप हैं अत: उन्हीं से संयुक्त हो जाने पर हम भी आनन्द सागर को प्राप्त कर सकते हैं। ये आठ सोपान हैं १ यम. २ नियम. ३ आसन. ४ प्राणायाम ५ प्रत्याहार. ६ धारणा. ७ ध्यान. ८ समाधि। सबसे पहले यम क्या हैं यह बतलाएँगे। अहिंसा सत्य. अस्तेय. ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यमा:। ये पांच यम कहाते हैं। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर जाने वाले के लिए पहला व्रत है अहिंसा।

अहिंसा अर्थात् प्राणी मात्र से वैर त्याग कर देना। कभी किसी को कष्ट न देना। चींटी से लेकर मनुष्य तक सबको मित्र भाव से देखना। वाणी से भी कभी किसी को कष्ट न पहुँचाना।

दूसरा व्रत है सत्य-मन. वचन. कर्म से सदा सत्य व्यवहार करना। भूलकर भी कभी असत्याचरण न करना।

तीसरा अस्तेय-पराई वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा भी न करना। दूसरों की वस्तु को स्वामी की आज्ञा के बिना न लेना।

चौथा ब्रह्मचर्य-अपनी इन्द्रियों एवं मन को सदा संयम में रखना. तथा इन्हें सदा परमात्मा की दिव्य शक्तियों में

CamScanner से स्कैन किया गया

संयुक्त करना सदा वीर्य की रक्षा करना और शरीर को तपस्वी बनाना।

पाँचवां अपरिग्रह - कम से कम आवश्यकताओं में जीवन यापन करना। किसी प्रकार की भौतिक वस्तुओं का संग्रह न करना। जीवन यापन मात्र के लिए साधनों का उपयोग।

यम के साथ साथ नियमों का पालन भी आवश्यक है। केवल यम या केवल नियमों के पालन से सिद्धि नहीं प्राप्त होती। नियमों में प्रथम है - शौच अर्थात् शुद्धता, पवित्रता। एक बाह्य शुद्धता दूसरी आन्तरिक शुद्धता। शुद्धता चार प्रकार की होती है। जलादि से शरीर की शुद्धि। सत्या चरण से मन की शुद्धि होती है। सत्य मार्ग पर चलने में जो भी कष्ट आए उसे. सहते जाना आत्मा की शुद्धि का हेतु है। और सत्य ज्ञान से बुद्धि निर्मल होने लगती है।

दूसरा नियम है - सन्तोष। अत्यन्त पुरुषार्थ के बाद जो भी परिणाम निकले उसी स्थिति में सदा सन्तुष्ट व प्रसन्न रहना। पर सत्कार्यों में कभी आलस्य न करना।

तीसरा है तप - यम और नियमों के पालन में आने वाले कष्टों को. ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को हर्ष पूर्वक सह लेना तप कहाता है।

चौथा है स्वाध्याय - आत्मा, परमात्मा और प्रकृति के रहस्यों को जानना। स्वस्थ रहने के लिए शरीर विज्ञान एवं

CamScanner से स्कैन किया गया

आयुर्वेद पढ़ना। आत्मा और परमात्मा के संदर्भ में श्रेष्ठ आध्यात्मिक साहित्य का पाठन पठन तथा आत्म निरीक्षण स्वाध्याय कहाता है।

पांचवाँ है ईश्वर प्रणिधान – हर समय प्रत्येक कार्य करते समय ईश्वर को साक्षी मानकर कार्य करना व सदा प्रभु का ध्यान. प्रभु की भक्ति में लीन रहना।

ये पांच नियम कहाते हैं। यम और नियमों का पालन करना और इनके पालन के लिए सब विध प्रयत्न करना योगाभ्यास कहाता है। योग का तीसरा सोपान है. आसन – शारीरिक आसनों द्वारा स्वास्थ्य लाभ करना तथा लगातार एक ही स्थिति में शरीर को स्थिर रखने का अभ्यास करना।

वैसे एक ही स्थिति में बिना हिले डुले खडे होना. बैठना अथवा सीध लेटने या स्थिर रहने को आसन कहते हैं। इसम सिद्धासन श्रेष्ठ माना जाता है। पैर के टखने पर टखना टिका कर सीधे बैठना। कमर को व गर्दन को सीधा रखना श्रेष्ठ आसन है। आसन के अभ्यास से मन की स्थिरता व एकाग्रता में अत्यन्त सहायता मिलती है।

प्राणायाम - श्वासोच्छ्वास का नियमन करना। सांस को गहरा व लम्बा बनाने का अभ्यास। जिस प्रकार अग्नि में तपाने से धातुओं के मल जल जाते हैं वैसे ही प्राणायाम से शरीर के दोषों का नाश हो जाता है।

CamScanner से स्कैन किया गया

दाएँ पैर की एडी को दोनों पैरों के संगम स्थान में जहाँ सीवन है रखना और बाएँ पैर की एडी को उपस्थ के ऊपरी भाग में रख कर बैठना। नीचे के टखने से ऊपर का टखना मिला लें। हाथों को घुटने पर रक्खें। हाथ की हथेली को चमच नुमा बनाकर सीध रक्खें। या दोनों हाथों को मिलाकर अथवा एक पर एक हथेली को रख पैर के पंजे पर रख लें। कमर और गर्दन सीधी हो. इसे सिद्धासन कहते हैं. बैठ जाएँ। जहाँ बैठें वह स्थान शुद्ध वायु से परिपूर्ण हो। शुद्ध वायु बहता हो ऐसे खुले एकान्त देश में बैठकर ही प्राणायाम करें। अशुद्ध वायु में कभी प्राणायाम न करें। दो व्यक्ति साथ बैठ कर प्राणायाम करें तो कम से कम एक से दूसरे के मध्य दस फीट का अन्तर अवश्य रखना चाहिए। जिससे एक दूसरे का छोड़ा हुवा श्वास एक दूसरे को हानि न पहुँचा सके।

सबसे पहले शरीर के भीतर के श्वास को तेजी से पूरा बाहर फेंक दें। जैसे तेजी से उल्टी होती है वैसे ही वायु को बलपूर्वक बाहर निकाल दें और बाहर ही रोक दें। जब श्वास को बाहर रोकें तब उपस्थ व पायु को भीतर से ऊपर को ओर खींच कर रक्खें। इससे श्वास को बाहर रोकने में सहायता मिलती है और मूलाधार एवं स्वाधिष्ठान चक्र शक्तिशाली बनते हैं।

श्वास को बाहर उतना ही रोकें जितना सरलता से रोका जा सके। फिर धीरे धीरे श्वास को भीतर लेकर पहले छाती

CamScanner से स्कैन किया गया

में भर लें फिर बाद में पेट में और श्वास को अब भीतर ही रोक दें। जब भीतर रोकें तब अपनी ठुड्डी को छाती से लगाकर गर्दन नीचे की ओर झुकाकर रक्खें। इससे भीतर श्वास देर तक रुक सकता है और सिर में वायु नहीं चढ़ पाती। सरलता से जितनी देर रोक सकें रोकें और फिर वेग से वायु को बाहर फेंक कर फिर बाहर रोक दें। इस प्रकार कम से कम तीन प्राणायाम अवश्य करें। श्वास को भीतर और बाहर रोकने के अभ्यास को धीरे धीरे बढ़ाते जाएँ।

ध्यान रखिए एक बार प्राणायाम की विधि किसी योग्य व्यक्ति से सीख लें। प्राणायाम तीन प्रकार के होते हैं। इस विधि में तीनों प्रकार का प्राणायाम हो जाता है। अंगुली या हाथ से कभी नाक को न पकडे. न दबाएँ। शास्त्र में इसका स्पष्ट निषेध है। आजकल अनेक लोगों ने अपने ढंग के प्राणायाम बना लिए हैं उनके चक्कर में न पडे। शास्त्रों के आधार पर ही करें। इसमें महर्षि स्वामी दयानन्द को प्रमाण मानें। उन्होंने महर्षि पतजली को प्रमाण मान कर प्राणायाम की विधि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका नामक ग्रन्थ के उपासना योग में लिखी है। प्राणायाम की संख्या व श्वास को रोकने के समय को धीरे धीरे बढ़ाते जाएँ। धीरे धीरे एक घण्टे तक प्राणायाम किया जा सकता है।

प्राणायाम करने वाले व्यक्ति को स्निग्ध आहार अर्थात् गाय का दूध. मक्खन. घी. आदि पदार्थों का सेवन करना चाहिए क्योंकि-

CamScanner से स्कैन किया गया

प्राणायाम से कुछ रूक्षता बढ़ती है। पर इन पदार्थों का उतना ही सेवन करें जितना आसानी से पच जाए। पेट में गॅसेस् होने पर भोजन की मात्रा कम कर दें। पेट को हलका और स्वच्छ रखना चाहिए। तली हुई वस्तुएँ न खाएँ। सात्विक और उबला हुआ भोजन करें। प्रातः सायं दो समय प्राणायाम करना चाहिए।

चौथा है प्रत्य हार – प्रत्याहार से अभिप्राय है कि - इन्द्रियों की गति व व्यवहार को दूसरी दिशा में जोडें। आँखों से देखें नहीं। आँख बन्द रक्खें। कानों से सुने नहीं। शब्द आए भी तो कान उसे न सुनें. अपने ध्यान को एकाग्र रक्खे। श्वास को एक दम मन्द गति से लें। मुख बन्द रक्खे। मौन जाप करें। किसी भी प्रकार की माला या गिनती का प्रयोग न करें। समय पर बल दें! घडी में अलार्म लगाकर वैठ जाएँ। पर माला आदि का प्रयोग न करें। माला चाहे रुद्राक्ष की हो चाहे तुलसी की हो। मालाएँ आदि सब व्यर्थ हैं। इन्द्रियों को अपने णपने विषय से हटा कर इन्हें प्रभु प्राप्ति की ओर प्रवृत्त करना ही प्रत्याहार है। खाने पीने का लोभी. सिनेमा- टी. वी. आदि देखने की प्रवृत्ति का सर्वथा त्याग। सुगन्धित इत्र तेल आदि का सेवन! रेडियो ग्रामाफोन अथवा टेप रेकार्डर सुनने की आदत सभी का त्याग करें। मौन हो वृत्तियों को अन्तर्मुखी बनाना प्रत्याहार कहाता है।

सांसारिक मनुष्य इन्द्रियों की वासनाओं के अनुरूप आचरण करता है और इन्द्रियों की इच्छाओं के तर्पण में जुटा

CamScanner से स्कैन किया गया

रहता है। किन्तु जो योग के मार्ग का पथिक है वह इन्द्रियों की इच्छाओं के प्रतिकूल चलता है। निरन्तर परमात्मा की भक्ति से उसकी इन्द्रियाँ वासना रहित होती चली जाती हैं। इन्द्रियाँ केवल शरीर के प्रति एवं व्यावहारिक कार्यों में भी कर्त्तव्य प्रधान हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में चित्त इन्द्रियों के विषयों में लिप्त न होकर अपनी साधना के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। वह इन्द्रियों की विषय संबन्धी लिप्तता का अपने योग मार्ग का अवरोध मानता है। इस प्रकार आरंभ में चित्त एवं इन्द्रियों में एक प्रकार का संघर्ष होता है। अंततः इन्द्रियाँ परास्त होकर चित्त के अनुरूप विचरण करने लग जाती हैं। अब योग पथिक के कान सिनेमा के प्रेम गीतों से हटकर उत्तम उपदेश व आध्यात्मिक चर्चा में प्रवृत्त होने लग जाते हैं। आँखे रूप के पीछे न जाकर परमात्मा की सृष्टि के कण कण में उस रचयिता की छवि को निहारने लग जाती हैं। इसी बदली हुई प्रवृत्ति का नाम प्रत्याहार है। इन्द्रियाँ चित्त की अनुवर्त्तिनी हो जाती हैं। इन्द्रियों की जो सहज शक्ति है उसका अपने उन्नयन में पूर्ण रूप से सहयोगी बनना ही प्रत्याहार है।

यह आहार एक सांसारिक व्यक्ति से सर्वथा विपरीत हो जाता है इसे ही योग की शब्दावली में प्रत्याहार कहते है।

जब चित्त और समस्त इन्द्रियाँ अपने पूरे सामर्थ्य से अपने प्रियतम प्रभु को ही पा लेने के लिए उत्सुक हो जाती

CamScanner से स्कैन किया गया

हैं। मन में प्रभु को पा लेने की उत्कट अभिलाषा जाग उठती है।

चौबीसों घण्टे प्रति पल प्रति क्षण मन परमात्मा का ही स्मरण. उसके अनुभवन के लिए प्रमत्त सा हो जाता है। हर क्षण प्रभु के स्मरण में ही वह खोने लग जाता है. मन से वह प्रभु को ही ध्याता है। इन्द्रियों का वशीकरण अर्थात् उन्हें अपने अनुरूप चलाने का अभ्यास प्रत्याहार है और चित्त को अपने अनुरूप एकाग्र कर लेना धारणा है। चित्त को एक ही स्थान पर केन्द्रित कर लेने का अभ्यास धारणा कहाती है। दोनों नेत्रों के मध्य नासिका के ऊपर ललाट में अथवा नाक के अग्रभाग में या जिह्वा के अग्रभाग में या फिर हृदय में अथवा पीठ के मध्य भाग में किसी भी एक स्थान पर चित्त को स्थिर करना धारणा कहाती है। धीरे धीरे मन अथवा चित्त को एक ही देश में स्थित कर लेना योग मार्ग की सबसे कठिन यात्रा है। चित्त को कुछ क्षणों के लिए तो एकाग्र किया जा सकता है किन्तु कुछ क्षण बाद फिर चित्त में अनेक संकल्प-विकल्प उठने लग जाते हैं। बस चित्त की इस चंचल वृत्ति को निरन्तर अभ्यास से एकाग्र बनाते जाना ही धारणा कहाती है। जैसे जैसे चित्त को एकाग्र कर लेने में साधक को सफलता मिलती है उसकी धारणा उतनी ही बलवती होती चली जाती है।

वास्तव में धारणा योग का मुख्य द्वार है। जैसे जैसे चित्त में एकाग्रता की क्षमता बढ़ने लगती है वैसे वैसे मनुष्य उद्देश्य की

CamScanner से स्कैन किया गया

ओर तीव्रना से बढ़ता जाता है। जिसका चित्त एकाग्र हो जाता है वह अपने गंतव्य के निकट पहुँच जाता है। संसार में मनस तत्व की किरणें बडी शक्ति से तरंगायित होती हैं। जैसे समुद्र में लहरों को देखा जा सकता है वैसे ही मनस तत्व रूपी सागर में संकल्प विकल्पों की उत्ताल तरंगे प्रतिक्षण उठती हैं। साधक जब अपने चित्त को इन तरंगों से अविचलित बनाने में सफल हो जाता है उसमें नई शक्ति का उदय हो जाता है। धारणा की सिद्धि से ही ध्यान और समाधि सिद्ध होते हैं। वास्तव में धारणा की गंभीरता हमें ध्यान में और ध्यान की गंभीरता हमें समाधि में डुबो देती है। धारणा का विकास ध्यान और ध्यान का विकास ही समाधि है। इसके लिए आवश्यकता है निरन्तर अभ्यास की। धारणा की कुछ पलों की सिद्धि हमें आत्मा का अनुभवन करा देती है। आत्म दर्शन होते ही उसके अन्तर में परमात्मा का अनुभवन होने लगता है। चित्त बाह्य इन्द्रियों के व्यापार को भुला देता है और आत्मा चित्त को विस्मृत कर जाती है। चित्त की विस्मृति के साथ ही हमारा संबन्ध बाहय जगत से टूट सा जाता है। जैसे कोई प्रगाढ़ निद्रा में सो गया हो। उसी प्रकार आत्मा परमात्मा के आनन्द स्वरूप में बाह्य जगत को विस्मृत कर खो जाती है। बस आत्मा परमात्मा के स्वरूप में आत्म विस्मृत सी हो गद् गद् हो उठती है। यही समाधि है।

बिना यम नियम की साधना के जब हम ध्यान को केन्द्रित करने का प्रयत्न करते हैं तब हमें ध्यान में असफलता

CamScanner से स्कैन किया गया

मिलती है। चंचल मन एकाग्र होता ही नहीं। योग की हर पहली सीढी की साधना के बिना आगे की सिद्धि व्यर्थ है संभव ही नहीं है। योग की आरंभ की सीढियाँ कठिन हैं। आगे आगे सीढी सरल होती जाती हैं ! यम से नियम सरल. नियमों से आसन सरल. आसन से प्राणायाम सरल. प्राणायाम से प्रत्याहार सरल. प्रत्याहार से धारणा सरल और धारणा से ध्यान और ध्यान से समाधि सरल होती है। अत: अष्टांग योग का क्रमश: अभ्यास आवश्यक होता है।

जैसे अग्नि के पास जाने से शरीर में ताप बढ़ता है वैसे ही जैसे जैसे हम परमात्मा के निकट जाते हैं वैसेवैसे आत्मा में पवित्रता बढ़ती जाती है। जैसे जैसे पवित्रता बढ़ती है दुर्वासना के सूक्ष्म संस्कार धू धू कर दग्ध होते जाते हैं। जैसे जैसे संस्कारों का कोष शुभ्र होता जाता है मोक्ष का समय निकट आता जाता है।

अन्त में एक दिन मुमुक्षु आत्मा विहंसते इस देह का परित्याग कर दीर्घ काल के लिए परमात्मा के आनन्द स्वरूप में खो जाती है. लीन हो जाती है।

परमात्मा के सामर्थ्य को पा लेने से मुक्त आत्मा के ज्ञान नेत्र प्रकाशित हो उठते हैं। तब वह समस्त सृष्टि के यथार्थ स्वरूप के दर्शन करता. अनन्त आनन्द का भोग करता है। अपने अनेक जन्म जन्मातरों की स्थिति से लेकर एक एक व्यवस्था को क्रियात्मिक रूप में देखता हुआ आनन्द ही में विचरता है। तब वह मृत्यु के अर्थात् जन्म मरण के चक्र से छूट कर दु:ख से मुक्ति पा लेता है।

CamScanner से स्कैन किया गया

इसलिए हमें अपने ज्ञान नेत्रों को खोल लेने की आवश्यकता है। शायद हमारे ऊपर दुःख का यह आघात हमें एक नई दिशा में गतिशील करने के लिए दिया गया हो। अपने जीवन के काँटे को बदलने की यही शुभ घड़ी है। यह अवसर गए हुए आत्मीय जन के लिए शोक करने का नहीं है अपितु जीवन में विपरीत मार्गों पर चलने की भूलों के लिए प्रायश्चित करने का है।

मेरी प्यारी आत्माओ! जागो! ईश्वरीय शक्ति हमें जगाने के लिए आयी है। अपने अहं के शस्त्रास्त्रों को डालकर हम विनम्र भाव से एक नया जीवन आरंभ करें। जो बीती सो बीती लेकिन आगे से अब से. संभल कर चलना होगा।

यदि अब भी हम जीवन के सत्य को नहीं समझ सकेगें तो फिर आगे गहन अन्धकार का मार्ग पड़ा है। जहाँ दारुण व्यथा और कष्ट के सिवाय कुछ भी नहीं। हमें सच्चे जीवन के लिए काल पुकार पुकार कर कह रहा है कि-जीवन में ही जीवन को पा लो। इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ में बरबाद न करो।

हमने मृत्यु पर विजय पानी है। हम अमृत पिता के अमृत पुत्र हैं। हमने अपने पर विजय प्राप्त करनी है।

स्मरण रक्खो कि-हमें मौत से घबराने की आवश्यकता नहीं।

CamScanner से स्कैन किया गया

इस अवसर पर हमें एक बोध कथा स्मरण हो आई है।

एक राजा था। न जाने उसे कैसे किसी ने उसकी मृत्यु का समय बतला दिया। यदि आज आपको यह बता दिया जाय कि-आपने किस दिन मरना है तो पता है क्या होगा? सारा जीवन निराशा चिन्ता और शोक से परिपूर्ण हो जाएगा।

राजा की ठीक यही स्थिति हो गई। मरने का दिन आगया। मृत्यु की चिन्ता से जर्जर राजा को कुछ न सूझा।

उसने अपने सेनापति को बुलाया और आदेश दिया कि-तुरन्त सबसे अच्छा घोड़ा ले आओ। राजा ने आदेश दिया कि-मैं कहाँ जा रहा हूँ पता करने का कोई प्रयत्न न करें. बस घोड़ा लाया गया। राजा घोडे की पीठ पर सवार हो गया और कुछ ही क्षणों में वह अपनी प्रजा की आँखों से ओझल हो गया। चाल में सधा हुआ घोड़ा हवा से बातें करने लगा। राजा भूख प्यास. धूप. छाँह सबको भूल चुका था। बस वह चाहता था कि–वह अपनी नगरी से इतनी दूर चला जाए कि–जब यम के दूत उसे राज महल में लेने आएँगे तब तक वह उनकी पकड़ से काफी दूर पहुँच चुका होगा। वास्तव में इसके सिवाय कोई चारा भी न था। दिन ढला। सांझ हुई। अन्धकार छाना ही चाहता था तभी राजा ने देखा कि-एक विशाल बड़ का वृक्ष है। रात इस के नीचे अच्छी कट जाएगी। घोड़ा भी थक चुका था। उसने घोडे को रोका और नीचे उतरा।

CamScanner से स्कैन किया गया

उसने घोडे की लगाम को वृक्ष की एक जड़ में बाँध दिया। लगाम को झुक कर बाँध चुकने के बाद जैसे ही वह सीधा खड़ा हुवा तो उसने देखा एक विशाल काय विचित्र प्राणी सामने हाथ जोड़ कर खड़ा है। उसने राजा को प्रणाम किया और बोला राजन् तुम धन्य हो। तुमने हमारी चिन्ता दूर कर दी।

"मैं यम का दूत हूँ। यमराज द्वारा आपको बुला लाने का आदेश हमें कुछ विलंब से प्राप्त हुआ हमें चिन्ता थी कि—इतने कम समय में हम आपकी राजधानी तक पहुँच भी पायेंग या नहीं पर आप धन्य हो जो स्वयं ही यहाँ चले आए। चलिए श्रीमान्! समय हो चुका है।"

मौत ने कभी किसी को क्षमा नही किया। हम सब उसकी मुठ्ठी में है। उसकी मुठ्ठी से निकलने का एक मात्र उपाय है कि—हम मोक्ष पथ के पथिक बन जाएँ। मुक्ति ही हमें मौतसे मुक्ति दिला सकती है। जिसे हम अपने रोग के लिए सबसे अच्छी दवा समझते हैं वही दवा विष बन कर हमें मृत्यु के मुख में ढकेल देती है। मौत के पंजे से बचने का कोई दूसरा मार्ग है ही नहीं। आज से चलो या हजारों जन्मों के बाद चलो पर अन्त में अष्टांगयोग हो मुक्ति का एक मात्र मार्ग है।

करोडों रुपयों की संपत्ति भी हमें मौत से बचा नहीं सकती। ऐटम बमों का किला बना कर उसके बीच में छिप जाने से भी कोई मौत से बच नहीं सकेगा।

CamScanner से स्कैन किया गया

याद रखिए—जो सामान हम जमा कर रहे हैं और जिन्दगी भर जुटाते रहे हैं। उसमें से एक सुई भी हम साथ न लेजा सकेंगे। सब का सब जहाँ का तहाँ धरा रह जाएगा।

हमारा प्रयत्न हमारा पुरुषार्थ सब व्यर्थ की दिशा में लग रहा है। इस लिए मेरे प्यारे मित्रो ! हमारी इस नेक राय पर विचार कीजिए।

आइए ! अपने मृत साथी के शोक को तिलाञ्जली देकर जीवन के इस नए पथ पर चलने का शुभ संकल्प करें और मोक्ष मार्ग के पथिक बनें।

ओ३म् शम्

CamScanner से स्कैन किया गया

—हमारे कुछ अन्य प्रकाशन

वैदिक सान्ध्य गीत—सन्ध्या, हवन, स्वस्ति वाचन शान्तिकरण, आदि सभी मन्त्रों का सुन्दर सरस पद्यमय अनुवाद, जो अत्यन्त भक्ति रस से परिपूर्ण है। मूल्य बृहत्—पांच रुपए मात्र।

संक्षिप्त—दो रुपए मात्र।

सत्संग सरोवर—सन्ध्या, हवन, स्वस्ति वाचन शान्तिकरण आदि मंत्रों की जीवनोपयोगी सरल व्याख्या सहित। मूल्य आठ रुपए मात्र

जीवन सार—यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय अर्थात् ईशोपनिषद की गद्य और पद्य दोनों में उत्तम व्याख्या। जो संपूर्ण जीवन का सार है।

मूल्य तीन रुपए

वेदों में धर्म का स्वरूप—वास्तविक धर्म क्या है ? हम सच्चे धार्मिक कैसे बन सकते हैं ? मूल्य—तीन रुपये मात्र

मानव धर्म शिक्षा—हर व्यक्ति को जानने योग्य बातें।

मूल्य—तीस पैसे मात्र

वेदों में यज्ञ का स्वरूप—यज्ञ के संबन्ध में एक आधिकारिक व्याख्या।

मूल्य—तीन रुपए मात्र

अरण्य गीत—एकादशोपनिषद का सरस सुन्दर पद्यानुवाद—जो उपनिषदों के अखण्ड पाठ के रूप में गाया जा सकता है।

शीघ्र ही प्रकाशित होगी।

ज्ञा न गं गा प्र का श न

4-5-764 वसु निकुंज, सुलतानबाजार, हैदराबाद 27

पिन-500 027

CamScanner से स्कैन किया गया

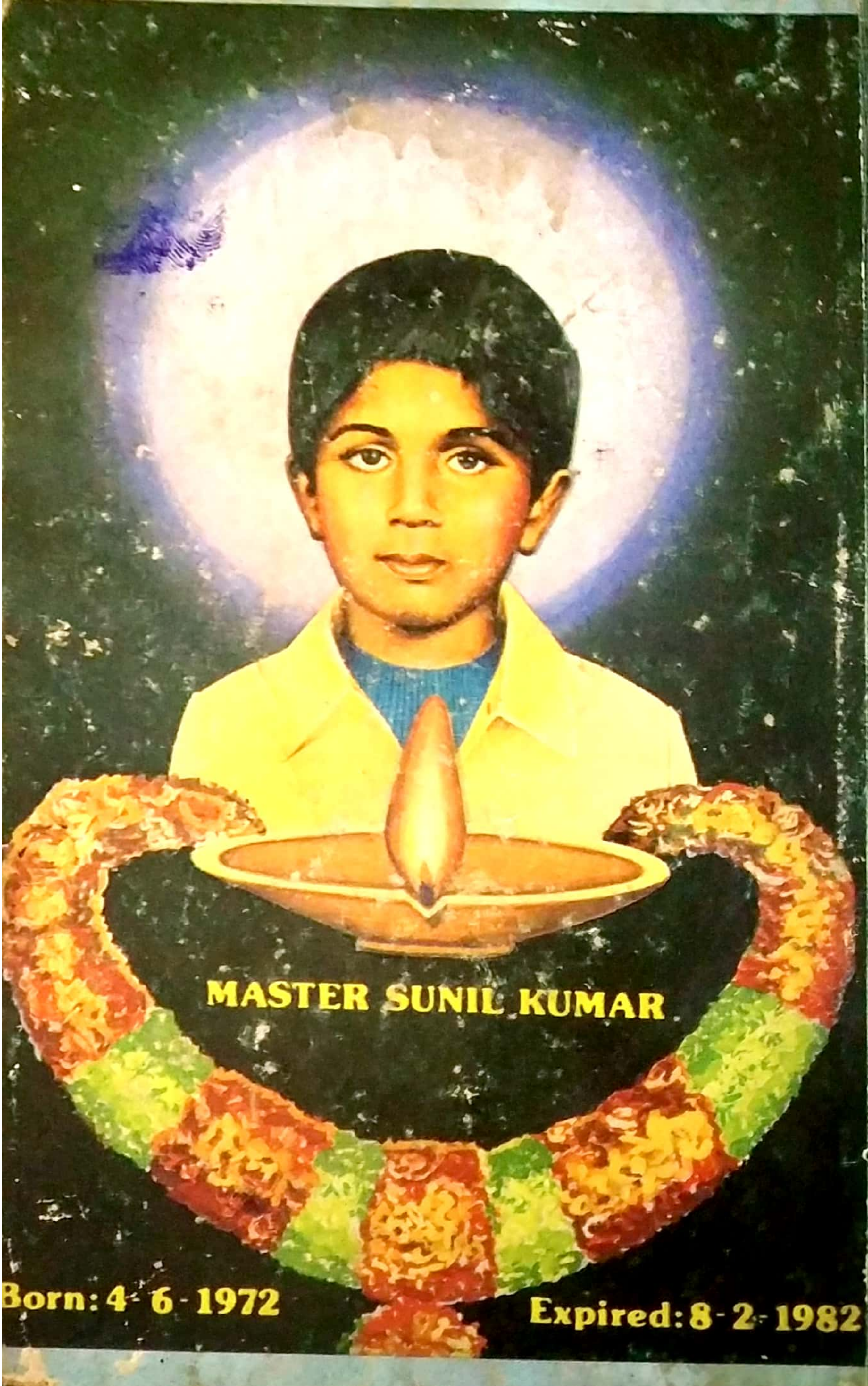

CamScanner से स्कैन किया गया